मेक इन इंडिया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छ:माही पत्रिका, अंक-12 (अक्टूबर 2021 से मार्च 2022)

कीटनाशक, फफूंदनाशी, शाकनाशी, बीज, उर्वरक, बॉयो पेस्टिसाइड्स, सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

''वर्ष के उत्पाद प्रवर्तक'' पुरस्कार

माननीय श्री मंसुख मांडविया जी, मंत्री, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार के कर–कमलों से ''वर्ष के उत्पाद प्रवर्तक'' पुरस्कार प्राप्त करते श्री एस.पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, हिल (इंडिया) लिमिटेड।

रक्षक

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

छ:माही पत्रिका, अंक – 12 अक्टूबर 2021 से मार्च 2022 तक

मुख्य संरक्षक
डॉ. शिबा प्रसाद मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
श्री डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू
निदेशक (वित्त)

श्री शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबन्धक (विपणन)

संपादक
श्री अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

परामर्श समिति
श्री महेन्द्र सिंह
श्री सुनील गौड़
श्री राम प्रकाश
श्री अनिल यादव
श्री राजेन्द्र थापर
श्री विजय कुमार गांधी
श्री अनिल सूद

सहयोग
श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अत: पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 2
- संदेश – *निदेशक (वित्त)* 3
- संदेश – *मुख्य महाप्रबंधक (विपणन)–प्रभारी* 4
- संपादकीय 5
- कृषि के क्षेत्र में विज्ञान का योगदान 6
- आर्थिक विकास में कृषि का महत्व 8
- उर्वरकों का पर्ण छिड़काव 10
- कीटनाशकों के प्रयोग द्वारा कृषि रक्षा प्रबन्धन 12
- राजभाषा कार्यान्वयन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जिम्मेदारी 16
- राजभाषा हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ 19
- लक्ष्य की ओर बढ़ते कदम 21
- राजभाषा के रूप में हिंदी 22
- राजभाषा हिंदी का महत्त्व 24
- देवताओं पर आधारित मगही कहावतें 26
- भोजपुरी लोकगीतों में नारी 28
- संकट के समय टीम को प्रेरित कैसे करें ? 30
- कैसे एक (फ्रेशर) नवनियुक्त उम्मीदवार 31
- लोकहित प्रकटीकरण एवं मुखबिर संरक्षण 32
- जी.एस.टी. में बदलाव 33
- केंद्रीय बजट 2022–23 की मुख्य बातें 35
- एस.ए.पी. एस.डी. क्या है? 38
- पर्यावरण प्रदूषण 40
- सतत विकास 42
- कोविड–19 : एक सामान्य दृष्टिकोण 43
- महिला सशक्तिकरण क्या है? 45
- जीवन में पुस्तकों का मूल्य 47
- समय का सदुपयोग 48
- मेरा डाकिया चाचा 49
- साधु और खजूर 50
- सौ ऊँट 51
- जीवन दर्शन 52
- खगोलजीव विज्ञान 54
- जीवन क्या है? 56
- सतर्क भारत समृद्ध भारत 57
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कृत कविता एवं नारा 58
- हिल उत्पादक की कहानी मेरी जुबानी / दोस्तों को समर्पित / वह क्या है ? 59
- रिश्ते 60
- हिल (इंडिया) लिमिटेड –समृद्धि हेतु सुरक्षा / देखा है 61
- नारी शक्ति 62
- नारी का भाग्य / पहला कदम बढ़ाएं 63
- हिल (इंडिया) लिमिटेड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 64
- रक्तदान शिविर / नेत्र जांच शिविर 65
- हिल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन 66
- संयंत्र नियंत्रण हेतु हिल की बठिंडा यूनिट का दौरा 68
- हिल में गणतंत्र दिवस समारोह 69
- हिल में राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर शपथ / संविधान दिवस का आयोजन 70
- प्रशिक्षण कार्यक्रम / अखिल भारतीय राजभाषा 71
- हिल में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 72
- हार्दिक बधाई 74
- सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति 75

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से .....

हिल छःमाही गृह पत्रिका 'रक्षक' का 12वां अंक अपने सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का ही नहीं बल्कि ज्ञानवर्धन का भी सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ कंपनी के कार्यकलापों, योजनाओं, उपलब्धियों और कारोबार संबंधी नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त अन्य उपयोगी जनहित विशेषकर किसानों के लाभ के लिए महत्वपूर्ण सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाने का प्रयास करते हैं। आशा है कि पत्रिका अपने उद्देश्य का सफलता पूर्वक पालन कर रही है।

हमारा उद्देश्य देश में जन–स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के साथ–साथ एक ही छत के नीचे कृषक समुदाय की सभी कृषि आदानों की आवश्यकताओं को समय एवं उचित दर पर पूरा करना तथा स्वच्छ और सुरक्षित प्रौद्योगिकी के माध्यम से गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करना है। इसमें फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने के साथ–साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी बढ़ाना है। इस दिशा में कुछ प्रयास पहले ही किए जा चुके हैं, जिसमें नवीनतम एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसल प्रजातियों के बीज उत्पादन एवं वितरण सम्मिलित हैं। बीज उत्पादन और वितरण में हिल (इंडिया) लिमिटेड एक अहम भूमिका अदा कर रही है। हिल, भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत दलहन और तिलहन के उत्पादन में अग्रसर है और देश को इन आदानों में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अथक प्रयास कर रही है। मैं यह बात भी गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि हमारी कंपनी ने विभिन्न राज्यों में कृषि विश्वविद्यालयों एवं किसान विज्ञान केंद्र के सहयोग से किसानों को "समुचित मात्रा में और सुरक्षित रूप से कीटनाशकों का फसलों पर उपयोग एवं समेकित कीट प्रबन्धन" के विषय पर प्रशिक्षण देकर अपना सामाजिक दायित्व भी निभाया है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से किसानों की फसल लागत में कमी आएगी, उनका पशुधन, भूमिगत जल, पक्षी एवं वातावरण भी सुरक्षित रहेगा। आशा करता हूँ कि हम इस नए दायित्व को निभाने में सक्षम होंगे।

मैं यह बात भी गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि हिल (इंडिया) लिमिटेड लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) का विनिर्माण एवं वितरण करने वाला भारत सरकार का एक मात्र उपक्रम है और हाल में स्वास्थ्य मंत्रालय को लगभग 12 लाख लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) की आपूर्ति की है। भविष्य में भी उच्च गुणवत्तावान एल.एल.आई.एन. देने के लिए प्रतिबद्ध है।

हम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प हैं। प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हमारी कंपनी को गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आपके लिए रोचक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

एस.पी.मोहान्ती

(शिबा प्रसाद मोहन्ती)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

पत्रिका ''रक्षक'' का नवीन अंक अपने सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा अपने विचार, भावनाओं, प्रतिभाओं एवं राजभाषा गतिविधियों और संस्थान के कार्यकलापों की जानकारी एक ही मंच से प्राप्त होने के साथ–साथ कार्मिकों की छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभा को एक नया आयाम मिलता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का ही नहीं अपितु देश को एक सूत्र में पिरोने का भी सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ कंपनी के कार्यकलापों, योजनाओं, उपलब्धियों और कारोबार संबंधी नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त अन्य उपयोगी– सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाने का प्रयास करते हैं। यह हर्ष का विषय है कि पत्रिका अपने उद्देश्य का सफलतापूर्वक पालन कर रही है।

कंपनी अपने व्यवसाय के प्रति सजग रहने के साथ–साथ समाज के प्रति अपने दायित्वों का भी नियमित रूप से निर्वहन करती है। निगमित सामाजिक जिम्मेदारी के तहत कंपनी लगातार समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के उत्थान के लिए काम करती है और शिक्षा, स्वास्थ्य, जल स्वच्छता, व्यवसायिक कौशल जैसे क्षेत्रों में विकास हेतु समर्थन प्रदान करती है। कंपनी ने पर्यावरणीय प्रबन्धन, उर्जा संरक्षण और दीर्घकालिक विकास के लिए सामाजिक उत्थान का नेतृत्व करने में श्रेष्ठ कार्य प्राणाली अपनाई है।

कंपनी अन्य कार्यकलापों के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए सभी स्तरों पर निरंतर प्रयासरत है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नीतियों के अनुपालन के प्रति कंपनी प्रतिबद्ध है तथा इस क्षेत्र में नियमों/अधिनियमों और नीतियों का श्रेष्ठ अनुपालन करके प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किया है। यह कंपनी की राजभाषा हिन्दी के प्रति सम्मान और कार्मिकों की रूचि को दर्शाता है।

मुझे विश्वास है कि कंपनी के सभी कार्मिक टीम भावना से निरंतर कार्य करते हुए सभी क्षेत्रों में छवि उज्जवल बनाएंगे और कंपनी की प्रतिष्ठा निखारने में ग्राहकों को अच्छी सेवा देने में अपना अमूल्य सहयोग देंगे।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में ''रक्षक'' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करें, यही मेरी हार्दिक कामना है।

श्रीनिवास राजू

डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू

निदेशक (वित्त)

संदेश

रक्षक पत्रिका का अंक 12 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए आपार प्रसन्नता हो रही है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार अनवरत बढ़ता रहे। रक्षक पत्रिका एक ऐसा मंच है जो कार्मिकों की सृजनशीलता को उजागर करती है। कंपनी की गतिविधियों को जन सधारण तक पहुंचाने में भी रक्षक अपनी भूमिका निभाने में सफलता प्राप्त कर रही हैं।

हिल (इंडिया) लिमिटेड एकमात्र ऐसी कंपनी है जो जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने के साथ–साथ कृषकों को एक ही स्थान पर महत्वपूर्ण कृषि आदानों की पूर्ण बास्केट प्रदान करती है अर्थात् फसलों की कीटों से रक्षा करने के लिए पेस्टिसाइड्स, अच्छी पैदवार के लिए गुणवत्तावान बीज और पैदवार बढ़ाने के लिए उर्वरक। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा प्रयास है कि अपने कार्मिकों के साथ–साथ सभी पाठकों को जन स्वास्थ्य और कृषि संबंधी सर्वश्रेष्ठ उपयोगी जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध कराई जा सके।

कृषि देश के सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी.) का लगभग 17 प्रतिशत है और यह भारत की लगभग 55 प्रतिशत आबादी के लिए आजीविका का प्राथमिक स्रोत है तथा तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। उर्वरक कृषि का एक महत्वपूर्ण घटक बना हुआ है। भारत विश्व में उर्वरक का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। देश में खाद्यान्न सुरक्षा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने एकीकृत कीट प्रबन्धन प्रणाली को अपनाकर किसानों के मध्य कीटनाशकों का संस्तुत मात्रा में प्रयोग किए जाने के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर किसानों को प्रशिक्षित करने का महत्वकांक्षी कार्यक्रम अपनाया है। ये कार्यक्रम कृषि लागत को कम करने और पर्यावरण, मृदा स्वास्थ्य, मनुष्य, पक्षियों, पशुधन और भूमिगत जल को कीटनाशकों के अविवेकपूर्ण उपयोग के कारण कीटनाशकों के अवशेषों के बुरे प्रभाव से बचाने के लिए महत्व रखते हैं। कंपनी ने देश के विभिन्न भागों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

कंपनी अन्य कार्यकलापों के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए सभी स्तरों पर निरंतर प्रयासरत है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नीतियों के अनुपालन के प्रति कंपनी प्रतिबद्ध है तथा इस क्षेत्र में नियमों/अधिनियमों और नीतियों का श्रेष्ठ अनुपालन करके प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किया है।

मैं रक्षक के इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा इस अंक में योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि रक्षक पत्रिका का यह अंक सुधी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शशांक चतुर्वेदी

शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबंधक (विपणन)–प्रभारी

संपादकीय

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रगति हो रही है। जिसका संक्षिप्त परिचय गृह पत्रिका रक्षक का अनवरत प्रकाशन है।

गृह पत्रिका किसी भी संगठन के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करती है। पत्रिका में प्रकाशन हेतु उपयोगी लेख भेज कर पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए सभी लेखकों के सहयोग का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। जैसा कि आप सभी जानते है कि आज पूरे भारतवर्ष में हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में जन–जन की भाषा बन गई है जो भारतवासियों को एकसूत्र में जोड़ती है। इसके लिए हमें हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सहज, सुबोध और सरल हिन्दी को अपनाना होगा इसलिए हम सभी का कर्तव्य हो जाता है कि हम कार्यालय के कार्य में सरल और आम बोलचाल के शब्दों का अधिक प्रयोग करें। हिन्दी का विकास ही देश का विकास है।

यह अंक रक्षक के पिछले अंको से भिन्न है, क्योंकि प्रस्तुत अंक में कंपनी की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ जनोपयोगी लेख जैसे कृषि के क्षेत्र में विज्ञान का योगदान, राजभाषा कार्यान्वयन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जिम्मेदारी, कीटनाशकों के प्रयोग द्वारा कृषि रक्षा प्रबन्धन, संकट के समय टीम को प्रेरित कैसे करें?, लोकहित प्रकटीकरण एवं मुखबिर संरक्षण, केन्द्रीय बजट 2022–23 की मुख्य बातें, एस.ए.पी. एस.डी. क्या है ?, खगोलजीव विज्ञान आदि विभिन्न विषयों को सम्मिलित किया गया हैं। पत्रिका को रोचक बनाने के लिए कविताओं, संस्मरणों आदि का भी समावेश किया गया है। इस छःमाही में आयोजित संगोष्ठी, कार्यशाला एवं कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग और एकीकृत कीट प्रबंधन पर दिए गए प्रशिक्षणों के चित्र प्रकाशित किए गए है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालनार्थ अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाता है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप कंपनी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, रसायन और उर्वरक मंत्रालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से कंपनी को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड सदैव सघन प्रयास करती रहेगी।

रक्षक पत्रिका में निरंतर निखार आए इसके लिए सभी सुधी पाठकों से सुझावों की अपेक्षा है। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए सदैव प्रयत्नशील हैं। आशा करता हूँ कि विगत अंको की तरह यह अंक भी आपके लिए रूचिकर एवं उपयोगी साबित होगा।

अजीत कुमार

अजीत कुमार

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

कृषि प्रभाग

कृषि के क्षेत्र में विज्ञान का योगदान

शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबंधक (विपणन), निगमित कार्यालय

भारत के विकास और आर्थिक उत्थान के लिए किसी भी योजना का सबसे महत्वपूर्ण कारक भूखे, असंतुष्ट लोगों को एक खुशहाल, सुव्यवस्थित व्यक्ति में बदलना है। भोजन या तो आयात द्वारा या घर पर उत्पादन द्वारा हो सकता है। वैज्ञानिक के पास अन्य विधियां हैं। रसायनज्ञ, जीवविज्ञानी, इंजीनियर और यहां तक कि भौतिक विज्ञानी ने विज्ञान को बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादन में लागू करने के लिए एक महान भूमिका निभायी है। कृषक की वजह से घर पर हम भोजन प्राप्त कर पा रहे हैं। आज भारत देश आत्मनिर्भर बनने की राह पर चल रहा है। पिछले डेढ़ दशक में अलग–अलग जलवायु और कठिन स्थितियों में विज्ञान और तकनीक जैसी प्रणाली ने कृषि करने का तरीका बदल दिया है।

आज किसान नए आधुनिक और वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग कृषि में आवश्यक रूप से कर रहे हैं। कृषि में काम आने वाली आधुनिक वस्तुओं की मांग बढ़ रही है और किसान आधुनिक तरीकों की और ज्यादा जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। रसायन वैज्ञानिक, जीवविज्ञानी, इंजीनियर ने विज्ञान को बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए उपयोग किया है।

किसानों को प्रति एकड़ फसलों की अधिक उपज सुनिश्चित करने के लिए और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए पहला कदम उठाया गया है। पुराने किसानों को गोबर जैसी आसानी से उपलब्ध खाद पर भरोसा था। किसानों को उचित मात्रा में फर्टिलाइज़र्स और पेस्टिसाइड्स का उपयोग करना चाहिए। सटीक मात्रा में इसका उपयोग करने से फसलों की उपज अधिक होती है। किसानों को सिखाया जाना चाहिए कि रासायनिक उर्वरक भूमि की उत्पादकता को एक हद तक कम कर सकते हैं। अत्यधिक फर्टिलाइज़र्स का उपयोग भूमि की उपजाऊ शक्ति को कम कर देता है। आर्गेनिक और इनऑर्गेनिक खाद का कितना प्रयोग करना चाहिए, वह सम्पूर्ण रूप से भूमि की प्रकृति पर निर्भर करता है।

किसानों का अगला कदम बीज की गुणवत्ता में सुधार करना है। अच्छे बीजों की आपूर्ति अब तक की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। प्लांट ब्रीडिंग एक महत्वपूर्ण कला है, यह एक विशिष्ट विज्ञान है जिसे जानना किसानों के लिए ज़रूरी है। वैज्ञानिक नई टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर रहे हैं ताकि किसान अपने स्थानीय वातावरण में आवश्यक ज़रूरतों को पूरा कर सके।

कृषि में किसानों को न केवल फसलों को उगाने की आवश्यकता होती है, बल्कि एक फसल के पूरे जीवन चक्र, इसके विकास और परिपक्व होने की पूरी जीवनी, जलवायु और पर्यावरण के प्रभाव को जानना भी कृषकों की जिम्मेदारी है। किसान इसमें गहराई तक जाकर जान सकते हैं कि एक सूक्ष्म जीव, मिट्टी, हवा, पानी, सब कुछ इस पर प्रभाव डालता है।

जब आप एक फसल उगाने के विज्ञान को जानते हैं, तो आप एक बेहतर उपज प्राप्त करने के तरीके बनाते हैं; आप जानते हैं कि किस मात्रा में पानी, खाद, किस प्रकार की मिट्टी, कौन से रसायन, कौन से कीड़े इसे प्रभावित कर सकते हैं और दिए गए इनपुट की सही मात्रा क्या है, यह बेहतर रूप से बढ़ने और शानदार उपज देने में मदद करेगा। इसके अलावा कृषकों को रोपण और प्रत्यारोपण की तकनीक, रोपण के लिए मौसम, सिंचाई के तरीके, लगातार दो पौधों के बीच की दूरी, जो पौधे पहले उगाए गए हैं, ये भी उपज को प्रभावित करते हैं।

किसानों को जानना है कि कैसे रोपण करना है और एक फसल के संचालन का प्रबंधन कैसे करना है, तो हम बहुत अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं। वैज्ञानिक और टेक्नोलॉजी ने इस प्रकार कृषि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि में विज्ञान की कई भूमिकाएँ हैं जैसे:

- उर्वरक
- ट्रैक्टर
- सीडिंग और हार्वेस्टिंग मशीनरी
- कीटनाशकों

• कृषि के लिए भूमि बनाने वाले वनों की कटाई के उपकरण
• वीडीसीडस
• जीएमओ द्वारा बीज विकास
• ड्रिप इरीगेशन यानी सिंचाई
• पानी पंपिंग

खाद्य संरक्षण

कृषि की शाखा में विज्ञान का एक बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिसका वर्णन करना संभव नहीं है। कृषि के आधुनिकीकरण के लिए विज्ञान ने एक बड़े क्षेत्र में कार्य किया है। विज्ञान ने बिलकुल विभिन्न प्रकार के हाइब्रिड क्रॉप्स यानी फसलों और उम्दा रसायनों का प्रयोग किया है।

विज्ञान ने कीटों और जीवाणु कीटों से लड़ने के लिए कृषि को दूसरे तरीके से मदद की है। जीवाणु भारी मात्रा में अनाज और फसलों को नष्ट करते हैं। रसायनों की सहायता से फसलों को बचाया गया है। भोजन भंडारण के दोषपूर्ण तरीके भी अनाजों को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाने के लिए जिम्मेदार हैं। यदि हम अपनी खाद्य आपूर्ति को बढ़ाना चाहते हैं, तो न केवल उत्पादन में सुधार किया जाना चाहिए, बल्कि खेती के उन्नत तरीकों को अपनाना अवश्य चाहिए।

कृषि क्षेत्र में विकास और सफलता के लिए वैज्ञानिकों के साथ किसानों का भी भरपूर योगदान रहा है। कृषकों ने तकनीकों को अपने हाथों में लेकर खेतीबाड़ी में उनका प्रयोग किया है। प्रयोगशाला को खेतों के नज़दीक बनाया गया और बनाना चाहिए। गत वर्ष भारत ने बीस लाख टन का निर्यात किया और आने वाले वर्षो में भारत उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार विज्ञान को कृषि के क्षेत्र में और अधिक मूल्यवान बनाया जा सकता है। पूरे देश में नए कृषि संबंधित रिसर्च केंद्र खोले जाने चाहिएं। कृषि विश्वविद्यालयों की नींव से एक अच्छी शुरुआत की गयी है। विश्वविद्यालयों से अनुसंधान विशेषज्ञ हमारे देश के अन्य हिस्सों में फैल जाएंगे और कृषि से जुड़ी नई आधुनिक तकनीक के प्रयोग के बारे में कृषकों को बताएँगे। यह एक सुखद संकेत है और गर्व की बात है कि आज भारत में पर्याप्त भोजन है। भारत में अब एक वर्ष में 20 मिलियन टन खाद्य फसलों का उत्पादन होता है। भारत अब खाद्य निर्यात की स्थिति तक पहुँच गया है।

आर्थिक विकास में कृषि का महत्व

चन्द्रपाल रूपकिशोर सागर
उप प्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

किसी भी देश के आर्थिक विकास में कृषि का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। कृषि से केवल भोजन तथा कच्चे माल की प्राप्ति ही नहीं होती है, बल्कि यह जनसंख्या के एक बड़े भाग को रोजगार भी उपलब्ध कराता है। कृषि तथा उद्योग परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करते है। एक क्षेत्र का विकास होने पर दूसरे क्षेत्र का भी विकास होता है। एक क्षेत्र का उत्पादन दूसरे क्षेत्र के लिए आगत बन जाता है। एक क्षेत्र का विकास होने का अर्थ है दूसरे क्षेत्र को अधिक आगतों का प्रवाह। ''दूसरे की सहायता करो यदि आप अपनी सहायता चाहते हैं।'' यही दोनों क्षेत्रों की निर्भरता का सारांश है। जैसे–जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है, वैसे–वैसे कृषि की भूमिका में भी परिवर्तन आ जाता है। जब द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों का विकास होता है तो कृषि की महत्ता कम हो जाती है। कुछ समय पश्चात् कृषि क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में हिस्सा भी कम हो जाता है, परन्तु कृषि क्षेत्र की अन्य क्षेत्रों पर निर्भरता बढ़ जाती है।

कृषि तथा उद्योग दोनों एक दूसरे के पूरक है, प्रतियोगी नहीं। बिना कृषि के आधुनीकरण के औद्योगिक विकास सम्भव नहीं है क्योंकि यदि कृषि विकास नहीं होगा तो अधिकतर जनसंख्या के पास क्रयशक्ति नहीं होगी तथा बाजार का विस्तार भी नहीं होगा। अतः यह बात भी सत्य है कि बिना औद्योगिकरण के कृषि विकास भी सम्भव नहीं है। अतः कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्र का साथ–साथ विकास होना चाहिए। किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। निम्न तथ्यों को पढ़ने के बाद आप समझ जायेंगे कि आर्थिक विकास में कृषि का क्या महत्व है या आर्थिक विकास में कृषि किस प्रकार सहायक होता है:–

1. भोजन आवश्यकता की पूर्ति

सभी देश अपनी भोजन संबंधी आवश्यकता को पूरा करने को पहली प्राथमिकता देते हैं। कोई भी देश अपनी सभी खाद्य आवश्यकताओं को दूसरे देश से आयात करके पूरा नहीं कर सकता है। अगर कोई देश अपनी खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भर है तो उसे बहुत अधिक मात्रा में आय को खर्च करना पड़ेगा और खाद्य वस्तुओं पर ज्यादा व्यय से सभी योजनाएं बिगड़ सकती है। इसलिए सरकार को खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के प्रयास करने चाहिएं।

2. कच्चे माल की उपलब्धता

आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में कृषि से सम्बन्धित उद्योगों का विकास होता है। जैसे चीनी, सूती वस्त्र, जूट उद्योग इत्यादि केवल तभी सफल हो सकते हैं जब उन्हें कच्चे माल की पर्याप्त उपलब्धता हो। अतः इन उद्योगों के तीव्र विकास के लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल की उपलब्धता होनी चाहिए।

3. क्रय शक्ति

यदि किसी देश की कृषि की स्थिति ठीक नहीं है तो कृषकों की आय भी कम होगी। कृषकों की आय कम होने से वे औद्योगिक वस्तुओं को नहीं खरीद पायेगें तथा औद्योगिक विकास रूक जायेगा। कृषि क्षेत्र की सम्पन्नता से ही औद्योगिक विकास होता है। किसी उद्योग का प्रमुख उद्देश्य अधिक से अधिक वस्तुओं का विक्रय करना होता है और यह तभी सम्भव है जब कृषि क्षेत्र विकसित हो।

4. बचत तथा पूंजी निर्माण

कृषि क्षेत्र के समृद्ध होने से कृषकों की आय में वृद्धि होती है। आय में वृद्धि होने से कृषकों की बचत में वृद्धि होती है और बचत कृषकों द्वारा बैंकों व अन्य बचत संस्थाओं में

जमा होता है। इन बचतों का प्रयोग पूंजी निर्माण के लिए किया जाता है, जिससे आर्थिक विकास होता है। अगर कृषकों की आय कम होगी तो बचत भी कम होगी तथा पूंजी निर्माण भी कम होगा। आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में जनसंख्या का अधिकतर भाग कृषि में कार्यरत होता है, अतः औद्योगिक क्षेत्र के तीव्र विकास के लिए कृषि क्षेत्र की सम्पन्नता ज्यादा जरूरी है।

5. श्रम–शक्ति की पूर्ति

कृषि क्षेत्र में जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक है। कृषि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होने से कृषि उत्पादन भी विपरीत रूप से प्रभावित होता है। इसलिए जनसंख्या के कुछ हिस्से को हटाकर औद्योगिक क्षेत्र में लगाया जा सकता है, इससे औद्योगिक क्षेत्र का भी तेजी से विकास होगा। अधिक विकसित कृषि में श्रम की आवश्यकता कम होती है।

6. विदेशी मुद्रा की प्राप्ति

कृषि प्रधान देशों में औद्योगिक वस्तुएं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता नहीं कर पाती हैं, क्योंकि औद्योगिक वस्तुएं घटिया किस्म की होती हैं। अतः कृषि वस्तुएं ही ऐसी हैं जो कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता का सामना कर सकती है तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त कर सकती है।

उर्वरकों का पर्ण छिड़काव

साबू के कुर्याकोस
अधिकारी (सतर्कता)
उद्योगमंडल यूनिट

पर्ण छिड़काव पौधों को उनके पत्ते के माध्यम से पोषक तत्वों की आपूर्ति करने का एक सामान्य अभ्यास है। इसमें पानी में घुलनशील उर्वरकों का सीधे पत्तियों पर छिड़काव करना शामिल है।

कई लोग मानते हैं कि पर्ण छिड़काव मिट्टी के उपयोग के लिए अनुकूल है और यह उच्च पैदावार और फसलों की बेहतर गुणवत्ता से जुड़ा है। हालाँकि, कई खुले प्रश्न और अनिश्चितता अभी भी इस अभ्यास को घेरे हुए हैं। आपको किन शर्तों के तहत पर्ण छिड़काव का उपयोग करना चाहिए?

कुछ शर्तों के तहत, मिट्टी के अनुप्रयोगों पर पत्तेदार छिड़काव का लाभ होता है।

सीमित स्थितियाँ – जब पर्यावरणीय परिस्थितियाँ जड़ों द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषण को सीमित करती हैं, तो पर्ण छिड़काव की सिफारिश की जाती है। ऐसी स्थितियों में उच्च या निम्न मिट्टी पी.एच., तापमान तनाव, बहुत कम या बहुत अधिक मिट्टी की आद्रता, जड़ रोग, कीटों की उपस्थिति जो पोषक तत्वों को प्रभावित करते हैं, मिट्टी में पोषक तत्व असंतुलन आदि शामिल हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, उच्च मृदा पी.एच. में सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता बहुत कम हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में, सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्ण अनुप्रयोग पौधे को सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति करने का अधिक कुशल तरीका हो सकता है।

पर्ण छिड़काव सीधे पौधों की पत्तियों और तने पर पोषक तत्वों का छिड़काव करने की एक विधि है, जहां वे अवशोषित और उपयोग किए जाते हैं। इसे आपके पौधों को खिलाने का लगभग तत्काल तरीका माना जाता है। यह विशेष रूप से छोटे माली और लॉन मालिकों के बीच बहुत आम होता जा रहा है। इसके कई फायदे हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:–

लाभ

पर्ण छिड़काव से पौधों पर लगभग तुरंत प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि कलियों जैसे हरे पत्तेदार पौधों पर उपयोग किया जाता है, तो अन्य उर्वरक विधियों का उपयोग करने की तुलना में उनके पास कम समय के भीतर बड़े और मांसल पत्ते होंगे। इसका कारण यह है कि प्रदान किए गए पोषक तत्व पहले से ही उस रूप में होते हैं, जिसकी पौधे को आवश्यकता होती है। अवशोषण के बाद, सभी पौधों को इन पोषक तत्वों का उपयोग करना होता है।

जहां पर्याप्त पानी नहीं है, वहां पौधों को उगाने का सबसे अच्छा तरीका पर्ण खिलाना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पौधा अपनी जड़ों से पानी सोख लेगा। मिट्टी के माध्यम से उर्वरक का उपयोग किया जाना है, मिट्टी में पोषक तत्वों की सबसे अधिक संभावना है जिसके परिणामस्वरूप पोषक तत्वों की कमी वाले पौधे होंगे। हालांकि यह अनुशंसा की जाती है कि आप सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए अन्य निषेचन विधियों के साथ इसका उपयोग करें। इनमें से कई पर्यावरण के अनुकूल हैं।

जब पोषक तत्वों को पत्तियों पर लगाया जाता है। मिट्टी पर लगाए गए पोषक तत्वों की तुलना में, पोषक तत्वों को लेने की दक्षता 8–9 गुना अधिक मानी जाती है। इसलिए, जब कमी का लक्षण दिखाई देता है, तो एक त्वरित, लेकिन अस्थायी सुधार, कमी वाले पोषक तत्व को पर्ण प्रयोग के माध्यम से लागू करना होगा।

विशिष्ट विकास चरणों में – पौधों को विभिन्न विकास चरणों में विभिन्न मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। मिट्टी में पोषक तत्व संतुलन को नियंत्रित करना कभी–कभी मुश्किल होता है। प्रमुख चरणों के दौरान आवश्यक पोषक तत्वों के पत्तेदार अनुप्रयोग उपज और गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं।

पर्ण छिड़काव की प्रभावशीलता में सुधार कैसे करें

विभिन्न कारक पर्ण छिड़काव की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं:

पर्ण स्प्रे समाधान का पी.एच.– पोषक तत्वों को उनके घुलनशील रूप में होना चाहिए ताकि पौधे उन्हें अवशोषित कर सकें। पी.एच. पोषक तत्वों की घुलनशीलता और पानी में अन्य घटकों के साथ उनकी बातचीत को प्रभावित करता है। आम तौर पर, अम्लीय पी.एच. पत्ती की सतहों के माध्यम से पोषक तत्वों के प्रवेश में सुधार करता है।

इसके अलावा, पी.एच. तीन अन्य तरीकों से पोषक तत्वों के पर्ण अवशोषण को प्रभावित करता है:

पी.एच. छल्ली (पत्तियों को ढकने वाली मोमी परत) के आवेश को प्रभावित करता है और इसलिए आयनों के लिए इसकी चयनात्मकता, पोषक तत्वों का आयनिक रूप पी.एच. पर निर्भर है और इसलिए पी.एच. प्रवेश दर को प्रभावित कर सकता है;

पी.एच. छिड़काव किए गए यौगिकों की फाइटोटॉक्सिसिटी को प्रभावित कर सकता है।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्प्रे समाधान का पी.एच. लागू पोषक तत्व के अनुसार समायोजित किया जाना चाहिए।

दिन का समय – पत्ते छिड़काव का सबसे अच्छा समय सुबह या शाम है, जब रंध्र खुले होते हैं। जब तापमान 80 डिग्री फारेनहाइट (27 डिग्री सेल्सियस) से अधिक हो तो पत्तेदार भोजन की सिफारिश नहीं की जाती है।

छोटी बूंदों का आकार – छोटी बूंदें एक बड़े क्षेत्र को कवर करती हैं और पर्ण अनुप्रयोगों की दक्षता बढ़ाती हैं। हालाँकि, जब बूंदें बहुत छोटी (100 माइक्रोन से कम) होती हैं, तो बहाव हो सकता है।

स्प्रे मात्रा – स्प्रे मात्रा का पोषक तत्व अवशोषण दक्षता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। स्प्रे की मात्रा ऐसी होनी चाहिए कि यह पौधे की छतरी को पूरी तरह से ढकने के लिए पर्याप्त हो, लेकिन बहुत अधिक मात्रा न हो ताकि यह पत्तियों में न गिरे।

कीटनाशकों के प्रयोग द्वारा कृषि रक्षा प्रबन्धन

रूचि बिष्ट
अधिकारी (राजभाषा), बठिंडा यूनिट

प्रदेश में फसलों को कीटों, रोगों एवं खरपतवारों आदि से प्रतिवर्ष 7 से 25 प्रतिशत तक क्षति होती है, जिसमें 33 प्रतिशत खरपतवारों द्वारा, 26 प्रतिशत रोगों द्वारा, 20 प्रतिशत कीटों द्वारा, 7 प्रतिशत भण्डारण, 6 प्रतिशत चूहों द्वारा तथा 8 प्रतिशत अन्य कारण सम्मिलित हैं। यह क्षति दलहन में 7 प्रतिशत, ज्वार में 10 प्रतिशत, गेहूँ में 11.4 प्रतिशत, गन्ने में 15 प्रतिशत, धान में 18.6 प्रतिशत, कपास में 22 प्रतिशत तथा तिलहन में 25 प्रतिशत तक होती है। फसलों, फलों एवं सब्जियों पर इनके प्रकोप को कम करने के उद्देश्य से कृषकों द्वारा फसल सुरक्षा रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है।

प्रदेश में कीटनाशकों की औसत खपत 279.60 ग्राम प्रति हेक्टेयर है, जो देश की औसत खपत 288 ग्राम प्रति हेक्टेयर से कम है। इस औसत खपत में 58.7 प्रतिशत कीटनाशक, 22.0 प्रतिशत अपतृणनाशक, 16.0 प्रतिशत रोगनाशक तथा 3.3 प्रतिशत चूहा विनाशक/धूम्रक सम्मिलित हैं।

जैविक एजेन्ट एवं जैविक कीटनाशक

जैविक एजेंट तथा जैविक कीटनाशक जीवों यथा कीटों, फफूदों, जीवाणुओं एवं वनस्पतियों पर आधारित उत्पाद हैं, जो फसलों, सब्जियों एवं फलों को कीटों एवं व्याधियों से सुरक्षित कर उत्पादन बढ़ाने में सहयोग करते हैं। ये जैविक एजेंट/जैविक कीटनाशक 20–30 दिनों के अंदर भूमि एवं जल से मिलकर जैविक क्रिया का अंग बन जाते हैं तथा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण को कोई भी हानि नहीं पहुंचाते हैं।

नीम एक प्राकृतिक कीटनाशक है, जिसमें एजाडिरेक्टिन एवं सैलानिन तत्व पाये जाते हैं जो फसलों को कीड़ो द्वारा खाने से बचाता है तथा फसलों को सुरक्षा प्रदान करता है। इसका तेल, खली एवं पत्तियों, पौध संरक्षण एवं कीट नियंत्रण में प्रयोग किया जाता है।

जैविक कीटनाशकों से लाभ

जीवों एवं वनस्पतियों पर आधारित उत्पाद होने के कारण, जैविक कीटनाशक लगभग एक माह में भूमि में मिलकर अपघटित हो जाते हैं तथा इनका कोई अंश अवशेष नहीं रहता। यही कारण है कि इन्हें पारिस्थितकीय मित्र के रूप में जाना जाता है।

जैविक कीटनाशकों के प्रयोग से कीटों/व्याधियों में सहनशीलता एवं प्रतिरोध नहीं उत्पन्न होता है। जैविक कीटनाशकों के प्रयोग से कीटों के जैविक स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं होता है जैविक कीटनाशकों के प्रयोग के तुरन्त बाद फलियों, फलों, सब्जियों की कटाई कर प्रयोग में लाया जा सकता है। जैविक कीटनाशकों के सुरक्षित, हानिरहित तथा पारिस्थितकीय मित्र होने के कारण विश्व में इनके प्रयोग से उत्पादित चाय, कपास, फल, सब्जियों, तम्बाकू तथा खाद्यान्नों, दलहन एवं तिलहन की मांग एवं मूल्यों में वृद्धि हो रही है, जिसका परिणाम यह है कि कृषकों को उनके उत्पादों का अधिक मूल्य मिल रहा है। ट्राइकोडर्मा, जैविक कीटनाशकों के विषहीन एवं हानिरहित होने के कारण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इनके प्रयोग से आत्महत्या की सम्भावना शून्य हो गई है, जैविक कीटनाशक, पर्यावरण, मनुष्य एवं पशुओं के लिए सुरक्षित तथा हानिरहित हैं। इनके प्रयोग से जैविक खेती को बढ़ावा मिलता है जो पर्यावरण एवं परिस्थितकीय का संतुलन बनाये रखने में सहायक हैं।

✲ **ट्राइकोग्रामा (ट्राइकोकार्ड)**

यह ट्राइकोग्रामा जाति की छोटी ततैया जो अंड परजीवी है, जोकि लैपीडोप्टेरा परिवार के लगभग 200 प्रकार के नुकसानदेह कीड़ों के अंडों को खाकर जीवित रहती है। इस ततैया की लम्बाई 0.4 से 0.7 मि.मी. होती है तथा इसका जीवनचक्र निम्न प्रकार है:–

अंडा देने की अवधि	16–24 घण्टे	लार्वा अवधि	2–3 दिन
प्यूपा पूर्व अवधि	2 दिन	प्यूपा अवधि	2–3 दिन
कुल अवधि	8–10 दिन (गर्मी)	9–12 दिन (जाड़ा)	

मादा ट्राइकोग्रामा अपने अंडे हानि पहुंचाने वाले कीड़ों के अंडों के बीच देती है तथा वहीं पर इनकी वृद्धि होती है एवं ट्राइकोग्रामा का जीवन चक्र पूरा होता है। ततैया अंडो में छेद कर बाहर निकलता है। ट्राइकोग्रामा की आपूर्ति कार्ड के रूप में होती है, जिसमें एक कार्ड पर लगभग 20000 अंडे होते हैं। धान, मक्का, गन्ना, सूरजमुखी, कपास, दलहन, फलों एवं सब्जियों के नुकसानदायक तनाछेदक, फलवेधक, पत्ती लपेटक प्रकार के कीड़ों का जैविक विधि से नाश करने हेतु ट्राइकोग्रामा का प्रयोग किया जाता है। इससे 80 से 90 प्रतिशत क्षति को रोका जा सकता है।

ट्राइकोकार्ड को विभिन्न फसलों में 10 से 15 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार लगाया जाता है। खेतों में जैसे ही हानिकारक कीड़ों के अंडे दिखाई दें, तुरन्त ही कार्ड को छोट–छोटे समान टुकड़ों में कैंची से काट कर खेत के विभिन्न भागों में पत्तियों की निचली सतह पर या तने पत्तियों के जोड़ पर धागे से बांध दे। सामान्य फसलों में 5 किन्तु बड़ी फसलों जैसे गन्ना में 10 कार्ड प्रति हेक्टेयर का प्रयोग किया जाए। इसे सांयकाल खेत में लगाया जाय किन्तु इसके उपयोग के पहले, उपयोग के दौरान व उपयोग के बाद खेत में रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव न किया जाए।

ट्राइकोकार्ड को खेत में प्रयोग करने से पूर्व तक 5 से 10 डिग्री के तापक्रम पर बर्फ के डिब्बे या रेफ्रिजरेटर में रखना चाहिए।

✲ ट्राइकोडरमा

ट्राइकोडरमा एक घुलनशील जैविक फफूँदीनाशक है जो ट्राइकोडरमा विरिडे या ट्राइकोडरमा हरजिएनम पर आधारित है। ट्राइकोडरमा फसलों में जड़ तथा तना गलन/सड़न, उकठा (फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम, स्क्लेरोशिया डायलेक्टेमिया) जो फफूंद जनित है, के नियंत्रण हेतु लाभप्रद पाया गया है। धान, गेहूं, दलहनी फसलें, गन्ना, कपास, सब्जियों, फलों एवं फल वृक्षों पर रोगों से यह प्रभावकारी रोकथाम करता है।

ट्राइकोडरमा के कवक तन्तु फसल के नुकसानदायक फफूँदी के कवक तन्तुओं को लपेट कर या सीधे अन्दर घुसकर उनका जीवन रस चूस लेते हैं और नुकसानदायक फफूंदों का नाश करते हैं। इसके अतिरिक्त भोजन स्पर्धा के द्वारा कुछ ऐसे विषाक्त पदार्थ का स्राव करते हैं जो बीजों के चारों और सुरक्षा दीवार बनाकर हानिकारक फफूंदों से सुरक्षा देते हैं। ट्राइकोडरमा से बीजों में अंकुरण अच्छा होकर फसलें फफूंद जनित रोगों से मुक्त रहती हैं एवं उनकी नर्सरी से ही वृद्धि अच्छी होती है।

ट्राइकोडरमा का प्रयोग निम्न रूप से किया जाना उपयोगी है:–

➢ कन्द/कॉर्म/राइजोम/नर्सरी पौध का उपचार 5 ग्राम ट्राइकोडरमा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर डुबोकर करना चाहिए तत्पश्चात् बुवाई/रोपाई की जाए।

➢ बीज शोधन हेतु 4 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज में सूखा मिला कर बुवाई की जाए।

➢ भूमि शोधन हेतु एक किलोग्राम ट्राइकोडरमा को 25 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर एक सप्ताह तक छाया में सुखाने के उपरान्त बुवाई के पूर्व प्रति एकड़ प्रयोग किया जाए।

➢ बहुवर्षीय पेड़ों की जड़ के चारों ओर गड्ढा खोदकर 100 ग्राम ट्राइकोडरमा पाउडर को मिट्टी में सीधे या गोबर/कम्पोस्ट की खाद के साथ मिला कर दिया जाए।

➢ सारी फसल में फफूंदजनित रोग के नियंत्रण हेतु 2–5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 400–500 लीटर पानी में घोलकर सायंकाल छिड़काव करें। जिससे आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है।

✲ एन.पी.वी (न्यूक्लियर पॉलीहेड्रासिस वायरस)

न्यूक्लियर पॉलीहेड्रासिस वायरस (एन.पी.वी.) पर आधारित हरी सूंडी (हेलिकोवर्पा आर्मीज़ेरा) अथवा तम्बाकू सूंड़ी (स्पोडाप्टेरा लिटूरा) का जैविक कीटनाशक है जो तरल रूप में उपलब्ध है। इसमें वायरस कण होते हैं जिनसे सूंडी

द्वारा खाने या सम्पर्क में आने पर सूंडियों का शरीर 2 से 4 दिन के भीतर गाढ़ा भूरा फूला हुआ व सड़ जाता है, सफेद तरल पदार्थ निकलता है व मृत्यु हो जाती है। रोग ग्रसित तथा मरी हुई सूंडियां पत्तियों एवं टहनियों पर लटकी हुई पाई जाती हैं।

एन.पी.वी. कपास, फूलगोभी, टमाटर, मिर्च, भिण्डी, मटर, मूंगफली, सूर्यमुखी, अरहर, चना, मोटा अनाज, तम्बाकू एवं फूलों को नुकसान से बचाता है। प्रयोग करने से पूर्व 1 मि.ली. एन.पी.वी. को 1 लीटर पानी में घोल बनाये तथा ऐसे घोल को 250 से 500 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से 12 से 15 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 छिड़काव फसलों के लिए उपयोगी हैं। छिड़काव सांयकाल को किया जाए तथा ध्यान रहे कि लार्वा की प्रारम्भिक शैशवावस्था में अथवा अंडा देने की स्थिति में प्रथम छिड़काव किया जाय। एन.पी.वी. की शेल्फ लाइफ 01 माह है।

✲ ब्यूवेरिया बैसियाना

यह एक फफूंदी जनित उत्पाद है, जो विभिन्न प्रकार के फुदकों को नियंत्रित करता है। यह लेपीडोप्टेरा कुल के कैटरपिलर, जिसमें फली छेदक (हेलियोथिस), स्पोडाप्टेरा, छेदक तथा बाल वाले कैटरपिलर सम्मिलित हैं, पर प्रभावी है तथा छिड़काव होने पर उनमें बीमारी पैदा कर देता है जिससे कीड़े पंगु हो जाते है और निष्क्रिय होकर मर जाते हैं। यह विभिन्न प्रकार की फसलों, फलों एवं सब्जियों में लगने वाले फली बेधक पत्ती लपेटक, पत्ती खाने वाले कीट, भूमि में दीमक एवं सफेद गीडार आदि की रोकथाम के लिए लाभकारी है।

प्रयोग विधि

भूमि शोधन हेतु ब्यूवेरिया बैसियान का 2–5 कि.ग्रा. प्रति हे. लगभग 25 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर अन्तिम जोताई के समय प्रयोग करना चाहिये।

खाई फसल में कीट नियंत्रण हेतु 2–5 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से 400–500 लीटर पानी में घोलकर सायंकाल छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है। इसकी शेल्फ लाईफ 1 वर्ष है।

✲ स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स

यह जीवाणु चने की फसल में उपयोगी पाया गया है। यह जीवाणु पौधों में लगने वाले तीन रोगकारक कवाकों फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम प्रजाति साइसेरी, राइजोक्टोनिया वटारीकोला व पाइथियम को रोकने में सक्षम हैं।

प्रयोग करने की विधि

बीज उपचार

500 ग्राम सूखी गोबर की खाद को 2–5 लीटर पानी में डालकर गाढ़ा घोल (स्लरी) बनाने के बाद 500 ग्राम स्यूडोमोनास को डाल कर इस गाढ़े घोल में पौधों की जड़ को डुबो कर उपचारित करने के उपरान्त लगाना चाहिए। इस प्रकार के उपचारकण अधिकांशतः सब्जियों वाली फसलों यथा फूलगोभी, टमाटर बैंगन, मिर्चा व प्याज मे तथा धान के पौधों की जड़ों पर करना चाहिए।

पौधों की जड़ का उपचार

सवा एक लीटर पानी में 115 ग्राम गुड़ अथवा 55 ग्राम चीनी को गरम करके चिपचिपा घोल तैयार करने के उपरान्त उसमें 500 ग्राम स्यूडोमोनास का संवर्धन डाल कर गाढ़ा घोल तैयार कर लेना चाहिए, यह गाढ़ा घोल 10 कि.ग्रा. बीज को उपचारित करने के लिए पर्याप्त होता है। बीज में घोल अच्छी तरह से मिलाने के बाद छाया में सुखाकर ही बुवाई करनी चाहिए।

मृदा उपचार

स्यूडोमोनास के संवर्धन की 800 ग्राम मात्रा विभिन्न फसलों के अनुसार 10–20 कि.ग्रा. महीन पिसी हुई मृदा या बालू में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में फसलों की बुवाई के पूर्व उर्वरकों की तरह छिड़काव करना लाभप्रद होता है।

✲ क्राइसोपर्ला

क्राइसोपर्ला नामक हरे कीट, जिनकी लम्बाई 1 से 1–3 से.मी. पंख लम्बे हल्के रंग के पारदर्शी, सुनहरी आंखे तथा 5

एन्टिना धारक होते हैं, के लार्वा सफेद मक्खी, माहूँ जैसिड थ्रिप्स आदि के अंडो तथा लार्वा को खा जाते है, को प्रभावित खेतों में डाला जाता है, इनका जीवन चक्र निम्न प्रकार है:–

अंडा अवधि	*3–4 दिन*	*लार्वा अवधि*	*11–13 दिन*
प्यूपा अवधि	*5–7 दिन*	*व्यस्कता*	*35 दिन*
अंडे क्षमता	*300–400 अंडे*	–	–

क्राइसोपर्ला के अंडों को कोरसियरा के अंडों के साथ लकड़ी के बुरादे में बाक्स में आपूर्ति किया जाता है। इनके लार्वा कोरसियरा के अंडो को खाकर वयस्क बनते हैं। विभिन्न फसलों में क्राइसोपर्ला के 50000 से 100000 लार्वा या 500 से 1000 वयस्क प्रति हेक्टेयर डालने से कीटो का नियंत्रण भली प्रकार से होता है। सामान्यतः दो बार इन्हें छोड़ना चाहिए।

क्राइसोपर्ला के अंडों को 10 से 15 डिग्री पर रेफ्रीजेरेटर में 15 दिनों तक रखा जा सकता है। सामान्य तापमान पर इनका जीवन चक्र प्रारम्भ हो जाता है।

✲ एजाडिरेक्टिन (नीम का तेल)

यह नीम के बीज एवं गूदा के तत्वों पर आधारित तरल वानस्पतिक कीटनाशक है। इसकी गंध एवं स्वाद कीड़ों को भगाती है, खाने की अनिच्छा उत्पन्न करती है एवं जीवन चक्र को धीमा एवं प्रजननशीलता को कमजोर बनाकर अंडे तथा बच्चों की संख्या में कमी लाती है।

नीम का तेल कपास, चना, धान, अरहर, तिलहन तथा टमाटर में नुकसान पहुंचाने वाले गोलवर्म, तेलाचेंपा (माहूँ), सफेद मक्खियां भृंग, फुदका, कटुआ सूंडी तथा फल बेधक सूंडी पर प्रभावशाली है। खड़ी फसल में कीट नियंत्रण हेतु एजाडिरेक्टिन (नीम का तेल) 0.15 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 ली. मात्रा प्रति हे. की दर से 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये। इसकी शेल्फ लाइफ एक वर्ष है।

✲ बी. टी. (बेसिलस थ्यूनिरजिएन्सिस)

5 प्रतिशत डब्लू.पी. बी.टी. एक बैक्टिरिया आधारित जैविक कीटनाशक है जो सूंडियों पर तत्काल प्रभाव डालता है। इससे सूंड़ियों पर लकवा, आंतों का फटना, भूखापन तथा संक्रमण होता है तथा वे दो से तीन दिन में मर जाती हैं। यह पाउडर एवं तरल दोनों रूपों में उपलब्ध है। इसका प्रयोग मटर, चना, कपास, अरहर, मूंगफली, सूरजमुखी, धान फूलगोभी, पत्ता गोभी, टमाटर, बैंगन, मिर्च तथा भिण्डी में उपयोगी एवं प्रभावशाली हैं।

बी.टी. का प्रयोग छिड़काव द्वारा किया जाता है। प्रति हेक्टेयर 0.5 से 1.0 कि.ग्रा. मात्रा को 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर दो से तीन बार छिड़काव लाभकारी है। इसकी सेल्फ लाइफ 1 वर्ष है।

✲ फेरोमोन ट्रेप (गंध पाश)

फेरोमोन ट्रेप फसलों को नुकसान करने वाली सूंडियों के नर पतंगों को फंसाने के लिए चमकीले प्लास्टिक का बना होता है। इसमें कीप के आकार के मुख्य भाग पर लगे ढक्कन के मध्य में मादा कीट की गंध (ल्योर) लगाया जाता है, जो नर पतंगों को आकर्षित करता है। कीप के निचले भाग पर पालीथीन की थैली लगायी जाती है, जिसमें पतंगे जाते है। थैली के निचले मुख पर से रबर बैंड हटाकर फंसे पतंगे निकाल कर मार दिए जाते है।

फेरोमोन ट्रेप को खेत में पतंगों की उपस्थिति पता करने के लिए 5–6 ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से तथा अधिक संख्या में पकड़ने के लिए 15 से 20 ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाया जाता है। इसे खेत में कीप पर लगे हत्थे द्वारा डंडे पर फसल की ऊंचाई से 1–2 फुट ऊपर लगाया जाता है।

ल्यूर (गंध रबर) में गंधक रहित रबर पर मादा पतंगों की विशेष गंध (फेरोमोन) भरी होती है। विभिन्न प्रकार के पतंगों के लिए अलग–अलग ल्यूर उपयोग किए जाते है। ल्यूर थैली में बंद मिलता है, जिसे खोल कर ट्रैप के ढक्कन में बने स्थान पर लगाया जाता है। कपास, चना, अरहर, टमाटर, गोभी, बंदगोभी, मूंग, उर्द, भिण्डी तथा धान के लिए विभिन्न प्रकार के ल्यूर का प्रयोग करते हुए फेरोमोन ट्रैप लगाये जाते है। ल्यूर 3–4 सप्ताह तक कार्य करता है।

राजभाषा कार्यान्वयन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जिम्मेदारी

अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), निगमित कार्यालय

सरकार की राजभाषा नीति, भारतीय संविधान के अनुच्छेद राजभाषा अधिनियम 1963, 1967 में संशोधन, राजभाषा संकल्प 1968, राजभाषा नियम 1976, 1987 में संशोधन में वर्णित संकल्पों को पूरा करने के लिए भारत सरकार का गृह मंत्रालय प्रतिवर्ष राजभाषा विकास के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार करता है, जिससे राजभाषा के प्रचार एवं विकास को गति मिले और कार्यालयों में उसका उत्तरोत्तर प्रयोग किया जाए। प्रत्येक विभाग, संस्थान, यूनिट में राजभाषा के हिन्दी अधिकारी अपने–अपने कार्यालयों में इसके अंतर्गत कई कार्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठी, बैठक, सम्मेलन, गृह पत्रिका का प्रकाशन, निरीक्षण आदि करते रहते हैं।

आज जब वैश्वीकरण के युग में चारों ओर अंग्रेजी का नगाड़ा गुंज रहा हो तो ऐसे समय में कविवर शिवमंगल सिंह 'सुमन' की पक्तियाँ राजभाषा विकास के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों के तूफानों को चुनौती के रूप में सामना करने के लिए अद्भूत प्रेरणा स्रोत हैं।

आप किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी में जाइए या भले ही अपने देश के युवा पीढ़ी से पाँच मिनट तक हिन्दी में बाते करने का प्रयास कीजिए– स्थान चाहे मेकडॉनल का हो या किसी महाविद्यालय के बाहर। आपका हिन्दी संवाद, दो मिनट से ज्यादा नहीं चल सकेगा। हिन्दी बोलते ही आप एक विचित्र हीन भावना से भर उठेंगे और अपना स्थान प्रमाणित करने के लिए अंग्रेजी की दुलती झाड़ने लगेंगे।

ऐसे परिदृश्य में राजभाषा हिन्दी के विकास की बात सोचना वास्तव में तूफान को चुनौती देने जैसा है। 'मिलटन' का कहना है कि हर राष्ट्र को विदेशी भाषा की अपेक्षा अपनी भाषा को ही पहचान देना चाहिए, चाहे वह भाषा अविकसित ही क्यों न हो क्योंकि विदेशी भाषा का प्रयोग दासता का द्योतक होता है।

डेनमार्क में जब विदेशी हुकूमत समाप्त हुई, तो चूँकी पहले वहाँ जर्मन साम्राज्य था, इसलिए वहाँ की राजभाषा जर्मन थी। परंतु आज वहाँ परिस्थिति वैसी नहीं है। वहाँ हर जगह 'डेनिस' ही प्रयोग में लाई जाती है।

इंग्लैंड में अंग्रेजी से पहले फ्रेन्च का वर्चस्व था। इसी प्रकार इस्राइल में भी हिब्रू प्रतिष्ठित करने के लिए बाधाएँ आई। वह चीज हमें भारत में लानी होगी। अब थोड़ी हिम्मत, थोड़ी मेहनत करना तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान को जगाने की आवश्यकता है। जब विश्व के अन्य देश अपनी मातृभाषा में पढ़कर उन्नति कर सकते हैं, तब हमें राष्ट्रभाषा अपनाने में झिझक क्यों होनी चाहिए।

हिंदी के महान साहित्यकार तथा खड़ी बोली हिंदी के जन्मदाता माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था,

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"।।

भारत की उन्नति के लिए आवश्यक है कि भारतवासी ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करें। यह हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का मूल सूत्र है। अतः हमें अपनी संविधान सम्मत सभी भाषाओं का पूर्ण सम्मान करते हुए राष्ट्रीय भावना और एकता को परिपुष्ट करने के लिए राजभाषा हिंदी को उसके पद पर सही अर्थों में निष्ठापूर्वक स्थापित करने का संकल्प लेना चाहिए।

क्या आज हम सबको हिन्दी दिवस, संगोष्ठियों तथा बैठके आयोजित करने के स्थान पर स्वयं दृढ़ता से हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

फादर कॉमिल बुल्के 1935 में बेल्जियम से भारत आए। यहाँ हिन्दी की दुर्दशा देखकर, उन्हें इतना दुःख हुआ कि आक्रोश में भरकर वह कह उठे कि यहाँ अपनी ही भाषा के प्रति लोगों में स्वाभिमान की भावना नहीं है और वह इसकी उपेक्षा कर रहे हैं। यही सब देखकर वे भारत में ही बस गए और आज 'फादर कॉमिल बुल्के' का हिन्दी 'शब्दकोश' हम दैनिंदिन कार्यों में सर्वाधिक प्रयोग करते हैं।

जब एक विदेशी हमारी भाषा को इतना सम्मान दे सकता है तो क्यों नहीं हम भी प्रांतीय भाषा के स्थूल भाव से उठकर, अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक भारतीय दृष्टि से सम्मान देते हुए अपने रोजमर्रा के कामों में अपना सकते हैं।

15 अगस्त 1947 को हमें आजादी प्राप्त हुई और संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों, मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है। संविधान के अनुछेद 343 के अंतर्गत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, जिसकी लिपी देवनागरी तय हुई और अनुच्छेद 351 के अंतर्गत भारत सरकार को हिन्दी के प्रचार–प्रसार का दायित्व दिया गया। फिर क्या कारण है कि इतने वर्षों बाद भी जब संस्कृत को माँ, हिन्दी को गृहिणी और अंग्रेजी को नौकरानी कि स्थिति में होना चाहिए था, आज दिशा इसके विपरित है।

उपरोक्त परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विकास को प्रभावी बनाने के लिए हमें स्वयं में सुधार लाना होगा। इसके लिए हमें छोटे–छोटे कदम उठाने होंगे, क्योंकि हर बड़ी यात्रा की शुरूआत एक छोटे कदम से होती है।

यदि हमें राजभाषा विकास या कार्यान्वयन को गतिमान बनाना है तो अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निम्नांकित बातों को दायित्व के साथ निभाना है। आवश्यकता है इस दीपक को अखंड ज्योति में बदल हिन्दी वर्ष से हिन्दी ज्ञान तक ले जाने की। अमावस्या का अंधकार अंधापन नहीं है, परंतु पुर्णिमा तक पहुँचाने के लिए हम सबको अनवरत त्याग, कर्म, सेवा तपस्या अनुष्ठान करने होंगे, ताकि राजभाषा अपने लक्ष्य तक निम्नांकित बातों से पहुँच सकेंगे।

1. प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से चाहे रोजमर्रा कार्यों में अथवा बैंक के कार्यक्रलापों में हिन्दी में करें। स्वयं अधिकाअधिक कार्य हिन्दी में करें। संवाद की भाषा यथा संभव हिन्दी ही रखें।
2. प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी फाईलों में टिप्पणी, दैनिक कार्य का विवरण, हाजरी पुस्तिका हिन्दी में ही करें। नामपट्ट, रबड़ की मुहरें द्विभाषा में हो। फाईलों पर हिन्दी में शीर्षक हो। हिन्दी में प्राप्त हुए पत्र का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए। गृह पत्रिका के लिए हिन्दी में ही सूचना एवं आलेख दें। तकनीकी कर्मचारी कहीं के भी हो हिन्दी में काम करें। ग्रुप 'डी' कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षण दें, ताकि उनके काम में गलतियाँ न हों।

3. गर्व से हिन्दी में पत्राचार करना है। जब 'फादर कॉमिल बुल्के' विदेशी होकर भी हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ 'शब्दकोश' का सृजन कर सकते हैं तो क्या हम भारतीय अपनी भाषा में पत्राचार नहीं कर सकते।
4. सरकार को सरकारी नौकरियों में हिन्दी प्रयोग को पदोन्नति से जोड़ना होगा, तभी हमारे कार्मिक लोगों में राजभाषा में कार्य करने की प्रवृत्ति जागृत होगी।
5. राजभाषा विकास को प्रभावी बनाने के लिए प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को सबसे पहले स्वयं को सुधारना है। कहते हैं कि एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, परंतु बूंद–बूंद से समुद्र बनता है और राजभाषा विकास में आने वाली कठिनाईयाँ तो आग से पहले धुएँ की स्थिति वाली दशा है।
6. जहाँ राजभाषा विकास को प्रभावी बनाने के लिए नौकरशाही–नेताओं को राष्ट्र के व्यापक हित के लिए क्षुद्र स्वार्थ से उठकर अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान की भावना लेकर नीतियों को बदलना चाहिए, वही हम सब को हिन्दी के लिए प्रतिबद्धता दिलाते हुए स्वयं तो अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करना ही चाहिए साथ ही स्वाभिमान के आलोक से आस–पास के वातावरण को प्रकाशित करना चाहिए।
7. राजभाषा हिन्दी में प्रत्येक कर्मचारियों को अपनी–अपनी भूमिका निभानी होगी, तभी कार्यालयों में हिन्दी का वातावरण निखरेगा एवं हिन्दी राजभाषा में अभिवृद्धि होगी।
8. राजभाषा हिन्दी में जितना गहराई से कार्य करेंगे उस कार्यालय की छवि–गौरव–गरिमा में वृद्धि होगी और राजभाषा के विकास के लिए जितने अधिक कार्मिक अपना योगदान देंगे, उतना ही राजभाषा का विकास तीव्र गती से होगा। बल्कि राजभाषा अनुभव के सहारे गति धीमी रहेगी परंतु कार्मिक अपनी भूमिका का निर्वाह करेंगे तो निश्चय ही मनवांछित फल प्राप्त होंगे।
9. इसलिए राजभाषा हिन्दी के विकास को प्रभावी बनाने की दिशा में सबसे सार्थक और ठोस कदम हिन्दी के लिए प्रतिबद्धता का संकल्प लेना है न कि केवल इसे भाषणों की राजनीति तक सामित कर देना हम सब के मान से ही सदा अपने अर्थव्यवहार में हिन्दी का सूर्य उगाना है, तब मानसिक गुलामी का अंधकार स्वयं ही दूर हो जाएगा।
10. सभी अधिकारी एवं कर्मचारी संविधान एवं राजभाषा अधिनियम को ईमानदारी के साथ ठीक से पढ़ें, समझें, तथा जो कुछ अच्छा लगे उसे तन–मन–धन से प्रचारित करें तथा राजभाषा के रूप में हिन्दी को सुशोभित करने हेतु सकारात्मक एवं रचनात्मक कार्य करें।
11. हिन्दी के विकास के प्रयोग में अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को व्यवहारिक समस्याएँ अवश्य हैं। परंतु लगातार व्यवहार से कोई भी भाषा अपने आप में सरल हो जाती है। यह हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य भी है हम राजभाषा हिन्दी का प्रयोग व सम्मान करें।
12. सभी अधिकारी एवं कर्मचारी को यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने हेतु समय–समय पर राजभाषा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक मूल पत्राचार, टिप्पण एवं मसौदा लेखन हिंदी मे किया जा सकें।

वार्षिक कार्यक्रम में उल्लेख रहता है कि राजभाषा नीति का अनुपालन हिन्दी अधिकारी की जिम्मेदारी नहीं, परंतु कार्यालय के प्रमुख या प्रशासनिक अधिकारी एवं कागज पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। इस राजभाषा विकास में कड़वे अनुभव भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सम्मुख आएंगे, परंतु उन्हें याद रखना होगा कि, सागर मंथन में अमृत से पहले विष निकला था। फिर भी धीरज और सतत् प्रयास के द्वारा कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी। हिंदी की विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी भी जाती है, जबकि अंग्रेजी की वर्तनी और उच्चारण में बहुत अंतर होता है। यह हिंदी की महानता है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिंदी अपना स्वरूप बदलती गई है, लेकिन हर हिन्दुस्तानी के मुँह में हिंदी जरूर समाई हुई है।

कहा गया है:

जैसे श्रृंगार है अधूरा स्त्री का
गर उसके माथे पर बिन्दी नहीं है।
वैसे अधूरा जीवन है हिंदी वासी का
गर उसकी जुबाँ पर हिंदी नहीं है।।

अतः हमें ''एक हृदय हो भारत जननी'' का पुण्य भाव रखते हुए राजभाषा हिंदी में कार्यान्वयन एवं संवाद अधिक से अधिक करना चाहिए। तभी हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

राजभाषा हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ0 विशेष श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी, रसायनी यूनिट

सात दशक पूर्व 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संविधान में अधिकारिक राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। हर वर्ष 14 सितम्बर को देश के लोगों को जागरूक करने के लिए तरह–तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। विशेषकर हिंदी राज्यों में यह दिवस हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है, जिससे लोगों को हिंदी भाषा के बारे में जानकारी के साथ–साथ भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न हो और इसका प्रचार–प्रसार हो सके। हिंदी भाषा के साथ तो प्रारंभ से ही सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, हिंदी को राजभाषा घोषित करने से पहले ही बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। विशेषकर दक्षिण भारतीय राज्यों ने हिंदी भाषा का कड़ा विरोध किया, जो कि शिक्षा नीतियों में भी देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा को 15 साल के लिए राजभाषा के रूप में जगह दी गई, जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ राज्यों ने अंग्रेजी को ही आज तक राजभाषा बनाये रखा है। इसके बावजूद भी आज अंग्रेजी, चीनी, स्पेनिश, अरबी और फ्रेंच भाषाओं के साथ हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोलचाल में लाई जाने वाली भाषा है। भारत में आज लगभग 650 से अधिक जीवित भाषाएं है परंतु भारत वर्ष में आज संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी, अंग्रेजी, और स्थानीय भाषाओं को ही प्रयोग में लाया जाता है। हिंदी भाषा को भारत में तीन चौथाई लोग बोलते और समझते हैं। हिंदी भारत के 12 राज्यों की प्रथम भाषा और 11 राज्यों में इसे द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। इतना सब होने के बावजूद भी, हिंदी अब तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई है क्यों? हिंदी भाषा की विशालता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि हिंदी 18 बोलियों का एक समूह है और इस विशाल समूह वाली भाषा का प्रतिनिधित्व हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के संबोधन में किया। इससे पता चलता है कि हमारी हिंदी भाषा स्थानीय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक स्तर तक स्थान प्राप्त कर रही है।

इस हिंदी भाषा की अस्मिता ने राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ये लोगों के कौशल, भाव और ज्ञान को प्रकट करने में बड़ी ही सहायक सिद्ध हुई है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। हिंदी ने आज़ादी की लड़ाई में, सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में बांध के संजोये रखा और जन–जन के संघर्ष को आवाज़ दी। अधिकांश देश भक्ति के नारों का निर्माण हिंदी भाषा में किया गया। हिंदी के महत्व को रेखांकित करते हुए किसी ने सच ही कहा है कि–

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है,
और हिंदी ने हमें गुंगेपन से बचाया।"

न केवल हिंदी विभाग अपितु सभी संकायों के शिक्षाविद् की भूमिका के मूल्यांकन की जरूरत है। शिक्षाविद, संस्कृतनिष्ट हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं; जैसे आम आदमी हिंदी भाषा से अलग–थलग महसूस करता है। हिंदी विभाग की भूमिका को अपनी भूमिका का निर्वहन करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

भूमण्डलीकरण ने हिंदी के बाज़ार को विकसित किया है। हिंग्लिश शब्द हिंदी और इंग्लिश से उत्पन्न हुआ, जो कि भूमण्डलीकरण और बाज़ारवाद की देन है। आज हिंदी बाज़ार एवं व्यापार की भाषा बन गई है। हिंदी की शक्ति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि हिंदी भारतवर्ष में ही नहीं अपितु दुनिया की कई जगहों पर व्यापार की भाषा भी बन गई है। इस भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी की क्रय–विक्रय की शक्ति को अब बाहर के लोग भी समझने लगे है। हिंदी का बाज़ार लगभग 33 राष्ट्रों में फैला है। अंग्रेजी में यह ताकत अभी भी नहीं है। हिंदी फिल्मों का बाज़ार अभी भी विदेशों में दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इससे देश को करोड़ो रुपयों की आमदनी हो रही है।

हिंदी भाषा की चुनौतियाँ – हिंदी भाषा को अन्य भाषाओं से चुनौतियाँ– प्रांतीय अंग्रेजी और उर्दू भाषा से हिंदी को कड़ी चुनौतियाँ मिल रही हैं। आज इन भाषाओं में प्रतिस्पर्धा का माहौल है, जिसके कारण वे एक–दूसरे को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुँचा रही है। हिंदी भाषा को दूसरी बड़ी चुनौती मीडिया से उत्पन्न–हिंग्लिश भाषा से मिल रही है। मीडिया आज अपने फायदे के लिए हिंग्लिश का प्रचार–प्रसार अधिक कर रहा है। हिंग्लिश ने हिंदी के समक्ष अपनी शुद्धता को बनाये रखने की समस्या उत्पन्न कर दी है।

वैश्विकरण के दौर में अंग्रेजी भाषा को अधिक बल मिल रहा है। इसी के साथ ही सिनेमा ने हिंदी के समक्ष समस्याएँ उत्पन्न की हैं। सिनेमा में हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग के कारण भाषा में अशुद्धता आई। कुछ विषयों की पुस्तकों का हिंदी में उपलब्ध न

होना। मशीनी अनुवाद इतना पर्याप्त नहीं कि पाठकों की माँग को पूरा कर सके। एक महत्वपूर्ण समस्या यह भी है कि शोध और अनुसंधान के लिए हिंदी में शोध अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है। जिसके कारण शोधार्थी अंग्रेजी में शोधकार्य करना पसंद करते हैं। विज्ञापन बाज़ार हिंदी के लिए दिन–प्रतिदिन चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है। जिसके तहत एक वर्ग विशेष को लुभाने के लिए अंग्रेज़ी में विज्ञापन, उत्पाद का नाम अंग्रेजी में प्रचारित किया जा रहा है।

आज इस दौर में हमें हिंदी के सबल और कमज़ोर पक्षों की समीक्षा करना है और कैसे हम सब हिंदी के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

हिंदी भाषा की चुनौतियों से निपटने का उपाय– इसे व्यवहार और बोलचाल की भाषा बनाया जाए, अभिव्यक्ति का माध्यम सुदृढ़ किया जाए। हिंदी भाषा को रोजगार की भाषा बनाया जाए। हिंदी के माध्यम से युवकों को कौशल प्रशिक्षण दिया जाए। इसे विज्ञान की भी भाषा बनाया जाए।

हिंदी विश्वविद्यालयों की स्थापना– हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अटल बिहारी बाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल एवं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा को स्थापित किया गया है। इस तरह के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सभी राज्यों में प्रारंभ किए जाएं। इसके अतिरिक्त सरकार का विभिन्न राष्ट्रों के विश्वविद्यालय के साथ अनुबंध किया जाए, जिससे विदेशी विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/विद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना हो सके।

अंग्रेजी भाषा पर निर्भरता कम करके भी हिंदी का विकास किया जा सकता है। आज जापान, चीन इत्यादि राष्ट्र अंग्रेजी ज्ञान के बिना आत्मनिर्भर बन गए। यद्यपि हिंदी के प्रति लोगों के संकीर्ण और संकुचित नज़रिये को बदलने की जरूरत है। हिंदी का प्रचार–प्रसार प्रांतीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे सोशल–मीडिया, प्रिंट–मीडिया, टी.वी.–सिनेमा, हिंदी में शासकीय और गैर शासकीय कार्यों का संपादन अनिवार्य रूप से किया जाए। हिंदी भाषा को और अधिक समृद्ध बनाया जाए। अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके, हिंदी में अनुवाद को बढ़ावा मिले, क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया जाए, साथ ही विदेशी भाषाओं की रचनाओं के हिंदी अनुवाद को प्राथमिकता दी जाए।

हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 72 वर्ष हो गए, आज हिंदी भाषा जनसंपर्क की भाषा बन चुकी है। परंतु कई कारणों से आज भी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी है। यदि भारत वर्ष को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है तो, उसे हिंदी को कार्य पद्धति, शिक्षा, ज्ञान, कौशल, व्यापार, मीडिया, बाज़ार की भाषा बनाना ही होगा। ऐसा किये बिना यह देश न तो संपन्न बन सकता है और न समता मूलक, न महाशक्ति और न ही विकसित अर्थव्यवस्था, हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने से पहले उसे जन भाषा बनाना होगा।

लक्ष्य की ओर बढ़ते कदम

कुंदन पाटिल
लेखा अधिकारी, रसायनी यूनिट

भारत के संदर्भ में हमेशा विविधता में एकता की परिभाषा हर परिदृश्य में साकार होती नजर आती है। उदाहरण के तौर पर संस्कृति, रहन–सहन, वेशभूषा, खान–पान, भाषा, सामाजिक मान्यताएँ, प्रथाएँ इत्यादि के रूप में देख सकते हैं। यही भिन्नताएँ सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से लोगों को एकजुट बनाएँ रखने में सार्थक सिद्ध होती रही हैं। समृद्ध देश के धरातल पर जहां सैकड़ों वर्ष विदेशियों ने राज किया और भारत की जनता को गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर रखने में ही अपनी प्रगति और विकास का मार्ग बनाते रहे। वहाँ इतने वर्षों के संघर्ष के उपरांत भी भारत अपनी संस्कृति और सभ्यता की गरिमा को बनाए रखने में सफल रहा है।

संविधान में लिखित अधिकारों और कर्तव्यों का हनन होने पर जहां प्रत्येक नागरिक कार्रवाई करने के लिए उतारू हो जाता है वहीं राजभाषा के नाम पर यह चुप्पी क्यों साध ली जाती है? क्या यह हमारे अधिकारों का हनन नहीं है? क्या राजभाषा को व्यर्थ की वस्तु मान लिया गया है? क्या विदेशी भाषा की महत्ता ने अपनी जड़–जमीन की भाषा की महत्ता को हीन बना दिया है? क्या राजभाषा में वार्तालाप और कामकाज किसी कार्मिक को निम्न कोटी का बना देता है?

ऐसे अनेकों प्रश्न हैं जो बिजली की कौंध की तरह दिमाग में उथल–पुथल मचाते रहते हैं। क्या यह सवाल केवल राजभाषा बोलने, लिखने, पढ़ने और हिन्दी साहित्य पढ़ने–पढ़ाने वालों के ही दिमाग में उपजते हैं?

वर्तमान समय में सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और कार्यान्वयन पर सरकार का शिकंजा कड़ा होता जा रहा है। संवैधानिक नियम–उपनियमों के अंतर्गत कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में काफी सीमा तक किया जा रहा है। फिर राजभाषा को भी उसका अधिकार दिलाना है तो सर्वप्रथम अपनी शक्ति का परीक्षण करना चाहिए। जब तक हम अपने आपको नहीं जानेंगे तब तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। राजभाषा हिन्दी का अनुपालन संवैधानिक दायित्व के साथ–साथ नैतिक दायित्व भी है। यह दायित्व प्रत्येक नागरिक का है। आज यदि हमने अपना दायित्व नहीं पहचाना तो आने वाले समय में राजभाषा हिन्दी की स्थिति विकट समस्या बनकर उभरेगी। जिस प्रकार अन्य भाषाएं अंग्रेजी भाषा की चपेट में मृत हो चुकी हैं या मृत होने की कगार पर हैं, उनके बोलने वाले हैं लुप्त हो चुके हैं या धीरे–धीरे लुप्त हो रहे हैं, उसी प्रकार से हिन्दी की भी स्थिति के विषय में निरंतर विचार–विमर्श के साथ उचित कार्रवाई करना अनिवार्य हो गया है। हमे जागरूक नागरिक का कर्तव्य निभाते हुए राजभाषा हिन्दी के लक्ष्य को प्राप्त करना है। एक भाषा की मृत्यु होना यानि उसकी सभ्यता, संस्कृति की मृत्यु होना है। यह जिम्मेदारी पारिवारिक स्तर से आरंभ होते हुए शैक्षणिक स्तर तक होनी चाहिए अन्यथा हम कार्यशालाओं और संगोष्ठियों में चर्चा–परिचर्चा ही करते रहेंगे। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए प्राथमिक स्तर से आरंभ करने की आवश्यकता है।

अक्सर कुछ तथाकथित विद्वानों के दिमाग में यह विचार आता है कि राजभाषा हिन्दी का समर्थन करना यानी अंग्रेजी या अन्य भाषाओं या बोलियों का विरोध करना है। जबकि यह सत्य नहीं है जिस प्रकार से किसी मनुष्य के हृदय में उसके सभी करीबियों का अपना अलग स्थान होता है, उसी प्रकार से सभी भाषाओं का अपना महत्व और स्थान है। हिन्दी को प्राथमिकता इसलिए दी जाती है क्योंकि वह अपनी सरल प्रवृत्ति के कारण समझने और बोलने में आसान है। अपनी सरल प्रवृत्ति के कारण हिन्दी संपर्क भाषा बनी है। उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक हिन्दी एक बड़े वर्ग के द्वारा बोली और समझी जाती है। वर्तमान में अंग्रेजी और भविष्य में हिन्दी की महत्ता और आवश्यकता को समझते हुए श्री ए.पी.जे. कलाम कहते हैं– 'अंग्रेजी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में विज्ञान के मूल काम अंग्रेजी में है। मेरा विश्वास है कि अगले दो दशक में विज्ञान के मूल काम हमारी भाषाओं में आने शुरू हो जाएंगे तब हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे।' हिन्दी की वर्तमान स्थिति को देखते हुए कलाम जी के कथन में आशा का यह बीज दिखाई देता है, जिसने वृक्ष का रूप धारण कर लिया है।

तकनीकी क्षेत्र में सक्षम होने के नाते हिंदी कार्यान्वयन में तकनीकी का प्रयोग करने में भी कई तकनीकी सॉफ्टवेयर का निर्माण किया गया है। जैसे हिन्दी टाइपिंग के लिए यूनिकोड सॉफ्टवेयर, अनुवाद के लिए राजभाषा विभाग का कंठस्थ सॉफ्टवेयर और गूगल अनुवाद सॉफ्टवेयर, गूगल वॉइस टाइपिंग सॉफ्टवेयर आदि इसके साथ–साथ टाइपिंग में रह गई अशुद्धियों को सुधारने के लिए सॉफ्टवेयर का सहारा लिया जा सकता है। जिस प्रकार अन्य कार्यों के लिए तकनीक विधियों का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार से राजभाषा के कार्यान्वयन में भी उपरोक्त सॉफ्टवेयरों के प्रयोग से तीव्र गति में कार्य किया जा सकता है। इस तरह प्रौद्योगिकी की सहायता और हम सबके प्रयासों से राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार एव कार्यान्यवन उत्तरोत्तर प्रगति करेगा।

राजभाषा के रूप में हिंदी

सी0 जार्ज
वरिष्ठ सहायक (प्रशासन), रसायनी यूनिट

प्रस्तावनाः

संसार में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में मेंडरिन चीनी, अंग्रेजी और स्पैनिश के बाद हिंदी तीसरे स्थान पर अपना स्थान सुनिश्चित करती है। परंतु, दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा के रूप में देखा जाए तो पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में अंग्रेजी के बाद हिंदी का ही नाम आता है। अभी हम हिंदी को राजभाषा का दर्जा कैसे प्राप्त हुआ और राजभाषा क्या होती है, इसके संबंध में जानने वाले हैं।

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है और इसे राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा दिया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। भारत में बहुत सी भाषाएं बोली जाती हैं, परंतु हिंदी भाषा का अपना ही एक महत्व है, जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। भक्तिकाल में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक चारों दिशाओं में अनेक संतों द्वारा हिंदी भाषा में ही रचनाएँ की गयी थी। स्वतंत्रता के समय में राजनेताओं, जैसे– राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, सुब्रमण्यम भारती द्वारा हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित की गई।

राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषाः

समाज में जिस भाषा का प्रयोग कर बहुत सारे लोग अपने विचार प्रकट करते हैं और उस भाषा का प्रभाव क्षेत्र और अधिक विस्तृत होकर पूरे राष्ट्र में फैल जाता है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा का अर्थ उस भाषा से है जिस भाषा का उपयोग करके विचारों का आदान प्रदान किया जाता है। जिस भाषा का इस्तेमाल राजकीय कार्यों में किया जाता है, जिस भाषा का प्रयोग केंद्रीय और प्रादेशिक सरकार द्वारा पत्र व्यवहार, राजकाज और सरकारी प्रयोजनों के लिए किया जाता है, उसे हम राजभाषा कहते हैं।

राजभाषा के रूप में हिंदीः

हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11 वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी में होते थे, परंतु संपूर्ण राष्ट्र में आपसी संपर्क, संवाद–संचार, विचार–विमर्श जीवन व्यवहार का माध्यम हिंदी ही था। अंत में लगातार विकास के कारण स्वतंत्रता के बाद हिंदी भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और राजभाषा का एक रूप विकसित हुआ।

हिंदी की विशेषताएँ

हमारी राजभाषा की कुछ विशेषताएँ नीचे बतायी गयी हैः–

- इस भाषा को समझना और सीखना आसान है।
- इस भाषा को जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा और बोला जाता है। यही इसकी मुख्य विशेषता है।
- इस भाषा को संस्कृत भाषा की बेटी कहा जाता है।
- इसके साहित्य का क्षेत्र भी विशाल है।

क्यों है हिंदी हमारी राजभाषा ?

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा किसी भाषा को राजभाषा होने के लिए निम्नलिखित लक्षण बताए गए हैंः–

1. राजभाषा के लिए उसका आसान होना आवश्यक है।
2. प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
3. उस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए।

उपर्युक्त लक्षणों के कारण ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

राजभाषा हिंदी का संघर्ष व इतिहासः

हिंदी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधीजी और अन्यों द्वारा कई प्रयास किए गए। सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक पहला प्रयास किया गया, इन्होंने हिंदी को जनमानस की भाषा के रूप में बताया। इस पर फाफी विचार विमर्श

के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। उसके बाद 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश का संविधान बना उस संविधान में इस भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया और इसे भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय को धारा 343 (1) में निहित किया गया। साथ ही बताया गया है कि राष्ट्र की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।

हिंदी के विकास का कार्यः

हिंदी भाषा का विकास और प्रसार करने के उद्देश्य से संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ के कर्तव्य के रूप में राज्य को यह निदेश दिया गया कि वो भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनें और उनका विकास करें। इसके प्रचार के लिए हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें हिंदी निबंध लेखन, वाद–विवाद, हिंदी टंकण आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक सरकारी, अर्ध–सरकारी संस्थान हिंदी दिवस पर कोई–न–कोई आयोजन करते हैं। इस अवसर पर कई पुरस्कार भी वितरित किए जाते हैं।

हिंदी भाषा की अजीब विडम्बना

राजभाषा होने के बावजूद हिंदी बोलने–लिखने वालों को एक अलग ही दृष्टि से देखा जाता है, जिसके कारण हिंदी बोलने वाला व्यक्ति अपने आप को हीन समझता है। सब लोग अंग्रेजी भाषा बोलना चाहते हैं। एडमिशन के लिए, जॉब के लिए, सब जगह लोग अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं। सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होने के बावजूद, हिंदी को आज भी राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं है, जबकि इससे कही कम बोली जाने वाली अरबी और फ्रेंच भाषाओं को यह सम्मान हासिल है।

ऐसा क्यों ? शायद हमने ही हिंदी को वो सम्मान और स्थान नहीं दिया जो उसे दिया जाना चाहिए, तो फिर दूसरों से कैसे समर्थन की उम्मीद रखें। यदि हम चाहते है कि हिंदी भाषा का सम्मान और स्थान बना रहे तो हमें अंग्रेजी की तरफ आकर्षित न होकर हिंदी को सम्मान दिलाने का प्रयास करना चाहिए तभी हम हिंदी भाषा को राजभाषा का जो दर्जा प्राप्त है, आने वाले समय में उसे निरंतर रख पाएंगे। गिरधर शर्माजी ने सही कहा कि, हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असंभव है।

निष्कर्षः

हिंदी को राजभाषा दर्जा प्राप्त हो चुका है, लेकिन लोगों के बीच से किसी–न–किसी तरह गायब होती जा रही है। आज कल लोग अंग्रेजी को महान भाषा समझते हैं। यदि स्थिति इस प्रकार रही तो वो दिन ज्यादा दूर नहीं जब हिंदी भाषा हमारे बीच से ओझल हो जाएगी। यदि हम सच में चाहते हैं कि हिंदी भाषा का प्रभुत्व राजभाषा के रूप में बना रहे तो हमें हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी तभी हिंदी भाषा को जिंदा रखा जा सकता है। आशा करते हैं कि सब लोग अपनी राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण रूप से निभाएंगे और अपने देश का मान–सम्मान बढ़ाएंगे।

देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा हैः

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

राजभाषा हिंदी का महत्त्व

डॉ0 स्वर्णलता सिन्हा
अतिथि अध्यापक, गुरु घासी दास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
धर्मपत्नी डॉ0 विशेष श्रीवास्तव,
अधिकारी (राजभाषा), रसायनी यूनिट

भारत–भातृ–बन्धु–जन वन्दित,
राज–काज हेतु हे स्वीकृत।
सरल अलंकृत परिष्कृत भाषा,
सुन्दरतम है यह राजभाषा।।

भाष धातु से भाषा शब्द की सिद्धि होती है। पाणिनि के अनुसार भाष धातु का अर्थ है व्यक्त वाणी (भाष व्यक्तायां वाचि)। अर्थात् मनुष्य की व्यक्त वाणी को भाषा कहते हैं। जिन ध्वनि संकेतों के माध्यम से मनुष्य अपनी बात को दूसरों तक सम्प्रेषित करता है, उसे भाषा कहते हैं। भाषा के तीन रूप होते हैं बोलियाँ, परिनिष्ठित भाषा एवं राष्ट्रभाषा। साधारण जनता जिन बोलियों का प्रयोग अपने घरों या समूहों में करती है, उसे बोली कहते हैं। जैसे भोजपुरी, मगही, ब्रजभाषा, अवधी आदि। किसी बोली को जब व्याकरण द्वारा परिष्कृत किया जाता है तो वह परिनिष्ठित भाषा कहलाती है। खड़ी बोली कभी बोली थी पर आज यह परिनिष्ठित भाषा बन चुकी है। इसका प्रयोग भारत के सभी स्थानों पर होता है। भाषा जब व्यापक शक्ति ग्रहण कर लेती है तो यह आगे चलकर राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के आधार पर राजभाषा या राष्ट्रभाषा का स्थान पा लेती है। देश के प्रमुख नेताओं ने हिंदी भाषा को राजभाषा का गौरव प्रदान किया है।

भाषा सबसे बड़ी ज्योति

संसार में मानव ही सबसे अधिक सौभाग्यशाली जीव है जिसे बोलने के लिए भाषा मिली है। भाषा ऐसी ज्योति है जिससे संसार प्रकाशित होता है। सूर्य या किसी कृत्रिम प्रकाश के रहते हुए भी यदि भाषा रूपी ज्योति न हो तो यह सम्पूर्ण जगत् अन्धकारमय हो जाएगा। इसके बिना कोई भी कुछ नहीं कर सकता। अतः किसी एक भाषा का होना अत्यावश्यक है।

राजभाषा हिंदी

अब प्रश्न उठता है कि हमारी भाषा क्या हो ? किस भाषा से राष्ट्रीयता का विकास सम्भव है? यह ऐसी कौन–सी भाषा है जो सबके लिए सरल, सुगम व सुबोध है। इसके उत्तर में एक ही भाषा का नाम आता है और वह है हिंदी। भारत के संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हम पूरे भारत में हिंदी दिवस मनाते हैं। हिंदी हर राज्य में बोली और समझी जाती है। कोई भी ऐसा राज्य नहीं है, जहाँ हिंदी नहीं समझी जाती हो।

हिंदी अब केवल भारत की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की भाषा बन चुकी है। इसलिए प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाते हैं।

भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता

भाषा में वह ताकत होती है जो सभी को एक सूत्र में बांध सकती है। हर प्रदेश की अपनी–अपनी लोकभाषा होती है जिसके द्वारा अपने–अपने अंचल में लोग आपस में बात–चीत करते हैं। पर कोई भी क्षेत्रीय भाषा राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं ले सकती है। राष्ट्रभाषा का स्थान उसी को प्राप्त हो सकता है जो हर प्रदेश में समझी व बोली जाती है। ऐसी भाषा एकमात्र हिंदी ही है जो सभी प्रान्तों के लिए उपयुक्त है। इसमें सभी प्रान्तों को एक सूत्र में बांधने की क्षमता है।

राष्ट्रीय ध्वज से शान देश में, भाषा से सम्मान है।
जग–जग जुड़ता हिंदी से ही, जन–जन की पहचान है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी यद्यपि संविधान के द्वारा किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। फिर भी लोगों के द्वारा हिंदी राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी है। जिस प्रकार अपनी शक्ति व पहचान के माध्यम से राज्याभिषेक के बिना भी सिंह जंगल का राजा कहलाता है उसी तरह हिंदी भाषा में सरलता, व्यापकता व प्रसारता के कारण यह राष्ट्रभाषा कहलाती है।

राज्याभिषेक तो हुआ नहीं, पर सिंह ही वनराज है।
राष्ट्रभाषा पद पर सुविभाषित, हिंदी का जग में राज है।।

हिंदी का नामकरण

हमारा देश सिंधु अर्थात् समुद्र के बीच में स्थित है। अतः सिंधुओं से घिरे होने के कारण इसका नाम प्रारम्भ में सिंधुस्थान रखा गया। फारसी भाषा से प्रभावित होकर सिंधुस्थान शब्द का ''स''–''ह'' में, ''ध''–''द'' में एवं ''थ''–''त'' में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार सिधुस्थान–हिंदुस्तान में बदल गया। हिंदुस्तान को संक्षेप में 'हिंद' कहने लगे एवं हिंद देश की भाषा हिंदी कहलायी।

सिन्धु–सेज पर रहने वाला, सिन्धुस्थान कहलाया।
फारसी की संगति से निश्चय, हिन्दुस्तान बन आया।

हिंदी हमारी पहचान है

जिस प्रकार हमारे लिए हमारी माँ एवं जन्मभूमि का स्थान सर्वोच्च है। उसी प्रकार सभी भाषाओं में हमारी हिंदी भाषा भी सर्वोच्च स्थान पर विराजती है। संस्कृत की यह उत्तराधिकारिणी भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है। हिंदी भाषा में जो बोलते हैं, वही लिखते भी हैं। अंग्रेजी में ऐसी बात नहीं है। अतः हिंदी सबसे सरल भाषा है। यह हमारी पहचान है। हम कहीं भी विदेश में जाकर जब हिंदी में बोलते हैं तो सभी समझ जाते हैं कि ये भारतीय है। अतः हमें अपनी पहचान खोनी नहीं चाहिए। हमें इसका विकास सतत करना चाहिए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसके विषय में लिखा है।

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल।

हिंदी का सर्वोच्च स्थान

विश्व में हिंदी को कौन–सा स्थान प्राप्त हो? इस विषय पर अलग–अलग मत प्राप्त हो रहे हैं। विश्व में भाषा जानने वालों की संख्या के आधार पर हिंदी पहले स्थान पर आनी चाहिए जबकि कई लेखक समुचित स्थान पर नहीं दिखाते हैं। उन्नीस सो निन्यानवे (1999) के आंकड़ों के आधार पर विश्व में दो जानने वालों की संख्या एक हजार एक सौ तीन (1103) मिलियन है तथा चीनी भाषा जानने वालों की संख्या केवल एक हजार साठ (1060) मिलियन है। हिंदी जानने वालों की संख्या सर्वाधिक होने पर भी विश्व के अनेक प्रकाशन इसे दूसरे या तीसरे स्थान पर दिखाते हैं। वर्तमान जनगणना के आधार पर भी देखा जाए तो पूरे विश्व में हिंदी शीर्ष स्थान पर विराजित है। मुक्त कंठ से कहा जा सकता है:–

शीर्ष स्थान पर शोभती, वो है अपनी हिंदी।
जैसे भारत माँ के भाल पर सजी है स्वर्णिम बिन्दी।।

जन–जन को जोड़ने वाली हिंदी

अपने देश में कोई भी ऐसा प्रदेश नहीं है जहाँ हिंदी नहीं बोली व समझी जाती है। देश में अन्य कोई भी ऐसी भाषा नहीं है जो हर राज्य में बोली व समझी जाती हो। इसलिए सभी राज्य व देश के मानव जन को जोड़ने वाली यदि कोई भाषा है तो वह हिंदी ही है।

हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग

यद्यपि कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि सभी कार्यालयों में अधिकतर पत्राचार कार्य अंग्रेजी में ही होते हैं। अतः हमारे देश में अंग्रेजी का अभी भी बोल–बाला है। जबकि ऐसी बात नहीं है। जिस किसी व्यक्ति को ऐसा सन्देह है तो उसे कुछ देर तक उस कार्यालय में रुककर खड़ा होकर यह देखना चाहिए कि ये लोग किस भाषा में बात करते हैं। ऐसा देखने के पश्चात् उन्हें यही दिखेगा कि वे यदि कदाचित् अंग्रेजी में लिखते भी है तो वे लोग आपस में बात–चीत हिंदी में ही करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मानव जन को जोड़ने वाली यदि कोई भाषा है तो यह हिंदी ही है। जैसे राष्ट्रीय झंडा हमारी पहचान है, शान है वैसे ही हमारी हिंदी भाषा भी हमारी पहचान है।

जन–जन को है जोड़ती सर्वोच्च इसका स्थान है।
जन–मन की यह सुमधुर भाषा, जगह–जगह सम्मान है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा–भाषी अब केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं। हिंदी आज एक भाषा के रूप में ही नहीं बल्कि यह भारत की पहचान बन चुकी है। हिंदी हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहिका है। संस्कृत के बाद यदि कोई वैज्ञानिक भाषा है तो वह हिंदी है। हिंदी में सबसे अधिक जन संप्रेषणीयता है। भारत संघ की राजभाषा होने के साथ–साथ ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित प्रदेशों की यह राजभाषा है। विश्व में अनुपम स्थान प्राप्त कर यह आज जनता के द्वारा राष्ट्रभाषा स्थान को प्राप्त कर चुकी है। समस्त भारतवासी इसे सम्मान से राष्ट्रभाषा कहते हैं। हम सभी को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए।

अपनी भाषा पर हमें गर्व है,
सम्मान सदा ही करते हैं।

जन–जन की भाषा हिंदी को,
राष्ट्रभाषा सब कहते हैं।।

देवताओं पर आधारित मगही कहावतें

डॉ० विनय कुमार
संकाय अध्यक्ष (मानविकी) और प्रोफेसर (हिंदी), मगध विश्वविद्यालय

यह सर्वविदित है कि संपूर्ण विश्व का नियामक एवं शास्ता ईश्वर है। इस तथ्य का प्रतिपादन विश्व की सभी भाषाओं के सद्ग्रन्थों में हुआ है। भारतीय मनीषियों ने भी इस तथ्य का प्रतिपादन अपने–अपने कृत्तयों में किया है। समग्र वेद–पुराण, उपनिषद आदि में ईश्वर विषयक सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। ईश्वर के स्वरूप के संदर्भ में प्रायः मतैक्याभाव है। सभी संप्रदाय इसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। परंतु स्वरूपगत धारणा सब की अलग–अलग है। इसे विभिन्न नामों से अभिहित किया जता है।

अत्याधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग की आंखें यद्यवि वैज्ञानिक विकास के प्रकाश में चकाचौंध हो गई हैं, परन्तु वे अंतकरण से इसे स्वीकारते हैं कि संपूर्ण विश्व उसी एक मात्र प्रभु की प्रेरणा से प्रेरित हो रहा है।

सचमुच में सभी मानव उन्हीं की प्रेरणा से प्रेरित होकर सात्विक, राजसी एवं तामसिक वृत्तियों में अपने का प्रवृत्त। रामचरित मानस में इस तथ्य की पुष्टि सर्वत्र दृष्टिगत होती है परन्तु रामचरित मानस का उत्तर काण्ड इस दृष्टि से ध्यातव्य है। एक स्थान पर तुलसीदास जी ने लिखा है। कि...

सबर्ङिनचावै राम गुसाई, नाचै नर मरकट की नाई।
**** ****

काम क्रोध लोभादि मद, सकल मोह के धार।
तिन्ह मह अति दारूण दुखद, माया रूपी नार।।

आज जीवन की जटिलता तथा विचार स्वातंत्र्य की भावना के कारण यहां तक कहा जाने लगा है कि ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण नहीं किया, बल्कि मानव ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ईश्वर का निर्माण कर लिया है।

इस संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि विश्व की सभी भाषाओं में ईश्वर–विषयक कहावतें मिलती हैं। इस दृष्टि विषयक निम्नलिखित कहावतें ध्यातव्य हैं:–

राम नाम सब काई कहे, ठग ठाकुर अउ चोर।
बिना प्रेम रीझे नहीं, तुलसी नंद किसोर।।

प्रस्तुत कहावत में राम की महत्ता एवं विशिष्टता का उल्लेख किया गया है। इस कहावत से प्रेमतत्व की महत्ता का बोध होता है। आधुनिक युग में सर्वत्र राम नाम की रट लगाई जा रही है परन्तु प्रेम तत्व के अभाव के कारण प्रभु भूखे हैं। आज संसार में जितने भी भक्त एवं नास्तिक हैं वे राम नाम का मात्र पाठ करते हैं परन्तु तुलसी दास की दृष्टि में प्रभु की प्राप्ति प्रेम से ही संभव है।

राम नाम सब कोई कहे, दशरथ कहे न कोय।
एक बार दशरथ कहे, जनम सवारथ होय।।

आधुनिक युग में सभी लोग राम नाम का जप करते हैं परन्तु वे मर्यादा पुरूषोत्तम के परम पूज्य पिता का स्मरण नहीं करते हैं। परन्तु मनीषियों की मान्यता है कि यदि एक बार भी उनका स्मरण एवं ध्यान किया जाए तो मानव समस्त भौतिक व्याधियों (भौतिक, दैहिक एवं दैविक) से त्राण पा सकता है।

पुनः इस कहावत का एक दूसरा अर्थ भी राम काव्य के विशेषज्ञों ने निर्दिष्ट किया है। उनका कथन है कि मानव मन चंचल है, उसकी इंद्रियां उसके वश में नहीं है अतएव यदि सभी इंद्रियों को राम की ओर उन्मुख कर देने तथा कुछ देर के लिए भी मर्यादा पुरूषोत्तम राम का ध्यान करने पर व्यक्ति समस्त भव–प्रपंचों से मुक्ति पा सकता है।

सिरि राम बिना दुख कउन हरे।
लक्ष्मी बिन आदर कउन करें।।
माता बिन सेवा कउन करे

यह सर्वविदित है कि जब तक प्रभु की प्रेरणा नहीं होती, व्यक्ति सात्विक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख नहीं होता और तब तक वह दुख में ही रहता है। इस स्थिति में जबतक मर्यादा पुरूषोत्तम राम की कृपा–दृष्टि लोगों को प्राप्त नहीं हो जाती तो उनके दुःखों का निवारण असंभव है, उसी प्रकार आज धनाढ्यों का ही समाज में सम्मान होता है, जहाँ इसका अभाव होता है, श्री –हीन व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त होती। इसी तरह मां की तरह अन्य कोई सेवा नहीं कर

सकती। उपर्युक्त कहावतों में भगवान राम, लक्ष्मी तथा माता की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

राम होता तो घर के देता ?

आस्तिक सज्जनों की धारणा है कि यदि राम की दया दृष्टि होगी तो अवश्य दुःखों का निदान हो जाएगा और प्रभु इच्छाओं को शीघ्र पूर्ण करेंगे क्योंकि राम ही परब्रह्म हैं।

राम नाम में आलसी, भोजन में होसियार।

अभी भी सामज में कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी जीविका का निर्वाह वंचक–वृत्ति से करते हैं। वे जीवन में कभी भी भगवद्भजन नहीं करते परन्तु वे आलसी होते हुए भी भोजन में बड़ी चतुरता दिखलाते हैं।

राम नाम जपना, पराया माल अपना।

प्रस्तुत कहावत में समाज में धूर्त एवं अकुशल कम में रत व्यक्तियों पर व्यंग्य किया गया है। ऐसे लोग मात्र वाह्याडम्बर प्रदर्शन के लिए राम नाम का पाठ करते हैं परन्तु समय पाने पर ये शीघ्र ही दूसरे को धोखा देकर उनके सामानों का स्वामी बन जाते हैं।

राम रमइया डगमग सीता जी चकुना।

प्रस्तुत कहावत में सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है। जब किसी परिवार में कन्या के अनुरूप वर का चयन नहीं किया जाता अर्थात यदि कन्या शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं सुंदर हो तथा वर कृशकाय, हो, तो व्यंग्य रूप में लोग इसी प्रकार की कहावतों का प्रयोग करते हैं।

ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

प्रस्तुत कहावत में ईश्वर के संदर्भ में प्रचलित लोकमान्यताओं का निरूपण किया गया है। सचमुच में प्रभु की लीला बड़ी विचित्र है। कभी कभी देखा जाता है कि एक स्थान पर वर्षा होती है, तो अन्यत्र धूप ही रहती है। पुनः कभी यह भी देखा जाता है कि एक ही प्रांत में कहीं वर्षा से त्रस्त जीव जन्तु परेशान हैं तो अन्यत्र वर्षा के लिए ललायित लोग इंद्र एवं वरूण आदि की आराधना में रत हैं। इस प्रसंग में इस कहावत का प्रयोग होता है।

आधावधि यह प्राचीन मान्यता प्रचलित है कि देवताओं के एक दिन पूजन करने से जीवन के अभीष्ट की प्राप्ति असंभव है। उसी तरह आधुनिक युग में न्यायालय एवं राजा महाराजाओं के यहां जब तक लोग दत्तचित्त होकर सर्वात्मना भाव से जुट नहीं जाते, उनके कार्यों का शीघ्र संपादन नहीं हो सकता। इसलिए यह उचित है कि जब तक उद्देश की प्राप्ति नहीं हो जाती, लोग उसमें तन, मन, धन से लगे रहें।

राम मलावल जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी।

यह सर्वविदित है कि प्रभु की प्रेरणानुसार ही विश्व का संचालन होता है। प्रायः समाज में देखा जाता है कि युग्म जोड़ी एक दूसरे के अनुरूप मिल जाते हैं पर कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि एक पक्ष या पति यदि अंधा है तो दूसरा पक्ष अर्थात पत्नी कुष्ठ रोगी है। इस संदर्भ में यह सर्वविदित है कि यह प्रभु की ही प्रेरणा का परिणाम सर्वत्र दृष्टिगत होता है।

जाके रखे साइंया मार सके नहीं कोई।
बाल न बांका करि सके जो जग वैरी होई।।

सम्प्रति, अत्याधुनिक युग में भी आस्तिकों की धारणा है कि जिसके रक्षक प्रभु हैं उसका कोई भी अहित नहीं कर सकता। संसार में उसके अशुभ चिंतक कितनी ही बुराई क्यों न करें, दुष्टों का अशोभनीय प्रयास निरर्थक प्रमाणित होता है।

तुलसी बिरबा बाग में जल छीटें कुम्हलाय।
तुलसी बिरबा राम भरोसे पर्वत पर हरियाय।।

यह सर्वविदित तथ्य है कि संपर्ण विश्व का नियामक एक मात्र ईश्वर है। उनकी प्रेरणा से ही सभी कार्य स्वयं संपादित होते हैं। अभी भी समाज में तुलसी भक्त बाग में प्रतिदिन सिंचन कार्य करते हैं, वह भी अत्यधिक प्रचण्ड ताप से कुम्हला जाती हैं। परन्तु पर्वतीय तुलसी का सिंचन नहीं होने पर भी सदा हरी–भरी रहती है।

उपर्युक्त कहावतों के अतिरिक्त भी मगह प्रदेश में कुछ कहावतें प्राप्त होती हैं जिनमें मगह प्रदेशीय जन–जीवन के दर्शन का उल्लेख मिलता है। इस दृष्टि से अधोलिखित कहावतें द्रष्टव्य हैं, यथा...

1. पड़ले राम कुक्कुर के पाला।
2. चार कोर भीतर तब देव पितर।
3. भागल भूत के लंगोटी भल।
4. राज छोड़ गउरा भीक मांगे।
5. राम भरोसे भारी, भूख लगे तब सूझे थारी।
6. रामे पर रमायन, सीते तक सन्सार।

भोजपुरी लोकगीतों में नारी

डॉ० सुनीता चौहान
प्रो0 तेज नरायन ओझा
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली

लोक साहित्य के अंतर्गत वैसी रचनाएं आती हैं जिन्हें लोक मानस के अनुरूप सरल एवं सहज ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। वैदिक मंत्रों का जहां महत्व जीवन के विभिन्न संस्कारों को संपन्न करने में है तो लोकगीतों का महत्व भी कम नहीं है। हमारे देश में व्रतों–त्योहारों, मेलों, धार्मिक सामाजिक क्रिया कलापों के अवसर पर लोकगीतों को गाने की परंपरा रही है। डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय के अनुसार ''लोक साहित्य का विस्तार अत्यंत व्यापक है। साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, हंसती है, उन सबको लोक साहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है।... जन्म से लेकर मृत्यु तक जिन बोडश संस्कारों का विधान हमारे प्राचीन ऋषियों ने किया है, प्रायः उन सभी संस्कारों के अवसर पर गीत गाए जाते हैं, ... बाह्य जगत में हो रहे परिवर्तन को देखकर हृदय में जिस उल्लास एवं आनंद की अनुभूति होती है, वह लोकगीतों के रूप में प्रकट होती है। खेतों की बुआई, निराई, लुनाई आदि के समय भी गीत गाए जाते हैं।'' लोक गीतों के दृष्टिकोण से यदि हम भोजपुरी साहित्य को देखें तो भोजपुरी समाज में स्त्रियों की दशा को देख पीड़ा होती है। जब किसी घर में पुत्री का जन्म होता है तो उसकी उपमा अंधेरी रात से की जाती है यहाँ तक की जन्म होने के पश्चात् प्रसव कालीन विधि विधानों में भी अंतर दृष्टिगत कटुता का वर्णन है। पुत्री के प्रति माता की अंतर्मन से निकली इस कटुता और व्यथा को देखा जा सकता है।

जहु हम जनिती धियावा कोखि रे जनमिहे,
दिहितों में मरिचि झराई रे,
मरिच के झाके झुके धियावा मारि रे जाइति
छुटि जाइते गरूवा संताप रे।

भोजपुरी समाज में पुत्र का जन्म वसन्त के आगमन जैसा होता है और पुत्री का जन्म पतझड़ के मौसम के समान माना जाता है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमारे देश में कई हिस्सों में जन्म से लेकर जीवनावधि तक नारियों को नियंत्रण और कई प्रकार के बंधनों में जकड़ा जाता है। दहेज की समस्या ससुराल में पाई जाने वाली प्रताड़ना कर्तव्य और धर्म के नाम पर मिलने वाली प्रताड़ना, दुर्भाग्यवश विधवा हो जाने के बाद पृथ्वी का नरकीय जीवन, संतान नहीं होने पर परिवार और समाज से मिलने वाले दुख की उपेक्षा और अपमान जैसी अनगिनत समस्याएं है जो मानवता के नाम पर कलंक है। स्वयं को प्रबुद्ध कहने वाले लोग यदि इस ओर से अपनी आंखें मूंद लें तो इससे अधिक शर्म की बात क्या हो सकती है। एक उदाहरण में जब हाथ की अंगुठी खो जाने के कारण एक स्त्री को पीटा जाता है, सास ननद और पति द्वारा, तो दृश्य अत्यंत कारूणिक हो जाता है।

ससु मोरा मारे ननद मोरा मारे
संइया गोरे रे
बबूर डंडा तानि–तानि संइया मारे रे।।

आज भी भोजपुरी समाज में अधिकांश स्त्रियां आर्थिक दृष्टिकोण से पराधीन हैं उनकी अशिक्षा उनकी राह का रोड़ा है और अर्थोपार्जन की दृष्टि से अत्यंत साधन विहीन है। उन्हें पूरी तरह अपने पति और ससुराल वालों पर निर्भर रहना पड़ता है। फलतः उनकी नियति में सास, ननद और तथाकथित रूप से दूर के रिश्ते की स्त्रियों एवं पुरूषों से व्यंग्य और गाने ताने सुनने पड़ते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा था–

जिये बिनु देह, नदी बिनु लारी
तैसहिं नाथ पुरूख बिनु नारी।।

गोस्वामी जी ने तो नरनारी के परस्पर अन्यो–आश्रित संबंधों को ध्यान में रखकर इन पंक्तियों को लिखा था और नारी की निर्भरता वर्तमान समाज में पुरूषों पर है इसे स्पष्ट किया था। किन्तु भोजपुरी समाज ने कई स्थानों पर और विशेषकर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों के जीवन को हमारे कुछ तथाकथित लोगों के द्वारा धार्मिक रीति, रिवाजों और संस्कारों के नाम पर अत्यंत कष्ट कर बना दिया गया है। जो स्त्री बांझ हो जाती है। उसकी तो दुर्दशा उसके परिवार वाले कर देते हैं। एक बन्ध्या स्त्री के मुख से निकली इन पंक्तियों में उसकी

व्याकुलता का अत्यंत करूणा जन्य चित्र उपस्थित हुआ है।

आताना तिरिथ हम कइली
बाझिन हम रहि गइली रे।।

ऐसी बांझ स्त्री को घर के लोगों से कटुक्तियों का ही सामना नहीं करना पड़ता अपितु उसे मार भी खानी पड़ती है। गांव की स्त्रियों की तिरस्कार भरी दृष्टि का भी सामना करना पड़ता है। एक उदाहरण है जहां एक बांझ स्त्री ऐसे अपमान सहते–सहते थक गई है और ज़हर खाकर मर जाने की बात कहती है, ताकि इस कलंक से मुक्ति मिले–

अस मन करे मइया जहरवा खाइ मरितों तो
दुइ मन करे मइया अगिनिया जरि जरि हो जाउ।।

एक प्रसिद्ध कहावत है कि बारह वर्ष में गधे के भी दिन फिरते हैं। इसी तर्ज पर भोजपुरी में एक कहावत है कि सबके दिन ओर ला, किन्तु इस कहावत की अगली पंक्तियां भोजपुरी समाज में विधवाओं की अथवा पति द्वारा परिव्यक्त स्त्रियों की दशा का कारूणिक चित्र समाज के सामने उपस्थित करने में सक्षम तथा उन बुद्धिजीवियों के मुंह पर एक करारा तमाचा भी है जो समाज सुधार की बात करते हैं। ये पंक्तियां कुछ ऐसी बन गई हैं–

सबके दिन ओराला बाकि राइ में दिन ना ओराला। इस गीत में ऐसा ही दर्द दिया हुआ है–

के मोरा छइहे रॉड के मड़ैया,
के मोरा बितइहै दिनवा रतिया हो रामा।

विभिन्न भोजपुरी लोकगीतों में स्त्रियों से जुड़ी अनेक कुरीतियों का चित्रण मिलता है। बाल विवाह, सती प्रथा, धार्मिक, संस्कारों के नाम पर स्त्रियों के ऊपर अतिरिक्त दबाव आदि से संबंधित लोक गीतों का विपुल साहित्य लोक गीतों में उपलब्ध हैं। एक उदाहरण इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। जहां ससुर द्वारा की जाने वाली यौन प्रताड़ना का चित्रण है–

सासु दाँत रे बतीसी, बहू का बांही गोदना
ससुर जेवना ना जेवेले निहारे मोर गोदना।।

ऐसा ही एक लोकगीत देखने लायक है जहां बाहरी चमक दमक के आकर्षण में फंसकर एक पिता अपनी पुत्री का विवाह तो कर देता है, पर घर के अंदर हृदयहीन व्यक्तियों के हृदय को देखता नहीं और अपनी पुत्री का सुंदर घर बसाने के चक्कर में अनजाने में उसका जीवन अत्यंत दुखद कर देता है। उस पुत्री की आंतरिक का चित्रण इस लोकगीत में हुआ है जो सीधे हमारे मन पर चोट पहुंचाता है–

ऊंचे–ऊंचे कोठिया देख लोभइल, हमरे बाबू जी
भितरा के मरम नाहीं जनले हमरे बाबू जी।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भोजपुरी लोकगीतों में स्त्रियों की कारूणिक दशा का मार्मिक चित्रण है। जैसे साहित्य समाज का दर्पण होता है। वैसे ही लोकगीत अपने से जुड़े समाज की मनोस्थिति को खोलकर रख देते हैं। हमारे वर्तमान संस्कार ने स्त्रियों की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया है। और बड़े–बड़े कार्य भी किए हैं किन्तु अभी भी इस क्षेत्र में सरकार को बहुत कुछ करना है, जो कर भी लेगी यही हमारा विश्वास है।

मानव संसाधन

संकट के समय टीम को प्रेरित कैसे करें ?

सुनील गौड़
महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.)–प्रभारी, निगमित कार्यालय

संकट के समय टीम को प्रेरित कैसे करें ?

उत्तम नैतिकता एवं कार्यव्यवस्थता को बनाए रखना सशक्त नेतृत्व का अनिवार्य अंग है। कठिन परिस्थिति में विशेषकर विपत्ति के समय टीम को सकारात्मक और प्रेरित बनाए रखने के उपाय करना आवश्यक है।

टीम को प्रेरित रखने के लिए कार्यनीतियां निम्नानुसार हैं:

हमारे जीवन में और कार्यस्थल पर सामने आने वाली अनिश्चितता की मात्रा के लिए मनुष्य के मस्तिष्क का निर्माण नहीं हुआ है। व्यापार परिदृश्य में लगातार परिवर्तन, ग्राहकों और कर्मचारियों की अपेक्षाओं, काम की व्यवस्था और महामारी के अस्पष्ट अंत को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पैरों तले जमीन लगातार खिसक रही है। अनिश्चितता मन–मस्तिष्क में एक डर का भाव उत्पन्न करती है, जो कि प्रेरणा, सहयोग, आत्मनियंत्रण और संपूर्ण स्वास्थ्य के क्षय में परिणामित हो सकता है।

इसका सामना करने के लिए निश्चितता के परिवेश का निर्माण करें, जो एक सशक्त आधार का निर्माण और टीम सदस्यों के बीच स्थिरता की भावना उत्पन्न करने में सहायक होगा। व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्षमता के आंकलन के लिए प्रक्रियाएं प्राप्त करना।

यह जानने समझने के लिए इसकी नियमित रूप से जांच करना कि आपकी टीम के सदस्य वर्तमान में क्या कार्य कर रहे हैं। यह आपको दोनों का बोध कराएगा कि कैसे आप अपनी टीम के सदस्यों के बीच किसी कार्य को पुनर्संतुलित कर सकते हैं तथा किसी निर्धारित समय पर टीम की सामूहिक क्षमता क्या है। लोग तब प्रेरित होते हैं जब टीम के लिए लक्ष्यों को बनाने में उनकी कोई भूमिका होती है। वास्तविक रूप से कुछ प्राप्त किए जाने के संबंध में टीम सदस्यों की प्रतिक्रिया प्रत्याशा में वृद्धि कर सकती है।

जब सामूहिक लक्ष्यों पर टीम सहमत हो, तब टीम सदस्यों को अपने कार्य को कैसे, कब तथा कहां पूर्ण करना है इसकी अनुमति दी जानी चाहिए। वेतन एवं अन्य लाभों से अधिक आवश्यक नमनीयता है। निश्चितता के साथ–साथ स्वायत्तता मस्तिष्क में खतरे और इनाम के पांच प्रमुख चालकों में से एक है। जब लोग नियंत्रण में होने और विकल्प पास होने का अनुभव करते हैं, तब वे अधिक प्रेरित एवं उच्च स्वास्थ्य का अनुभव करते हैं। इसके विपरीत स्वायत्तता की कमी एक सशक्त नकारात्मक प्रतिक्रिया को उत्पन्न कर सकती है जो ध्यान केंद्रित और सहयोग की क्षमता को कम कर सकती है। इसके अतिरिक्त, यह विचार करें कि कौन से निर्णय टीम सदस्यों के विवेक पर छोड़े जा सकते हैं।

अपनी टीम को पीछे हटने की अनुमति दें। टीम नेतृत्व से शक्ति गतिशील नज़अंदाज़ हो सकती है जो इसे कुछ लोगों के लिए पीछे हटना तो दूर बोलने के लिए भी डरा सकती है। जब लोग बोलें या पीछे हटें, तो क्या किया जा सकता है या क्या नहीं के संबंध में उन्हें सुनना, स्वीकार करना और दोतरफा बातचीत करना सुनिश्चित करें।

अच्छे नेता आम तौर पर अपनी टीम को अवास्तविक या निम्न प्राथमिकता वाले निवेदनों से सुरक्षित रखते हैं। निष्ठुर प्राथमिकता में सम्मिलित होना सर्वोपरि है। नेता अपनी टीम को स्पष्ट निर्णय लेने के मानदंड देते हैं और आवश्यकतानुसार गैर–आवश्यक अनुरोधों को न कहने के लिए उन्हें सशक्त बनाते हैं। वे टीम सदस्यों को ऐसी आवश्यकताओं से बचाने के लिए सहायता करने हेतु सतर्क होते हैं, जो टीम वास्तविक रूप से प्राप्त नहीं कर सकती है।

बड़ी चुनौतियों का मिलकर सामना करने और दूसरों का आपको समर्थन है यह ज्ञात होने से मनोबल का निर्माण होता है। "हम इसमें एक साथ हैं" लोकाचार को बढ़ावा देने का लक्ष्य, जहां टीम के सदस्य एक दूसरे की सहायता करने के लिए सहयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त अधिक व्यक्तिगत स्तर पर टीम के रूप में जुड़ने के लिए समय निकालना सुनिश्चित करना, चाहे वह बैठकों के आरंभ में हाल–चाल पूछना, किसी टीम सदस्य का जन्मदिवस मनाना, टीम हैप्पी आवर का आयोजन करना, अथवा मनोरंजक टीम–निर्माण गतिविधि करने की योजना बनाना हो। प्रभावहीनता में योगदान देने वाली एकांतवास की भावना के विरूद्ध प्रभाव उत्पन्न करने वाले ऐसे वातावरण का निर्माण करना, जहां टीम सदस्य व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ सकते हैं।

उपरोक्त गतिविधियां टीम के सभी सदस्यों को प्रेरित और व्यस्त रखने में सहयोग कर सकती हैं।

कैसे एक (फ्रेशर) नवनियुक्त उम्मीदवार एक अनुभवी कर्मचारी से बेहतर हो सकता है?

श्वेता भारद्वाज
पुत्री श्री प्रभाकर शर्मा
फिटर ग्रेड II, बठिंडा यूनिट

मेरे इस लेख / ब्लॉग का सार्थक अभिप्राय जीवन में प्रेरणाप्रद व व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन शैली अपनाने में मददगार व सार्थक प्रयास होगा।

किसी भी चीज का विशेषज्ञ, एक बार शुरूआत करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। एक नौसिखिया नए विचारों और उत्साहित जोश से भरा रहता है। कुछ नया सीखने व सुधारकर गुणवत्ता को ध्यान में रखकर किसी भी कंपनी की संस्कृति और व्यवसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके उनमें ढलना भी सदैव सफलता का परिचायक हैं।

एक अनुभवी व्यक्ति को नजरअंदाज न करके किन्तु उसकी तुलना में एक फ्रेश (ताजा) दिमाग अधिक स्वीकार्य और अनुकुलनीय होता जा रहा है। वर्तमान समय में एक अनुभवी दिमाग सिस्टम के क्रियाकलापों को भली भाँती जानता है। लेकिन एक फ्रेशर नयी संभावनाओं के साथ बाजार में टिके रहने की आवश्यकता व अनिवार्यता अवश्य ही प्रारूप में लेकर आता है। जो कि किसी भी कंपनी के भावी भविष्य हेतु आवश्यक है। वह पुरानी पीढ़ी की प्रवत्तियों से रूबरू होकर उनके साथ भी कदम से कदम मिलाकर चलता है।

एक फ्रेशर को काम पर रखने हेतु बुनियादी आवश्यकताएँ।

1. संचार कौशल
2. उनके (विविध)/मल्टीटास्क करने की क्षमता
3. कार्य में रूचि
4. विश्लेषणात्मक और अनुसंधान कौशल व विशिष्टता

हम इस पर कितनी भी चर्चा करते रहें, लेकिन समय, लागत और उत्पादकता जैसे विभिन्न अनिवार्य कारकों पर कंपनी में भर्ती विविधता से भरी होगी।

एक नव युवा के रूप में लोग नौकरी में क्या देखते हैं, लोग इससे क्या अपेक्षा करते हैं? यह निम्नलिखित बिदुओं द्वारा ध्यान आकृष्ट करेगाः–

1. कंपनी की वित्तीय स्थिति कंपनी में वित्तीय रूप से मजबूत सर्वाधिक अनिवार्य है।
2. **कार्य का प्रकार** – जिस प्रकार का कार्य व्यक्ति की क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करके कार्य की उपलब्धि का स्तर व्यक्तिगत स्तर को छूता हो।
3. **सुरक्षा** – ऐसी नौकरी होनी चाहिए जो स्थायी रोजगार की गारंटी दे।
4. **कंपनी की साख (गुडविल)** – कंपनी की साख भी अति आवश्यक है। क्योंकि साख के द्वारा उपरोक्त कई आवश्यकताएं पूर्ण की जा सकती है।
5. **पदोन्नति** – कैरियर में उन्नति का योग बनाते रहें।
6. **सहकर्मी** – सक्षम और मिलनसार सहकर्मी होना भी आर्शीवाद स्वरूप है।
7. **वेतन** – समय पर वेतन द्वारा अपनी दैनिक आवश्यकताओं का निर्वाहन करने हेतु पर्याप्त भुगतान किया जाना चाहिए।
8. **पर्यवेक्षण** – एक तत्काल पर्यवेक्षक होना जो सक्षम विचारशील और निष्पक्ष हो अन्य भी कई देखे–अनदेखे पहलू है। जिन्हे ध्यान में रखकर व्यावसायिक चरमबिंदु नई उचाईयाँ प्राप्त कर सकते हैं।

लोकहित प्रकटीकरण एवं मुखबिर संरक्षण

यशवंत सिंह
प्रबंधक (सतर्कता), निगमित कार्यालय

पिडपी क्या है?

- लोकहित प्रकटीकरण एवं मुखबिर संरक्षण योजना के अंतर्गत की गई शिकायतें 'पिडपी शिकायतें' कहलाती हैं। ये 'मुखबिर शिकायतों' के रूप में भी जानी जाती हैं।
- मुखबिर (whistle blower) वे लोग हैं जो भ्रष्टाचार के मामलों, शक्ति के दुरुपयोग के मामलों अथवा एक लोक सेवक द्वारा किए गए अपराधों को सामने लाते हैं।
- पिडपी में मुखबिर पहचान गुप्त रखी जाती है ताकि शिकायतकर्ता (मुखबिर) का उत्पीड़न न हो, मुखबिर के विरूद्ध कोई दंडात्मक/प्रशासनिक कार्रवाई नहीं की जा सकती है, फिर भी यदि किसी मुखबिर को परेशान किया जाता है तो वह केंद्रीय सतर्कता आयोग को संरक्षण प्रदान करने के लिए लिख सकता है।

पिडपी कौन और कैसे दाख़िल कर सकता है?

- कोई भी व्यक्ति, लोक सेवक अथवा गैर सरकारी संस्था, केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक बंद और सुरक्षित लिफ़ाफ़े में पिडपी शिकायत भेज सकता है। शिकायत, सचिव–केन्द्रीय सतर्कता आयोग को संबोधित होनी चाहिए एवं उस लिफ़ाफ़े पर 'पिडपी शिकायत' लिखा होना चाहिए। मुखबिर को शिकायत के अंदर अथवा साथ में अपना सही नाम और पूरा पता लिखना चाहिए।
- गोपनीयता के लिए कृपया पत्र/लिफ़ाफ़े के कवर पर, बाहर की ओर अपना नाम/पता न लिखें।

पिडपी कहाँ दर्ज़ करें?

- आप अपनी पिडपी शिकायतें केंद्रीय सतर्कता आयोग अर्थात केन्द्रीय सतर्कता आयोग में दर्ज़ करें। केन्द्रीय सतर्कता आयोग केंद्र सरकार एवं उसके अधीन संगठनों से संबंधित पिडपी शिकायतें स्वीकार करने के लिए अधिकृत है।

कृपया याद रखें:

- गुमनाम और छद्‌मनाम वाली शिकायतें पिडपी शिकायतें नहीं मानी जाएँगी।
- शिकायत निवारण यानी परिवेदना निवारण हेतु की गई शिकायतें पिडपी शिकायतें नहीं मानी जाएँगी।
- झूठी, सारहीन एवं बदनियती से की गईं पिडपी शिकायतों के विरुद्ध आयोग कार्यवाही कर सकता है।
- केंद्रीय सूचना आयोग के अनुसार पिडपी से संबंधित सूचनाएँ सूचना का अधिकार अधिनियम के क्षेत्राधिकार से बाहर हैं।

जी.एस.टी. में बदलाव

आरती गुप्ता
वित्त प्रबंधक (प्रभारी), निगमित कार्यालय

ईनपुट टैक्स क्रेडिट (आई.टी.सी.) लेने हेतु नियमों में बड़े बदलाव: ईनपुट टैक्स क्रेडिट को जीएसटी का हृदय व आत्मा माना जाता रहा है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में कर चोरों ने इसका खूब अनुचित लाभ उठाया और सरकार को करोड़ों रुपयों की चपत लगाई। अब एक बार फिर सरकार ने ईनपुट टैक्स क्रेडिट के नियमों में बदलाव कर एक नई शर्त क़ानूनी तौर पर ईनपुट के साथ लगा दी है। अब तक ईनपुट लेने हेतु धारा 16(2) के तहत सिर्फ चार शर्ते हुआ करती थी जो की इस प्रकार है –

(1) वस्तु एवं सेवाएं पाने वाले क्रेता/खरीददार के पास विक्रेता द्वारा जारी टैक्स ईनवॉइस हो

(2) वस्तु एवं सेवाओं का वास्तविक रूप में प्राप्त होना

(3) ईनपुट टैक्स का क्लेम मासिक जी.एस.टी.आर.–3बी. रिटर्न के माध्यम से क्रेता द्वारा लेना

(4) वस्तु एवं सेवा प्रदाता द्वारा जारी किये गए टैक्स ईनवॉइस का कर सरकार के खाते मे जमा करवा देना

इन चार शर्तों के अतिरिक्त नियम 36(4) के तहत जो ईनपुट करदाता अपने टैक्स रिटर्न में ले रहा है वो ज्यादा से ज्यादा जीएसटी पोर्टल में दर्शाये गए जी.एस.टी.आर.–2ए फार्म के ईनपुट से 5% अधिक हो सकता है। कुल मिलाकर अगर इन शर्तों का पालन किया गया है तो अब तक ईनपुट लिया जा सकता था। हांलाकि इनमें से कुछ शर्तें सरकार ने ऐसी रखी हैं जो की करदाताओं के वश से बाहर हैं जैसे की विक्रेता द्वारा टैक्स ईनवॉइस मे दर्शाए गए ईनपुट को सरकार के खाते में समय पर जमा करवाना किसी भी क्रेता (जो की उस ईनवॉइस की ईनपुट ले रहा है) के वश मे कतई नहीं हैं। अतः व्यावाहरिक दृष्टिकोण से इस शर्त का पालन करना नामुमकीन सा लगता है। नियम 36(4) की अगर बात करें तो यह नियम पहली बार अक्टूबर, 2019 से 20% की सीमा के साथ लागू हुआ था। एक जनवरी 2020 से सरकार ने इस सीमा को 20% से घटाकर 10% कर दिया था। फिर पुनः 1 जनवरी 2021 से इस सीमा को 10% से घटाकर 5% कर दिया गया। हालांकी यह नियम शुरू से ही विवादों से घिरा हुआ था। कई न्यायालयों में भी इसे चुनौती दी जा चुकी है एवं मामले लंबित हैं। कानून के जानकारों के अनुसार इसका मुख्य कारण यह है की इस नियम का किसी धारा के आधीन न होना।

अब नए वर्ष 1 जनवरी 2022 से सरकार ने ईनपुट लेने की शर्तों मे उपरोक्त चार शर्तों के आलावा पाँचवी एक नई शर्त और जोड़ दी है। अब धारा 16(2) मे एक नई उप–धारा (कक) जोड़ दी गई है जिसके तहत अब ईनपुट सिर्फ और सिर्फ तभी लिया जा सकेगा जब आपूर्तिकर्ता (विक्रेता) द्वारा उस ईनपुट को अपने जी.एस.टी.आर.–1 में अपलोड किया गया हो और क्रेता के जी.एस.टी.आर.–2ए/2बी में वो दिख रहा हो। हांलांकि कर विभाग बहुत पहले से ही ईनपुट मिसमैच (जी.एस.टी.आर.–3बी बनाम जी.एस.टी.आर.–2ए) के नोटिसेस करदाताओं को भेज रहा था लेकिन अब इस नई उपधारा का आना कहीं ना कहीं इस बात को और अधिक पुख्ता करता है कि 1 जनवरी 2022 से पहले कानून मे इस तरह का कोई प्रावधान नहीं था की विक्रेता द्वारा बेचे गए माल का ईनपुट खरीदार के पोर्टल पर आना जरुरी है। इस बात की पुष्टी कई कर एवं कानूनी विशेषज्ञ भी कर चुके हैं। इसका मतलब यह हुआ की अब तक करदाताओं को बेवजह ही मिसमैच नोटिस भेजकर परेशान किया जा रहा था।

लेकिन अब 1 जनवरी 2022 से परिस्थिति बदल जाएगी और करदाताओं को इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा की ईनपुट टैक्स क्रेडिट उतना ही लें जितना पोर्टल में दिख रहा है नहीं तो मिसमैच के नोटिसेस आना अनिवार्य है। अब आप अपने खातों के अनुसार ईनपुट नहीं ले सकते है। नियम 36(4) जो की 5% तक के डिफरेंस की अनुमति देता है वो भी अब स्वतः ही निरस्त हो जाएगा। अतः अब यह अति आवश्यक हो गया है की सभी वस्तु एवं सेवा प्राप्तकर्ता (क्रेता) इस बात को सुनिश्चित करे की वो जिस ईनवॉइस का

ईनपुट ले रहे है उसका आपूर्तिकर्ता (विक्रेता) अपना जी.एस.टी.आर.–1 रिटर्न समय पर लगाया हो, नहीं तो ईनपुट उस महीने में नहीं मिलेगा और आपकी जेब से वो पैसा फिर से भरना पड़ जाएगा। इस नए नियम को लागू करने के पिछे सरकार की यही मंशा रही होगी की कहीं न कहीं अनुशासन लाया जाए, कर अनुपालना मे वृद्धि हो और फर्जीवाड़े को रोका जा सके।

इस नए नियम के लागू होने के पश्चात करदाताओं के मन में कई प्रकार के प्रश्न एवं जिज्ञासाएं अवश्य ही आएंगी। क्या–क्या प्रश्न इस नए नियम लगने के पश्चात् आपके मन में आने वाले हैं ?

प्र0 1: सबसे पहला सवाल यह आता है की क्या यह नया नियम प्रत्याशित प्रभाव लागू होगा या पूर्वव्यापी रूप से ?

उ0 1: जब भी किसी कानून में कोई बदलाव किये जाते हैं तो वह हमेशा प्रत्याशित प्रभाव ही लागू होते हैं, बशर्ते उस कानून की धारा में विशेष रूप से इस बात का उल्लेख न हो की यह पूर्वव्यापी रूप से लागू होंगे। चूँकि सरकार ने इस नए उपनियम 16(2)(कक) मे ऐसी कोई बात नहीं बताई है कि यह पूर्वव्यापी रूप से लागू होगा तो यह बहुत स्पष्ट है कि यह प्रावधान प्रत्याशित प्रभाव ही लागू होंगे।

प्र0 2: दूसरा प्रश्न यह आता है की क्या यह नया नियम दिसंबर, 2021 के मासिक/त्रिमासिक रिटर्न पर लगेगा या जनवरी 2022 के रिटर्न से लगेगा ?

उ0 2: लेखक का मानना है की चूँकि यह नियम 01 जनवरी 2022 से पहली बार लागू हुआ है तो इस नए नियम के अनुसार जो ट्रांसेक्शन्स 01 जनवरी के पश्चात् होंगे उन्हीं पर यह लागू होगा न की 01 जनवरी 2022 से पहले के ट्रांसेक्शन्स पर भी। अतः दिसंबर महीने का रिटर्न पुराने नियमानुसार ही लगेगा और जनवरी के जी.एस.टी.आर.–3बी रिटर्न को नए नियम से भरना पड़ेगा जो की फ़रवरी 2022 में भरना है।

प्र0 3: जो ईनवॉइस आपूर्तिकर्ता (विक्रेता) द्वारा 1 जनवरी 2022 से पहले जारी किये गए है और उनका ईनपुट अगर जनवरी महीने मे या उसके बाद लिया जाता है तो क्या नया नियम उन ईनवॉइस पर भी लगेगा ?

उ0 3: लेखक के अनुसार ऐसे इन्वॉइसेस पर पुराना नियम जो की दिसंबर 2021 तक था वो ही लागू होना चाहिए।

प्र0 4: क्या यह नियम आर.सी.एम. के ईनपुट पर भी लगेगा?

उ0 4: आर.सी.एम. का ईनपुट स्वतः चालान के आधार पर लिया जाता है तो यह नियम आर.सी.एम. ईनपुट पर नहीं लगेगा।

प्र0 5: क्या यह नियम आपूर्तिकर्ता द्वारा जारी डेबिट नोट पर भी लगेगा ?

उ0 5: जी हाँ, यह नियम बीजक और डेबिट नोट दोनों पर ही लगेगा।

प्र0 6: इस नए नियम में किस फार्म के आधार पर (जी.एस.टी.आर.–2ए, जी.एस.टी.आर.–2बी) ईनपुट मिलेगा?

उ0 6: इस प्रश्न का उत्तर जानने से पहले हमें यह समझना जरुरी है की जी.एस.टी.आर.–2ए एवं जी.एस.टी.आर.–2बी में क्या फर्क है? जी.एस.टी.आर.–2ए एक गतिशील फार्म है जो की हर समय बदलता रहता है जैसे–जैसे आपूर्तिकर्ता ईनवॉइस अपलोड करते हैं जी.एस.टी.आर.–2ए में आते जाते हैं। लेकिन इसके ठीक विपरीत जी.एस.टी.आर.–2बी फार्म जो की जुलाई 2020 से चालू हुआ एक स्थिर फार्म है यह फॉर्म 13 तारीख तक तो बदलता रहता है लेकिन इस तिथि के बाद यह फ्रीज हो जाता है। इसका मतलब ये हुआ की जी.एस.टी.आर.–1 की देय तिथि के बाद अगर आपूर्तिकर्ता ईनवॉइस अपलोड करता है तो ऐसे ईनवॉइस उस माह के जी.एस.टी.आर.–2बी में नहीं आएंगे। अब जीएसटी में ईनपुट जी.एस.टी.आर.–3बी फॉर्म के द्वारा लिया जाता है तथा इस फॉर्म को भरने की अंतिम तिथि अगले महीने की 20 तिथि है तो ऐसे मे प्रश्न यह आता है कि धारा 16(2)(कक) का पालन जी.एस.टी.आर.–2ए देखकर किया जाए या फिर जी.एस.टी.आर.–2बी? लेखक का ऐसा मानना है की यहाँ पर हमे जी.एस.टी.आर.–2बी को ही मानना पड़ेगा क्यों की इसी फॉर्म से ही ऑटो–पॉप्युलेटेड आंकड़े अब जी.एस.टी.आर.–3बी में आएंगे।

केंद्रीय बजट 2022-23 की मुख्य बातें

अभिरंजन शर्मा
सहायक वित्त प्रबन्धक, निगमित कार्यालय

केंद्रीय बजट में सूक्ष्म आर्थिक स्तर पर सभी समेकित कल्याण पर ध्यान देने के साथ बृहद आर्थिक स्तर वृद्धि पर जोर देने की कल्पना की गई है। केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने आज संसद में केन्द्रीय बजट 2022–23 पेश किया।

बजट की मुख्य बातें निम्न हैं –

- भारत की आर्थिक वृद्धि दर 9–2 प्रतिशत अनुमानित है, जो सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक है।
- 14 क्षेत्रों में उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना के तहत 60 लाख नए रोजगार का सृजन होगा।
- अगले 25 साल भारत@100 के अमृत काल में प्रवेश करते हुए बजट में 4 प्राथमिकताओं में विकास पर जोर दिया गया है:
  - पीएम गतिशक्ति
  - समेकित विकास
  - उत्पाद संवर्धन एवं निवेश, सनराइज अवसर, ऊर्जा संक्रमण और जलवायु कार्य
  - निवेश को वित्तीय मदद

पीएम गतिशक्तिः पीएम गतिशक्ति मास्टर प्लान – नौजवान, महिला, किसान, और पिछड़ो पर ध्यान।

सड़क मार्ग – वर्ष 2022–23 में 2500 किलोमीटर तक राष्ट्रीय राजमार्ग का विस्तार।

रेल मार्ग

- स्थानीय व्यापार और आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ाने के लिए एक स्टेशन एक उत्पाद की संकल्पना।
- 2022–23 में देसी विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी और क्षमता वृद्धि कवच के तहत रेल मार्ग नेटवर्क में 2000 किलोमीटर जोड़ा जाएगा।

पर्वतमाला

- राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम, पर्वतमाला को पीपीपी प्रारूप में लाया जाएगा।
- 2022–23 में 60 किलोमीटर लंबी 8 रोपवे परियोजनाओं के लिए संविदाएं प्रदान की जाएंगी।

समेकित विकास

कृषि

- गेहूं और धान की खरीद के लिए 163 लाख किसानों को 2–37 लाख करोड़ रुपए का सीधा भुगतान।
- देशभर में रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जाएगा। शुरू में गंगा नदी से सटे 5 किलोमीटर की चौड़ाई तक के गलियारे वाले किसानों की जमीनों पर ध्यान दिया जाएगा।

शिक्षा

- महत्वपूर्ण चिंतन कौशल और प्रभावी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए वर्चुअल प्रयोगशाला और कौशल ई–प्रयोगशाला की स्थापना।

स्वास्थ्य

- राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य इकोसिस्टम के लिए खुला मंच शुरू किया जाएगा।

सभी के लिए आवास

- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत वर्ष 2022–23 में 80 लाख घरों को पूरा करने के लिए 48 हजार करोड़ रुपये आवंटित किए गए।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए प्रधानमंत्री की विकास पहल

- पूर्वोत्तर में बुनियादी ढांचे एवं सामाजिक विकास परियोजनाओं और वित्त पोषण के लिए नई योजना पीएम–डीईवीआईएनई शुरू की गई।
- इस योजना के तहत युवा और महिलाओं को आजीविका गतिविधियों में समर्थ बनाने के लिए 1500 करोड़ रुपये का शुरूआती आवंटन।

जीवंत ग्राम कार्यक्रम

- उत्तर सीमा पर छिटपुट आबादी, सीमित सम्पर्क और बुनियादी ढांचे वाले सीमावर्ती गांवों के विकास के लिए जीवंत ग्राम कार्यक्रम।

ई–पासपोर्ट

- इम्बेडेड चिप और भावी प्रौद्योगिकी वाले ई–पासपोर्ट शुरू किए जाएंगे।

शहरी नियोजन

- भवन उपनियमों शहरी नियोजन योजना, पारगमन उन्मुखी विकास का आधुनिकीकरण लागू किया गया जाएगा।
- शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए बैट्री अदला–बदला नीति लाई जाएगी।

भूमि रिकॉर्ड प्रबंधन

- भूमि के रिकॉर्ड के आईटी आधारित प्रबंधन के लिए विशिष्ट भूमि पार्सल पहचान संख्या।

त्वरित कॉरपोरेट बहिर्गमन

- कंपनियों को तेजी से बंद करने के लिए सेन्टर फॉर प्रोसेसिंग एक्सिलरेटिड कॉरपोरेट एक्जिट (सी–पीएसी) स्थापित।

एवीजीसी संवर्द्धन कार्य बल

- इस क्षेत्र की संभावना का पता लगाने के लिए एक एनीमेशन, विजुअल प्रभाव, गेमिंग और कॉमिक (एवीजीसी) संवर्द्धन कार्य बल की स्थापना।

दूरसंचार क्षेत्र

- उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना के एक हिस्से के रूप में 5जी के लिए 2023 तक एक मजबूत इको–सिस्टम स्थापित करने के लिए डिजाइन जनहित विनिर्माण के लिए योजना।

निर्यात संवर्द्धन

- उद्यम एवं सेवा केन्द्रों के विकास में भागीदारी बनने के लिए राज्यों को समर्थ बनाने हेतु विशेष आर्थिक जोन अधिनियम को एक नए विधान से प्रतिस्थापित किया जाएगा।

रक्षा में आत्मनिर्भरता

- 2022–23 में घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित पूंजीगत खरीदारी बजट का 68 प्रतिशत निर्धारित किया गया, जो 2021 में 58 प्रतिशत के मुकाबले अधिक है।
- 25 प्रतिशत रक्षा अनुसंधान विकास बजट के साथ उद्योग स्टार्टअप्स और शिक्षा के लिए रक्षा अनुसंधान विकास खोला जाएगा।
- जांच और प्रमाणीकरण जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वतंत्र नोडल अम्ब्रेला निकाय स्थापित किया जाएगा।

सनराइज अवसर

- आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, भू–स्थानिक प्रणालियों और ड्रोन, सेमीकंडक्टर और इसके इको–सिस्टम अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था, जीनोमिक्स और फार्मास्युटिकल्स हरित ऊर्जा और स्वच्छ गतिशीलता प्रणालियों जैसे सनराइज अवसरों में अनुसंधान और विकास के लिए सरकारी योगदान उपलब्ध कराया जाएगा।

ऊर्जा पारगमन और जलवायु कार्रवाई

- वर्ष 2030 तक स्थापित सौर विद्युत का 280 गीगावॉट लक्ष्य हासिल करने के लिए उच्च दक्षता के सौर मॉड्यूल्स के निर्माण के लिए उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन के लिए 19,500 करोड़ रुपये का अतिरिक्त आवंटन।

- ताप विद्युत संयंत्रों में 5 से 7 प्रतिशत बायोमास पैलेट्स फॉयर किए जाएंगे।
- वार्षिक रूप से 38 एमएमटी कार्बनडाई ऑक्साइड की बचत।
- किसानों के लिए अतिरिक्त आय और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर।
- खेतों में पराली जलाने से रोकने में मदद मिलेगी।

  कोयला गैसीकरण करने तथा उद्योग के लिए कोयले को रसायनों में परिवर्तित करने के लिए चार पायलट परियोजनाओं की स्थापना की जाएगा।

  कृषि वानिकी अपनाने वाले अनुसूचित जाति और जनजातियों से संबंधित किसानों को वित्तीय सहायता।

सार्वजनिक पूंजीगत निवेश

- 2022–23 में निजी निवेश और मांग को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक निवेश को जारी रखना।
- वर्ष 2022–23 में पूंजीगत व्यय के लिए परिव्यय 35–4 प्रतिशत तेजी से बढ़कर 7–50 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो मौजूदा वर्ष में 5–54 लाख करोड़ रुपये था।
- वर्ष 2022–23 में परिव्यय सकल घरेलू उत्पाद का 2–9 प्रतिशत रहेगा।
- केन्द्र सरकार का प्रभावी पूंजीगत व्यय 2022–23 में 10–68 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो जीडीपी का लगभग 4–1 प्रतिशत है।

जीआईएफटी–आईएफएससी

- जीआईएफटी शहर में विश्वस्तरीय विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों को अनुमति दी जाएगी।
- अंतर्राष्ट्रीय अधिकांश क्षेत्र के तहत विवादों के समय पर निपटान के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता केन्द्र की स्थापना की जाएगी।

संसाधनों को जुटाना

- डेटा केन्द्रों और ऊर्जा भंडार प्रणालियों को बुनियादी ढांचे का दर्जा दिया जाएगा।
- उद्यम पूंजी और निजी इक्विटी ने पिछले वर्ष 5–5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया और एक सबसे बड़े स्टार्टअप और विकास इको–सिस्टम में सुविधा प्रदान की। इस निवेश को बढ़ाने के लिए उपाय किये जा रहे हैं।
- सनराइज क्षेत्रों के लिए बलेंडिंड निधियों को बढ़ावा दिया जाएगा।
- हरित बुनियादी ढांचे के लिए संसाधन जुटाने के लिए सॉवरिन ग्रीन बॉण्ड जारी किए जाएंगे।

डिजिटल रुपया

- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा डिजिटल रुपए की शुरूआत 2022–23 में की।

राज्यों को बृहद राजकोषीय स्पेस उपलब्ध कराना

- पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को वित्तीय सहायता की योजना के लिए अधिक परिव्यय।
- यह परिव्यय बजट अनुमानों में 10 हजार करोड़ रुपये था, जो वर्तमान वर्ष के लिए संशोधित अनुमानों में 15 हजार करोड़ रुपये कर दिया गया।

  अर्थव्यवस्था में समग्र प्रोत्साहन के लिए राज्यों को सहायता के लिए वर्ष 2022–23 में एक लाख करोड़ रुपये का आवंटन, 50 वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करना, जो सामान्य ऋण के अतिरिक्त है।

  2022–23 में राज्यों को जीएसडीपी के 4 प्रतिशत का वित्तीय घाटे की अनुमति होगी, जिसका 0–5 प्रतिशत विद्युत क्षेत्र सुधारों में उपयोग किया जाएगा।

राजकोषीय प्रबंधन

बजट अनुमान 2021–22	:	34–38 लाख करोड़ रुपये
संशोधित अनुमान 2021–22	:	37–70 लाख करोड़ रुपये
वर्ष 2022–23 में कुल अनुमानित व्यय	:	39–45 लाख करोड़ रुपये
वर्ष 2022–23 में उधारी के अतिरिक्त कुल प्राप्तियां	:	22–84 लाख करोड़ रुपये
चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 6–9 प्रतिशत (बजट अनुमानों में 6–8 प्रतिशत की तुलना में)		
वर्ष 2022–23 में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 6–4 प्रतिशत अनुमानित।		

एस.ए.पी. एस.डी. क्या है?

मोनिका
बाह्य साधन : वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

एस.ए.पी. एस.डी. क्या है?

एस.ए.पी. बिक्री और वितरण (एस.डी.) एस.ए.पी. ईआरपी का एक महत्वपूर्ण मॉड्यूल है जिसमें उत्पाद की बिक्री, शिपिंग, बिलिंग में आवश्यक व्यावसायिक प्रक्रियाएं शामिल हैं। मॉड्यूल को एस.ए.पी. एम.एम. और एस.ए.पी. पीपी के साथ एकीकृत किया गया है। एस.ए.पी. एस.डी. के प्रमुख उप–मॉड्यूल ग्राहक और विक्रेता मास्टर डेटा, बिक्री, वितरण, बिलिंग, मूल्य निर्धारण और क्रेडिट प्रबंधन हैं।

एस.ए.पी. एस.डी. मॉड्यूल की विशेषताएं

एस.ए.पी. एस.डी. मॉड्यूल की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं यहां दी गई हैं :

मूल्य और कराधानः यह आपको छूट या छूट जैसी विभिन्न शर्तों के तहत वस्तुओं और सेवाओं की कीमत का मूल्यांकन करने में मदद करता है, जो एक ग्राहक को दी जाती हैं।

उपलब्धता जाँचः किसी संगठन के गोदाम में उत्पाद की उपलब्धता की जाँच करता है।

बिलिंग और चालानः बिल या चालान बनाने में आपकी मदद करता है।

सामग्री निर्धारणः एक निश्चित शर्त के आधार पर सामग्री का विवरण निर्धारित करने में आपकी सहायता करता है।

क्रेडिट प्रबंधनः यह ग्राहकों की क्रेडिट सीमा के प्रबंधन की एक विधि है। इसे दो अलग–अलग तरीकों से देखा जा सकता है, साधारण क्रेडिट चेक और स्वचालित क्रेडिट चेक।

खाता निर्धारणः किसी दिए गए शर्त प्रकार के आधार पर ग्राहकों के विवरण निर्धारित करने में आपकी सहायता करता है।

एस.ए.पी. एस.डी. के प्रमुख घटक

यह संगठनों में बिक्री और ग्राहक वितरण डेटा और प्रक्रियाओं के बेहतर प्रबंधन में मदद करता है।

एस.ए.पी. बिक्री और वितरण मॉड्यूल में महत्वपूर्ण घटक हैं:

- मास्टर डेटा
- बिक्री
- सामग्री की शिपिंग
- बिलिंग–संबंधी
- बिक्री सहायता
- उत्पादों का परिवहन
- विदेश व्यापार

एस.ए.पी.–एस.डी.–एम.डी. (मास्टर डेटा)

एस.ए.पी.–एस.डी. में मास्टर डेटा होता है, जो आपको डेटा के भीतर प्रत्येक लेनदेन को ट्रैक करने में मदद करता है। एस.डी. मास्टर डेटा में ग्राहक और सामग्री डेटा, और क्रेडिट प्रबंधन दोनों शामिल हैं। इस मॉड्यूल में ऑर्डर और नकदी की प्रक्रियाएं शामिल हैं।

मास्टर डेटा के कार्य

बिक्री और वितरण मॉड्यूल में मास्टर डेटा सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। एस.डी. में मास्टर्स के दो स्तर होते हैं।

1. ग्राहक मास्टर
2. सामग्री मास्टर

मूल्य निर्धारण शर्तें

एस.ए.पी.–एस.डी.–एस.एल.एस. (बिक्री):

एस.ए.पी.–एस.डी. बिक्री आपको होने वाली प्रत्येक बिक्री के सूक्ष्म विवरणों को संभालने में मदद करती है। उत्पाद को रिकॉर्ड करने से लेकर ग्राहक के विवरण, मूल्य निर्धारण, प्रतिक्रिया तक, सब कुछ इस मॉड्यूल का उपयोग करके ट्रैक किया जाता है।

बिक्री मॉड्यूल के कार्य

पूछताछ और उद्धरण

- विक्रय आदेश
- प्रेषण
- निर्धारण समझौते
- रश ऑर्डर और बैक ऑर्डर
- क्रेडिट और डेबिट मेमो अनुरोध

एस.ए.पी.–एस.डी.–बीआईएल (बिलिंग मॉड्यूल):

बिलिंग बिक्री और वितरण प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। उपभोक्ताओं को ऑनलाइन मीडिया या कैश ऑन डिलीवरी के माध्यम से भुगतान करने का विकल्प दिया जाता है। यह विशिष्ट मॉड्यूल सभी बिलिंग डेटा का उचित तरीके से ट्रैक रखना चाहिए।

बिलिंग मॉड्यूल के कार्य

- स्वचालित या मैन्युअल चालान निर्माण
- बिलिंग कार्यों का व्यापक सेट
- वित्त के साथ रीयल–टाइम एकीकरण
- पूरी तरह से एकीकृत और व्यापक मूल्य निर्धारण

एस.ए.पी.–एस.डी.–एस.एच.पी. (शिपिंग):

बिक्री हमेशा शिपिंग और डिलीवरी से जुड़ी होती है। एक उत्पाद को सही ढंग से भेज दिया जाना चाहिए और ग्राहक को वितरित किया जाना चाहिए।

शिपिंग के विभिन्न तरीके हैं, और यह मॉड्यूल प्रत्येक उत्पाद के लिए प्रत्येक डिलीवरी को ट्रैक करता है। शिप किए जाने से लेकर डिलीवर या वापस लौटने तक की यह पूरी प्रक्रिया इस मॉड्यूल का उपयोग करके रिकॉर्ड की जाती है।

एस.ए.पी.–एस.डी.–एस.एच.पी. के कार्य

- शिपिंग दस्तावेज़ उत्पन्न करें
- पिकिंग, पैकिंग और इन्वेंटरी प्रबंधन
- परिवहन प्रबंधन और निर्धारण
- डिलीवरी शेड्यूलिंग, रिटर्न डिलीवरी
- स्टाक ट्रान्स्फ़र

एस.ए.पी.–एस.डी.–टी.बी.ए. (परिवहन):

यह घटक शिपिंग मॉड्यूल के साथ काम करता है। चूंकि प्रत्येक उत्पाद के लिए परिवहन का तरीका अलग होता है, और यह मॉड्यूल आपको परिवहन से संबंधित सभी डेटा को ट्रैक करने में मदद करता है।

एस.ए.पी.–एस.डी.– टी.बी.ए. विशेषताएं:

यह एक लचीला और उपयोग में आसान घटक है जो आपको बिक्री और वितरण प्रसंस्करण से डेटा एकत्र करने, समेकित करने और उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

यह (एलआईएस) रसद सूचना प्रणाली के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

सैप–एस.डी.–सी.ए.एस. (बिक्री सहायता):

किसी उत्पाद को बेचने से लेकर उसे एक प्रक्रिया के लिए बनाए रखने तक, ग्राहक लगातार बिक्री टीम के साथ बातचीत करते हैं। किसी उत्पाद के लिए समर्थन प्रदान करते समय बिक्री टीम और ग्राहकों के बीच आदान–प्रदान किए गए डेटा को इस मॉड्यूल के माध्यम से रिकॉर्ड और रिपोर्ट किया जाता है।

बिक्री सहायता:

यह कर्मचारियों का समर्थन करने के लिए कार्यक्षमता प्रदान करता है, जो व्यवसाय विकास और ग्राहक सेवा संबंधी प्रक्रियाओं में शामिल है।

बिक्री समर्थन के कार्य:

- बिक्री की संभावनाएं
- संपर्क करें
- प्रतिस्पर्धी और प्रतिस्पर्धी उत्पाद
- बिक्री गतिविधियां
- सीधा विपणन

एस.ए.पी.–एस.डी.–एफ.टी.टी. (विदेश व्यापार):

यह आपको डेटा का प्रबंधन करने में मदद करता है, जो विदेशी व्यापार से संबंधित है, जिसमें आयातित और निर्यात दोनों उत्पाद शामिल हैं। यह मॉड्यूल उन उद्यमों के लिए आदर्श है जो विभिन्न महाद्वीपों में व्यापार करते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण

ओम प्रकाश साह
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

धरती के प्राणियों एवं वनस्पतियों को स्वस्थ व जीवित रहने के लिए हमारे पर्यावरण का स्वच्छ रहना अति आवश्यक है, किन्तु मानव द्वारा स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रकृति का इस प्रकार से दोहन किया जा रहा है कि हमारा पर्यावरण दूषित हो चला है और आज पर्यावरण प्रदूषण भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की एक गम्भीर समस्या बन गई है। इस समस्या से निपटाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। हमारी प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गाँधी ने कहा था–''यह बड़े दुःख की बात है कि एक के बाद दूसरे देश में विकास का तात्पर्य प्रकृति का विनाश समझा जाने लगा है। जनता को अच्छी विरासत से दूर किए बिना और प्रकृति के सौन्दर्य, ताजगी व शुद्धता को नष्ट किए बिना ही मानव जीवन में सुधार किया जाना चाहिए।''

पर्यावरण में सन्दूषकों (अपशिष्ट पदार्थो) का इस अनुपात में मिलना, जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है, प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण के कई रूप हैं–जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण इत्यादि। जल में अपशिष्ट पदार्थो का मिलना–जल प्रदूषण, वायु में विशैली गैसों का मिलना–वायु प्रदूषण, भूमि में रासायनिक अपशिष्टों का मिलना–भूमि या मिट्टी प्रदूषण एवं वातावरण में अत्यधिक शोर का होना–ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। इन प्रदूषणों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रदूषण भी हैं, जैसे–प्रकाश प्रदूषण, रासायनिक प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण आदि।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण प्रदूषण से एक ओर तो हमारा वातावरण प्रदूषित हो रहा है एवं दूसरी ओर इसके कारण अन्य जटिल समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तुओं और पेड़–पौधों से परिपूर्ण सौरमंडल के ग्रह पृथ्वी के वातावरण में 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन तथा 3% कार्बन डाइ–ऑक्साइड सम्मिलित हैं। इन गैसों का पृथ्वी पर समुचित मात्रा में होना जीवन के लिए अनिवार्य है, किन्तु जब इन गैसों का आनुपातिक संतुलन बिगड़ जाता है, तो जीवन के लिए प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। विश्व में आई औद्योगिक क्रान्ति के बाद से ही प्राकृतिक संसाधनों का दोहन शुरू हो गया था, जो उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में अपने चरम पर रहा, कुपरिणामस्वरूप पृथ्वी पर गैसों का आनुपातिक संतुलन बिगड़ गया, जिससे विश्व की जलवायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा एवं प्रदूषण का स्तर इतना अधिक बढ़ गया कि यह अनेक जानलेवा बीमारियों का कारक बन गया।

आज मानव गतिविधियों के दुष्परिणामस्वरूप हमारे वातावरण में प्रत्येक 30 अरब टन कार्बन डाइ–ऑक्साइड गैस छोड़ी जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में प्रत्येक वर्ष लगभग 13 लाख लोग केवल शहरी आउटडोर वायु प्रदूषण के कारण और लगभग 2 लाख लोग इनडोर प्रदूषण के कारण अपनी जान गंवा देते हैं। वर्ष 2014 के अंत में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रतिवर्ष वायु प्रदूषण से जुड़ी लगभग एक लाख मौतें भारत सहित अमेरिका, ब्राजील, चीन, यूरोपीय संघ और मैक्सिको में होती हैं, किन्तु परिवहन, इमारत एवं औद्योगिक क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता के उपाय कर वर्ष 2030 तक वार्षिक स्तर पर इनसे बचा जा सकता है।

प्रदूषण के कई कारण हैं– उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक अपशिष्ट पदार्थ जल एवं भूमि प्रदूषण का तो कारण बनते ही हैं, साथ ही इनके कारण वातावरण में विशैली गैसों के मिलने से वायु भी प्रदूषित होती है। मनुष्य ने अपने लाभ के लिए जंगलों की तेजी से कटाई की है। जंगल के पेड़ प्राकृतिक रूप से प्रदूषण नियंत्रण का काम करते हैं। पेड़ों के पर्याप्त संख्या में न होने के कारण भी वातावरण में विशैली गैसें जमा होती रहती हैं और उनका शोधन नहीं हो पाता। मनुष्य सामानों को ढोने के लिए पॉलिथीनों का प्रयोग करता है। प्रयोग के बाद इन पॉलिथीन को यूँ ही फेंक दिया जाता है। ये पॉलिथीनें नालियों को अवरूद्ध कर देती हैं, जिसके फलस्वरूप पानी एक जगह जमा होकर प्रदूषित होता रहता है। इसके अतिरिक्त, ये पॉलिथीनें भूमि में मिलकर उसकी उर्वराशक्ति को भी कम कर देती हैं। प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ ही मनुष्य की मशीनों पर निर्भरता बढ़ी है। मोटर, रेल, घरेलू मशीनें इसके उदाहरण हैं।

इन मशीनों से निकलने वाला धुआँ भी पर्यावरण के प्रदूषण के प्रमुख कारकों में से एक है। बढ़ती जनसंख्या को भोजन

उपलब्ध करवाने के लिए खेतों में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में वृद्धि हुई है। इसके कारण भूमि की उर्वराशक्ति का ह्रास हुआ है। रासायनिक एवं चमड़े के उद्योगों के अपशिष्टों को नदियों में बहा दिया जाता है। इस कारण जल प्रदूषित हो जाता है एवं नदियों में रहने वाले जन्तुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परमाणु शक्ति उत्पादन के क्रम में परमाणु विखंडन के कारण भी पर्यावरण प्रदूषण काफी बढ़ता है। विश्व के महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने इसकी जगह परमाणु संलयन को विकल्प बताते हुए कहा है–''हम एक व्यावहारिक शक्ति स्रोत बनने हेतु परमाणु संलयन चाहते हैं। यह प्रदूषण या ग्लोबल वार्मिंग के बिना ऊर्जा की बड़ी आपूर्ति प्रदान करेगा।''

पर्यावरण प्रदूषण के कई दुष्परिणाम सामने आए हैं, इसका सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ा है। आज मनुष्य का शरीर अनेक बीमारीयों का घर बनता जा रहा है। खेतों में रासायनिक उर्वरकों के माध्यम से उत्पादित खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से सही नहीं हैं। वातावरण में घुली विशैली गैसों एवं धुएँ के कारण शहरों में मनुष्य का साँस लेना भी दूभर हो जाता है। विश्व की जलवायु में तेजी से हो रहे परिवर्तन का कारण भी पर्यावरणीय असंतुलन एवं प्रदूषण ही है।

मनुष्य स्वाभाविक रूप से प्रकृति पर निर्भर है। प्राकृति पर उसकी निर्भरता तो समाप्त नहीं की जा सकती, किन्तु प्राकृतिक संसाधानों का उपयोग करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि इसका प्रतिकूल प्रभाव पर्यावरण पर न पड़ने पाए, इसके लिए हमें उद्योगों की संख्या के अनुपात में बड़ी संख्या में पेड़ों को लगाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए हमें जनसंख्या को स्थिर बनाए रखने की भी आवश्यकता है, क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि होने से स्वाभाविक रूप से जीवन के लिए अधिक प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयास में बड़े स्तर पर उद्योगों की स्थापना होती है और कहीं–न–कहीं प्रदूषण का कारक भी बनते हैं।

यदि हम चाहते हैं कि प्रदूषण कम हो एवं पर्यावरण की सुरक्षा के साथ–साथ संतुलित विकास भी हो, तो इसके लिए हमें नवीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा तब ही सम्भव है, जब हम इनका उपयुक्त प्रयोग करें। हमारे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा है–''हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के माध्यम से पानी, ऊर्जा, निवास स्थान, कचरा प्रबंधन और पर्यावरण के क्षेत्रों में पृथ्वी द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए काम करना चाहिए।''

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए समय–समय पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास भी किए जाते रहे हैं। ओजोन परत के संरक्षण के लिए वर्ष 1985 में वियना सम्मेलन हुआ। वियना समझौते के परिणामस्वरूप वर्ष 1987 में ओजोन परत में छेद करने वाले पदार्थ पर मॉण्ट्रियल समझौता हुआ। इसके बाद वर्ष 1990 में जापान में क्योटो प्रोटोकॉल में तय किया गया कि विकसित देश पृथ्वी के बढ़ते तापमान से दुनिया को बचाने के लिए अपने यहाँ ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाएँगे। प्रदूषण को कम करने तथा विश्वस्तरीय ग्लोबल वार्मिग एवं जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया को नियंत्रित करने के लिए कार्बन क्रेडिट का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है तथा इसको नियमित रूप से नियंत्रित करने के लिए एक स्वच्छ विकास प्रणाली का गठन किया गया है।

नवंबर, 2007 में संपन्न आसियान के 13वें शिखर सम्मेलन में ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन तथा सतत विकास को विचारणीय विषय बनाया गया। इंडोनेशिया के बाली में वर्ष 2007 में ही संपन्न संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में 180 देशों एवं अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में क्योटो संधि के आगे की रणनीति पर विचार किया गया। दिसंबर, 2009 में सम्पन्न कोपेनहेगन सम्मेलन का उद्देश्य भी पर्यावरण की सुरक्षा ही था।

वस्तुतः पर्यावरण प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है, जिससे निपटना वैश्विक स्तर पर ही संभव है, किन्तु इसके लिए प्रयास स्थानीय स्तर पर भी किए जाने चाहिए। विकास एवं पर्यावरण एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं अपितु एक–दूसरे के पूरक हैं। संतुलित एवं शुद्ध पर्यावरण के बिना मानव का जीवन कष्टमय हो जाएगा। हमारा अस्तित्व एवं जीवन की गुणवत्ता एक स्वस्थ प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर है। विकास हमारे लिए आवश्यक है और इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग किया जाना भी आवश्यक, किन्तु ऐसा करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि इससे पर्यावरण को किसी प्रकार का नुकसान न हो।

पृथ्वी के बढ़ते तापक्रम को नियंत्रित कर, जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए देशी तकनीकों से बने उत्पादों का उत्पादन तथा उपभेग जरूरी है। इसके साथ ही प्रदूषण को कम करने के लिए सामाजिक तथा कृषि वानिकी के माध्यम से अधिक–से अधिक पेड़ लगाए जाने की भी आवश्यता है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को दूर करने के सम्बन्ध में अमेरिकी नागरिक सूसन किसकिस की कही ये बातें अनुकरणीय हैं–''हम चाहे कहीं भी रहें पर्यावरण की देखभाल करना हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छोटे स्तर पर काम शुरू करें। दस या बीस मित्रों के साथ पृथ्वी दिवस मनाएँ। अगले वर्ष यह बहुत बड़ा समूह हो जाएगा और उसके बाद यह जागरूकता विश्वभर में फैल जाएगी।''

सतत विकास

कृष्णलाल
सहायक अधिकारी (तकनीकी), निगमित कार्यालय

विश्व के सभी देशों में आज विकास के पथपर एक–दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ सी मची है और इसके लिए औद्योगीकरण से लेकर प्राकृतिक संसाधानों के दोहन तक के हर सम्भव उपाय किए जा रहे हैं। विकास की इस होड़ में हम यह भूल गए हैं कि हम इसे किस मूल्य पर हासिल करना चाहते हैं। इसमें दो राय नहीं है कि विकास के लिए हम पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर हैं, क्योंकि इसके लिए आवश्यक तेल से लेकर कोयला एवं जल भी हमें प्रकृति से ही प्राप्त होता है और ये सभी प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर सीमित मात्रा में विद्यमान हैं।

जिस तरह से विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है, उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्ष 2030 तक यह बढ़कर 8 अरब से भी अधिक हो जाएगी ओर जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है, उसका दुष्परिणाम यह होगा कि आने वाली मानव पीढ़ियों के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन के अनुप्रयोग के माध्यम से पानी, ऊर्जा, निवास स्थान, कचरा प्रबन्धन एवं पर्यावरण के क्षेत्रों में पृथ्वी द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए कार्य करना होगा।''

अर्थशास्त्रियों, पर्यावरणविदों एवं वैज्ञानिकों ने इस समस्या का हल यह बताया है कि हम अपने विकास के लिए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय इस बात का भी ध्यान रखें कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी ये संसाधन बचे रहें। भावी पीढ़ी के लिए संसाधानों के बचाव के मद्देनजर ही सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेण्ट) की अवधारणा का विकास हुआ। हमारे रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर श्री रघुराम राजन का कहना है– ''हमें यह निश्चित करके चलना चाहिए कि पूरे विश्व में वृद्धि के वास्तविक एवं सतत स्रोत हों।''

सतत विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों को उपयोग करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं में भी कटौती न हो। यही कारण है कि सतत विकास अपने शाब्दिक अर्थ के अनुरूप निरन्तर चलता रहता है। सतत विकास में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पर्यावरण भी सुरक्षित रहे। हमारे पूर्ण प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का कहना था कि ''हमें देश के संसाधनों का प्रयोग मानवता के लाभ के लिए करना चाहिए।''

सतत विकास की आवश्यकता निम्नलिखित बातों से स्पष्ट हो जाती हैः–

- औद्योगीकरण के कारण वैश्विक स्तर पर तापमान में वृद्धि हुई है, फलस्वरूप विश्व की जलवायु में प्रतिकूल परिवर्तन हुआ है, साथ ही समुद्र का जल स्तर बढ़ जाने के कारण आने वाले वर्षो में कई देशों एवं शहरों के समुद्र में जल मग्न हो जाने की आशंका है।
- जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है यदि इन्हें नियंत्रित नहीं किया गया, तो परिणाम अत्यंत भयंकर होंगे।
- इनवायरन्मेण्टल डाटा सर्विसेज की रिपोर्ट के अनुसार, लोगों एवं राष्ट्रों की सुरक्षा, भोजन, ऊर्जा, पानी एवं जल वायु, इन चार स्तम्भों पर निर्भर है। ये चारों एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं और ये सभी खतरे की सीमा को पार करने की कागार पर हैं।
- अपने आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए मानव विश्व के संसाधनों का इतनी तीव्रता से दोहन कर रहा है कि पृथ्वी की जीवन को पोषित करने की क्षमता तेजी से कम हो रही है।
- वर्ष 2030 तक विश्व की जनसंख्या के 8.3 अरब से अधिक हो जाने का अनुमान है, जिसके कारण उस समय भोजन एवं ऊर्जा की माँग 50% अधिक तथा स्वच्छ जल की माँग 30% अधिक हो जाएगी। भोजन, ऊर्जा एवं जल की इस बढ़ी हुई माँग के फलस्वरूप उत्पन्न संकट के दुष्परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

कोविड–19 : एक सामान्य दृष्टिकोण

संदर्भः– विश्व स्वास्थ्य संगठन

डॉ0 प्रिन्स सी जे

चिकित्सा अधिकारी, उद्योगमंडल यूनिट

वर्ष 1961 में इंग्लैन्ड के एपसम इलाके से एक अंग्रेज़ बालक को कोमन कोल्ड के लक्षण सहित अस्पताल लाया गया। प्रयोगशाला में पैथोजेनिकल परीक्षण के लिए सैंपल लिया और वास्तव में बी–814 के रूप में उसे पहचाना गया, इसके चार वर्ष बाद 1965 में इसे "नोवल कोरोना वायरस" का नाम दिया तथा इसके विशेष प्रोटीन प्रोजक्शन स्पॉकस सहित रूपांतरित को 'सोलार कोरोना' नाम दिया गया।

इसी तरह के वायरस सूअर, बिल्ली, कृन्तकों, गायों, घोड़ों, ऊंट, व्हेल, पक्षियों और चमगादड़ों में पाया जाता है। इतिहास में लगभग 293 मिलियन वर्ष पहले सभी कोरोना वायरस एक सामान्य पूर्वज से उत्पन्न हुए थे। कोरोना वायरस की जेनेटिक प्रजातियां जानवर से मानव में गुजरती है, जैसे गंभीर सिंड्रोम से संबंधित कोरोना वायरस (सार्स–कोव) और मिडिल ईस्ट गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम संबंधित कोरोना वायरस (मेर्स–कोव) और सिवियर अक्यूट रसपिरेटरी सिन्ड्रोम संबंधी वायरस (सार्स–कोव 2) वर्तमान कोविड–19 महामारी के प्रेरक एजेंट हैं।

सार्स–कोव 2 से पहला ज्ञात संक्रमण चीन के वुहान में पाया गया। हालांकि मानव के लिए मूल संचरण अभी भी अनिश्चित है, चीन ने आधिकारिक तौर पर 31 दिसंबर 2019 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) को सूचित किया। डब्ल्यू.एच.ओ. को चीन के वुहान शहर में अज्ञात कारण के निमोनिया के मामलों के बारे में सूचित किया गया था। 7 जनवरी 2020 को एक नए कोरोना वायरस को चीनी अधिकारियों द्वारा इसके कारण के रूप में पहचाना गया और अस्थायी तौर पर इसे '2019 एन कोव' नामित किया गया।

कोविड–19 के लक्षण परिवर्तनशील हैं लेकिन निम्नलिखित इसमें शामिल हैंः–

- थकावट
- सूखी खाँसी
- बुखार
- शरीर में दर्द
- गंध और स्वाद की हानि
- दस्त
- त्वचा लाल होना
- सांस लेने में कठिनाई
- लाल आंख

वायरस के संपर्क में आने के एक से चौदह दिनों में लक्षण दिखने शुरू हो सकते हैं। कम से कम एक तिहाई लोग जो संक्रमित हैं उनमें कोई ध्यान देने योग्य लक्षण विकसित नहीं होते हैं। लगभग 80% में हल्के से मध्यम लक्षण विकसित होते हैं। जबकि 15% में सांस लेने में स्तब्धता, ऑक्सीजन की कमी जैसे गंभीर लक्षण तक होते हैं और लगभग 5% में गंभीर लक्षण (श्वसन विफलता, शरीर स्तब्धता, बहु–अंगों की शिथिलता) आदि होते हैं। वृद्ध जनों में गंभीर लक्षण विकसित होने की अधिकता है, जो खतरनाक होता है। कुछ लोगों को बीमारी से मुक्त होने के बाद भी लंबे समय तक कुछ समस्याओं का अनुभव होता रहता है।

कोविड–19 का संचरण तब होता है जब लोग श्वसन की बूंदों वाले वायरस के संपर्क में आते हैं और हवा में पैदा होने वाले कण एक संक्रमित व्यक्ति से बाहर निकलते हैं। ये कण सांस द्वारा अंदर लिए जाते हैं या किसी व्यक्ति के मुंह, नाक या आंखों में स्पर्श या सीधे पहुंच सकते हैं। संक्रमण का खतरा तब अधिक होता है जब लोग अधिक समय तक पास रहते हैं। दूषित स्थल या वस्तु को छूने से संक्रमण हो सकता है।

जो लोग संक्रमित हैं, वे हल्के से मध्यम लक्षण दिखने से दो दिन पहले तक और गंभीर मामलों में बीस दिनों तक वायरस को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं। अधिकांश रोगसूचक प्रकट करने वाले लोग, दो से सात दिनों के बीच लक्षणों का अनुभव करते हैं।

कोविड–19, साइनस, नाक, गले, वायु नली और फेफड़ों को प्रभावित करता है। फेफड़े सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। प्रभावित कई लोग स्नायविक प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। कुछ गैस्ट्रो आंत्र अंगों, यकृत, गुर्दे और हृदय से संबंधित प्रभाव दिखा सकते हैं। आईसीयू में शिफ्ट किए गए मरीजों में ब्ल्ड क्लोटिंग की स्थिति ज्यादा पाई गई हैं। वृद्ध जनों और आस्थमा, मधुमेह, हृदय रोग या उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करने वाली स्थितियों जैसी पहले से मौजूद चिकित्सा स्थितियों वाले लोगों में रोग के गंभीर स्तर होने का उच्च खतरनाक स्थिति होती है।

कोविड–19 का अस्थायी रूप के लक्षणों के आधार पर निदान किया जाता है और लैब टेस्ट आर.टी.पी.सी.आर. (रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन) या संक्रमित स्राव के अन्य न्यूक्लिक एसिड परीक्षण द्वारा पुष्टि की जाती है। आर. टी.पी.सी.आर. टेस्ट को कोविड–19 टेस्टिंग का गोल्ड स्टैंडर्ड माना जाता है। परिणाम मिलने में 24 से 48 घंटे का समय लगेगा। एंटीजन परीक्षण तेजी से होता है लेकिन कम सटीक होता है। पिछले संक्रमण का पता सीरोलॉजिकल परीक्षणों से संभव है जो एंटीबॉडी का पता लगाते हैं।

कोविड–19 के लिए कोई विशेष चिकित्सा या उपचार नहीं है। इसके प्रबंधन के लिए इलाज में सहायक केवल देखभाल जो लक्षणों को राहत देने के उपचार भी शामिल है, पर्याप्त पेय पदार्थ, ऑक्सीजन समर्थन, कम करने की स्थिति की जरूरत है और प्राणाधार अंगों को संभालने हेतु दवाओं या उपकरणों को उपलब्ध कराने के लिए महत्वपूर्ण कार्य निभाना है।

संक्रमण की संभावना को कम करने के लिए निवारक उपायों में स्थिति महसूस होने पर घर पर रहना, सार्वजनिक रूप से मास्क पहनना, भीड़–भाड़ वाली जगहों से बचना, दूसरों से सुरक्षित दूरी बनाए रखना, इनडोर स्थानों को हवादार करना, संभावित जोखिम अवधि को कम करना, साबुन और पानी से कम से कम 20 सेकेंड्स तक हाथ धोना है। अलकोहॉल युक्त हैन्ड रब उपयोग करना और हाथ साफ न हो तो आंखें, नाक या मुंह को न छूना।

कोविड–19 वायरस अधिक आसानी से फैलता है; जैसेः–

- भीड़–भाड़ वाली जगह।
- आपसी संपर्क विशेष रूप से जहां लोगों की भौतिक निक्टतायुक्त बातचीत होती है।
- खराब वेंटिलेशन युक्त परिसीमित एवं बंद किया स्थान पर।

अब कोविड 19 के लिए टीका उपलब्ध है। अप्रैल 2021 तक सोलह टीकों को कम से कम एक राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण द्वारा अधिकृत किया गया है। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले टीके हैंः–

एम.आर.एन.ए. वैक्सीन	*फाइजर और मॉडना*
कन्वेन्शनल इनेक्टीव वैक्सीन	*कोवैक्सिन, मनहाई–कांगताई*
वायरल वेक्टर वैक्सीन	*स्पुतनिक, एस्ट्रा सिनेका, कोविशील्ड, जॉनसन और जॉनसन*
प्रोटीन सबयूनिट वैक्सीन	*एपी वैक कोरोना*

वायरस के संपर्क में आने या सिकुड़ने से वास्तव में संक्रमण के खिलाफ प्रतिरोध की क्षमता पर्याप्त नहीं होती है। सुरक्षा और अच्छे स्वास्थ्य के लिए मास्क पहनना और अन्य सुरक्षा उपाय जारी रखना चाहिए। जिन लोगों को एमी कोविड–19 के साथ किसी के संपर्क में आया है और जिन्होंने हाल ही में व्यापक संचरण के साथ किसी देश या क्षेत्र की यात्रा की थी, उन्हें अंतिम संभावित जोखिम के समय से चौदह दिनों के लिए स्व–संगरोध की सलाह दी गई है।

इस महामारी के दौर में सब्जियों और फलों सहित स्वस्थ आहार, पर्याप्त पेय पदार्थ, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना, मनोवैज्ञानिक तनाव को प्रबंधित करना और पर्याप्त नींद लेना सभी के लिए महत्वपूर्ण है।

महिला सशक्तिकरण क्या है?

शेफाली खन्ना
विधि अधिकारी, निगमित कार्यालय

सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। किसी व्यक्ति, समुदाय या संगठन की आर्थिक, राजनीतिक, समाजिक, शैक्षिक, लैंगिक या आध्यात्मिक शक्ति में सुधार को सशक्तिकरण कहा जाता है।

आज के आधुनिक समय में आज भी नारी सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। जिस समाज में नारी का स्थान सम्मान जनक होता है, वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। जब समाज सशक्त और विकसित होता है, तब राष्ट्र भी मजबूत होता है। इस प्रकार राष्ट्र निर्माण में नारी केन्द्रीय भूमिका निभाती है।

''विकास के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण से बेहतर कोई भी उपकरण नहीं है''—*कोफी अन्नन*

लेकिन विडम्बना तो देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। राष्ट्र के विकास में महिलाओं का जागरूकता के रूप में मातृ दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं।

भारतीय नारी के साथ विरोधाभासी स्थितियां सदैव रही हैं। प्राचीन धर्म ग्रन्थों द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जहां नारी पूजनीय होती है वहां देवता निवास करते है परंतु आज भी महिलाओं को कई क्षेत्र में विकास की जरूरत है।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले उनके अधिकारों और मूल्यों को महत्व देना होगा। अपने देश में जहाँ महिलाएँ सामाजिक प्रताड़ना सहती है। लैंगिक असमानता, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, वैश्यावृति, मानव तस्करी जैसी प्रथाओं से पीड़ित हैं। वहीं अनपढ़ों की संख्या में भी महिलाएँ आगे है।

नारी सशक्तिकरण का महत्व तभी होगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी ताकि वो हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर निर्णय ले सकें। महिला सशक्तिकरण का अर्थ— एक ऐसी विचार धारा जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाने उन्हें आत्म निर्णय का अधिकार प्रदान करने एवं समाज में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का समर्थन करती है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। शिक्षा, रोजगार, आर्थिक तरक्की में बराबरी के मौके मिलें, जिससे उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता और तरक्की मिलें। इस प्रकार महिलाएँ अपने जीवन से जुडें हर फैसले स्वयं ले सकती हैं। महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है:

किसी भी समाज के विकास में दोनों पक्षों की भूमिका आवश्यक है। स्त्री पुरूषों दोनों की भगीदारी आवश्यक है परंतु प्राचीन काल से लेकर मध्य काल तक महिलाओं का सम्मान स्तर घटा ही है।

भारत की लगभग 50% आबादी महिलाओं की है जो कि अभी भी सशक्त नहीं है। ऐसे में आधी आबादी को मजबूत किए बिना हमारा देश विकसित हो पाएगा। आज के आधुनिक युग में भी कई भारतीय महिलाएँ सामान्य शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा से वंछित है। शिक्षा के मामलें में महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं। भारत में पुरूषों की शिक्षा दर 75% है, जबकि महिलाओं की शिक्षा दर मात्र 53.3% प्रतिशत है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्रों में 20% महिलाएँ तकनीकी क्षेत्र में कार्य करती है वही ग्रामीण क्षेत्रों में 74% महिलाएँ मजदूरी, कृषि से जुड़ें क्षेत्रों में दैनिक मजदूरी करती हैं। आज भी लैंगिग असमानता और पुरूष प्रधान समाज के घरेलु हिंसा यौन उत्पीड़न, महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा हैं और इन्ही बाधाओं को दूर करने के लिए महिला सशक्तिकरण की जरूरत पड़ी।

महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएँ: पुरानी और रूढ़ीवादी विचारधाराओं के कारण भारत में आज भी महिलाओं को शिक्षा या फिर रोजगार के लिए घर से बाहर जाने के लिए आज़ादी नहीं होती है। जो की भारत की सामाजिक और आर्थिक दशा को बदलने में बाधा है।

कार्यक्षेत्र में होने वाला शोषण भी एक बड़ी बाधा है। पिछले कुछ वर्षो में महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़नों के मामलों में काफी तेजी से वृद्धि हुई है, जिससे महिलाओं के वर्चस्व के लिए समस्याएँ उत्पन्न होती है।

लैंगिक स्तर पर भेदभाव पुरूष समकक्षों के अपेक्षा कम भुगतान जो कि पुरूषों और महिलाओं की असामनता को दर्शता है। कन्या भ्रूणहत्या, कामकाजी महिलाओं को देर रात तक काम ना कर पाना, असुरक्षा का डर, घरेलु हिंसाओं के साथ, दहेज, ऑनर किलिंग और तस्करी जैसे गंभीर अपराध जैसे कारणों की वजह से महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता पड़ती है।

सरकार की भूमिकाः भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने के लिए रोजगार स्वास्थ्य कृषि से संबंधित कई योजनाएँ चलाई हैं। जिससे समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। जैसेः

उज्जवला योजनाः यह योजना महिलाओं को तस्करी और यौन शोषण से बचाने के लिए शुरू की गई है। महिलाओं के पुनर्वास ओर कल्याण के लिए भी कार्य किया जाता है।

- ***बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ***
- ***सुकन्या समृद्धि योजना***
- ***लाडली***
- ***महिला शक्ति केंद्र***

वर्तमान समय में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 15(3), 16(2), 23, 39(क), 39(घ) एवं 39(5) महिला अधिकारो को विविध रूप से संरक्षण प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त 73वें और 74वें संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय निकाये में उनके लिए आरक्षण का प्रावधान भी किया गया है।

महिलाओं को समानता का अधिकार राष्ट्र निर्माण में एक अहम भूमिका निभाता है। महिलाएँ हमारी आबादी का आधा हिस्सा है। इसी वजह से राष्ट्र के विकास के महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

भारत में ऐसी महिलाओं की कमी नहीं जिन्होंने समाज में बदलाव की एक नई मिसाल एवं पहल करी। अंतिया साबरी मुस्लिम महिलाओं के लिए आवाज़ बुलंद करके तीन तलाक जैसे के लिए लड़ाई लड़ी। सुनीता कृष्णन जिन्होंने कितनी ही महिलाओं एवं लड़कियों को मानव तस्करी से बचाया और न जाने कितने ही उदाहरण हैं जो महिला सशक्तिकरण की परिभाषा को और मजबूत करते है।

उपसंहारः महिला सशक्तिकरण एक लंबी यात्रा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह प्रयासों के लायक नहीं है। यह अति आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरूद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाएं। भले ही आज महिलाएं वकील, प्रशासनिक अधिकारी, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बन चुकी हैं परंतु आज भी बहुत सी महिलाएं शिक्षा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आज़ादी से वंचित हैं। हम सभी महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी की नारी अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी है। आज की नारी अब जागृत और सक्रिय हो चुकी है। महिलाओं की असीमित क्षमता और योग्यता को ध्यान में रखते हुए जरूरी है कि इन्हे आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र के केंन्द्र में रखा जाए ताकि देश विकास के नए आयाम स्थापित कर सकें।

जीवन में पुस्तकों का मूल्य

मनोज कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (सतर्कता), निगमित कार्यालय

किताबें ज्ञान से भरी होती हैं, वे आपको जीवन का पाठ भी पढ़ाती हैं, वे आपको कठिनाइयों, प्रेम, भय और हर छोटी–छोटी चीज के बारे में सिखाती हैं जो जीवन का एक हिस्सा हैं। पुस्तकें मन की उपस्थिति और अवलोकन कौशल विकसित करने में मदद करती हैं, इस प्रकार हमारे जीवन में पुस्तकों के मूल्य पर प्रकाश डालती हैं।

किताबें यहां सदियों से हैं और इसमें हमारे अतीत, सभ्यताओं और संस्कृतियों का ज्ञान है। पुस्तकों के बारे में कुछ तथ्य जो हमें जानना आवश्यक हैं, वे इस प्रकार हैं–

- हर साल लगभग 2.2 मिलियन पुस्तकें प्रकाशित होती हैं।
- एक औसत पाठक अपने जीवनकाल में लगभग 500 पुस्तकें ही पढ़ता है।

हमारे जीवन में पुस्तकों के महत्व को दर्शाने वाले कुछ शानदार कारण, इनमें से कुछ हैं:–

1. किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती हैं।

हमारे जीवन में किताबों के महत्व को दर्शाने वाले बड़े कारणों में से एक यह है कि किताबें हमारे सबसे अच्छे दोस्त के रूप में काम करती हैं। दोस्त हमारे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक हैं। एक अच्छे दोस्त के साथ के बिना हम अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते।

इसी तरह, एक किताब एक सबसे अच्छे दोस्त की तरह होती है जो हमें हमेशा खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनने के लिए प्रेरित करती है। किताबें एक अच्छे दोस्त की तरह ज्ञान से हमारे दिमाग को बेहतर बनाती हैं।

2. किताबें आपकी कल्पना को रोशन करती हैं।

हमारे जीवन में किताबों के मूल्य को समझने का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि किताबें सबसे रचनात्मक कला रूपों में से एक हैं। हमारे द्वारा पढ़ी जाने वाली प्रत्येक पुस्तक में कई अद्‌भुत पात्रों से भरी एक अलग दुनिया में हमें स्थानांतरित करने की शक्ति है। पुस्तकें हमारी कल्पना शक्ति को बढ़ा सकती हैं और एक ऐसे द्वार के रूप में कार्य कर सकती हैं जो वास्तविक जीवन की वास्तविक दुनिया के सपनों के द्वार खोलता है।

3. किताबें आत्मविश्वास पैदा करती हैं।

हमारे जीवन में किताबों के मूल्य को देखने के लिए एक और कारण यह है कि किताबें हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करती हैं।

जब हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं, तो हमें विभिन्न पात्रों के संघर्षों और कठिनाइयों के बारे में जानने को मिलता है। कभी–कभी हम उन स्थितियों को अपने निजी जीवन से भी जोड़ लेते हैं। एक किताब के पात्रों की स्थिति को समझना और कैसे वे कठिन समय और चुनौतियों से पार पाते हैं, आपको अपनी समस्याओं से निपटने का साहस और आत्मविश्वास देते हैं।

4. किताबें आपको मानसिक और भावनात्मक रूप से बढ़ने में मदद करती हैं।

हमारे जीवन में पुस्तकों के महत्व को दर्शाने वाला एक और कारण यह है कि किताबें पढ़ने से मानसिक और शारीरिक लाभ की एक विस्तृत श्रृंखला मिलती है।

पढ़ना आपकी शब्दावली और संचार कौशल का विस्तार कर सकता है जो आपको लोगों के साथ बेहतर बातचीत करने में मदद कर सकता है।

इसके अतिरिक्त, पढ़ना आपकी याददाश्त बढ़ाने और अपना ध्यान बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका है। किताबें पढ़कर आप महसूस करते हैं।

5. पुस्तकें आपके आसपास की दुनिया को दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

कई विधाओं में कई किताबें लिखी जाती हैं जैसे कि फिक्शन, नॉन–फिक्शन, उपन्यास, ड्रामा, थ्रिलर, सस्पेंस, साइंस–फिक्शन, आदि। हर किताब अपने अनूठे दृष्टिकोण के साथ आती है।

पढ़ना हमें विभिन्न वातावरणों का विश्लेषण करने का एक फायदा देता है जो हमारे दिमाग को सतर्क रहने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तकें मन की उपस्थिति और अवलोकन कौशल विकसित करने में मदद करती हैं, इस प्रकार हमारे जीवन में पुस्तकों के मूल्य पर प्रकाश डालती हैं।

किताबों के फायदे सिर्फ हमारे निजी जीवन तक ही सीमित नहीं हैं; वे हमारे पेशेवर विकास में भी हमारी मदद कर सकते हैं। किताबों के साथ नियमित रूप से जुड़ने से हमें अपनी शब्दावली बनाने में मदद मिल सकती है और साथ ही हमें लोगों के समूहों के सामने खुद को संचालित करने का आत्मविश्वास भी मिल सकता है।

समय का सदुपयोग

कुलभूषण
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), निगमित कार्यालय

समय का महत्व हम सभी जानते हैं। समय को खोना स्वयं अपने आप को खोना है। जो व्यक्ति समय की कीमत को पहचान लेता है। वो कभी भी असफल नहीं होता परन्तु जो व्यक्ति समय को व्यर्थ के कामों में नष्ट कर देता है। समय उन्हें नष्ट करने में अधिक समय नहीं लगाता। वास्तव में समय एक बहुत ही अद्भुत चीज है जो अगर एक बार चला गया तो वापस नहीं आता इसलिए ही तो कहा भी गया है की बीता समय कभी वापस नहीं आता समय का न तो कोई आदि है और न ही कोई अंत है, इतना महत्व हैं तो जीवन में इसका सदुपयोग करने में ही समझदारी है।

समय में बहुत शक्ति छिपी होती है। यह पल में राजा को रंक और रंक को राजा बना सकती है। समय धन से भी अधिक कीमती है, इसलिए इसे सोच समझकर खर्च करना ही समझदारी है। हमारा जीवन क्षण–भंगुर है जिसमें समय कम और काम अधिक है इसलिए हमे अपने जीवन का एक भी मिनट बर्बाद नहीं करना चाहिए। यहां तक की हर सांस, हर सेकेंड का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

हमें विद्यालय संबंधी कार्य, गृहकार्य, आराम करने का समय, मनोरंजन, व्यायाम इन सभी कार्यों को सही ढंग से योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए। कुछ ही क्षणों में परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। कहा भी जाता हैं कि समय और मौत किसी का इंतजार नहीं करते। अतः जो समय का दुरूपयोग करते हैं, वे अपने जीवन को नष्ट कर बैठते हैं।

जो व्यक्ति समय के महत्व को समझ जाते हैं। वे ना तो भाग्य का सहारा लेते हैं और ना ही किसी और का मुँह ताकते हैं। उनके ही वो सार्थक है, जो उन्हें सफलता की ओर ले जाता हैं। समय की गति बड़ी विचित्र होती है। व्यापार में खोया धन और अस्वस्थता से खोई शक्ति को तो फिर से प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु नष्ट हुआ समय कभी वापस नहीं आ सकता। समय सफलता की कुंजी है। जो इसके महत्व को पहचानते हैं, वे ही समाज में अपना नाम शिखर तक पहुंचा सकते हैं।

समय का सदुपयोग करने पर मनुष्य संतुष्ट और सुखी रहता है। चुस्ती से एक घंटे में जितना काम कर सकते हैं, सुस्ती से एक दिन में भी उतना काम नहीं किया जा सकता है। कई युद्ध समय के पालन के कारण ही जीते गए हैं।

समय एक अमूल्य धन है। घड़ी की टिक–टिक हमें सदा जागृत करती रहती है। घड़ी की सुईयाँ हमें बताती रहती हैं कि जीवन का यह क्षण भी गया। हमें चाहिए कि आज विज्ञान के युग में रुपये–पैसे की भाँति समय का भी हिसाब–किताब रखें। अमूल्य जीवन के समय को कौड़ियों के भाव ना लुटने दें। समय का सदुपयोग कभी निष्फल नहीं जाता इसलिए इसका सही और भरपूर इस्तेमाल करें।

मेरा डाकिया चाचा

रूचि बिष्ट
अधिकारी (राजभाषा), बठिंडा यूनिट

"अब सुंदर लेखनी, उन्हे परोसने वाले पत्र
उन्हे पोस्ट करने वाले लोग
अपने में समेटने वाले लेटर वाक्य और उन्हे ले जाने वाले डाकिया अब गायब हो रहे हैं,
सुनहरी यादें सिमट रही हैं
हम बात कर रहे है लाल डिब्बे
जिन्हें हम लेटर बॉक्स कहते है"

जैसे कल ही की बात है दिवाली की सफाई करते हुए हमें बहुत पुरानी चिट्ठी मिली, मुझे वो पुराने कागजों की महक बहुत पसंद है। जैसे पहली बारिश की बूंदे मिट्टी पर पड़ती है, ठीक वैसे ही! हाँ तो बात हो रही है चिट्ठी की पुराना मैला हुआ हरा पोस्ट कार्ड। उसके मिलते ही हम शायद उसे फाड़ देते पर माँ ने मना करा फाड़ना नहीं है। एक बार देखो तो कहीं नानाजी का तो नहीं है, हम संभले और चिट्ठी को हाथ में लिया, माँ की नजर अब कमज़ोर हो गई है इसलिए वो पढ़ नहीं पाती है तो पत्र हमने पढ़ा। उस पत्र को जब माँ ने आज सुना तो लगा जैसे चालीस साल पुरानी नहीं कल की ही बात है। मेरे मात–पिताजी के विवाह को चालीस साल हो गए हैं और ये पत्र उनके विवाह के बाद पहला पत्र था जो मेरे नानाजी ने माँ के लिए भेजा था।

मेरी माँ की उस पत्र के लिए भावना आज भी वैसी ही है जैसी चालीस साल पहले रही होगी। नम आंखों के साथ माँ एक एकाएक सोचने लगी, जिससे मुझे पता चला की एक पत्र की एहमियत कैसी होती है बेटी के लिए।

तकनीकी विकास और संचार क्रांति ने हमें दुनिया में पहचान दिला दी है। हमारा देश सबसे अधिक इंटरनेट, मोबाइल का प्रयोग करने वाला देश है। सभी चीजों में आगे निकल रहा है पर एहसासों और भावनाओं में पीछे होता जा रहा है ।

एक समय था जब हम पोस्टमेन को डाकिया न कहकर डाकिया चाचा बोलते थे, घर की सारी कहानी, गाँव का हाल वो अपने साथ लाते थे, पर अब मोबाइल और भिन्न–भिन्न साधनों की वजह से ये सब खत्म हो गया है। हम बातें तो करते हैं पर जज़्बात नहीं समझते, हम शक्ल तो देख पाते हैं पर भाव नहीं जान पाते। कहीं बस काम के लिए रिश्ते हैं और कहीं काम से ही रिश्ते हैं।

विकास के क्षेत्र में लोग आपसी प्रेम को भूल गए हैं। बस पैसों से रिश्तों की तुलना हो रही है जहां पहले एक घर में बीमारी की ख़बर सुनकर पूरा मोहल्ला देख–रेख में लग जाता था। वहीं अब घर के लोग बस डॉक्टर और हॉस्पिटल में ले जाना ही अपना फर्ज और ज़िम्मेदारी समझते हैं।

पहले जहां एक पत्र को पढ़कर आँखें नम हो जाती थीं और साथ खड़े डाकिया चाचा भी रुआंसे हो जाते थे, उस पत्र को जब–जब पढ़ते थे, तब भावुक हो जाते थे। आज ये सब खत्म होता जा रहा है ।

लिखना–लिखाना, पढ़ना–पढ़ाना होता था,
उन दिनों डाकिये से भी याराना होता था।
अब न वो पता है और न खत है कोई,
हर लफ़्ज कितना जाना पहचाना होता था।

साधु और खजूर

उमा त्रिपाठी
बाह्य साधनः सहायक (लेखा), निगमित कार्यालय

एक दिन की बात है एक साधु गाँव के बाहर वन में स्थित अपनी कुटिया की ओर जा रहा था। रास्ते में बाजार पड़ा, बाजार से गुजरते हुए साधु की दृष्टि एक दुकान में रखी ढेर सारी टोकरियों पर पड़ी। उसमें खजूर रखे हुए थे।

खजूर देखकर साधु का मन ललचा गया। उसके मन में खजूर खाने की इच्छा जाग उठी। किन्तु उस समय उसके पास पैसे नहीं थे। उसने अपनी इच्छा पर नियंत्रण रखा और कुटिया चला आया।

कुटिया पहुँचने के बाद भी खजूर का विचार साधु के मन से नहीं निकल पाया। वह उसी के बारे में ही सोचता रहा। रात में वह ठीक से सो भी नहीं पाया। अगली सुबह जब वह जागा, तो खजूर खाने की अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए पैसे की व्यवस्था करने के बारे में सोचने लगा।

सूखी लकड़ियाँ बेचकर खजूर खरीदने लायक पैसों की व्यवस्था अवश्य हो जाएगी। यह सोचकर वह जंगल में गया और सूखी लकड़ियाँ बीनने लगा। काफी लकड़ियाँ एकत्रित कर लेने के बाद उसने उसका गट्ठर बनाया और उसे अपने कंधे पर लादकर बाजार की ओर चल पड़ा।

लकड़ियों का गट्ठर भारी था। जिसे उठाकर बाजार तक की दूरी तय करना आसान नहीं था। किन्तु साधु चलता गया। थोड़ी देर में उसके कंधे में दर्द होने लगा, इसलिए विश्राम करने वह एक स्थान पर रूक गया। थोड़ी देर विश्राम कर वह पुनः लकड़ियाँ उठाकर चलने लगा। इसी तरह रुक–रुक कर किसी तरह लकड़ियों के गट्ठर के साथ बाजार पहुँचा।

बाजार में उसने सारी लकड़ियाँ बेच दी। अब उसके पास इतने पैसे इकट्ठे हो गए, जिससे वह खजूर खरीद सके। वह बहुत प्रसन्न हुआ और खजूर की दुकान में पहुँचा सारे पैसों से उसने खजूर खरीद लिए और वापस अपनी कुटिया की ओर चल पड़ा।

कुटिया की ओर जाते–जाते उसके मन में विचार आया कि आज मुझे खजूर खाने की इच्छा हुई, हो सकता है कल किसी और वस्तु की इच्छा हो जाए। कभी नए वस्त्रों की इच्छा जाग जाएगी, तो कभी अच्छे घर की, कभी स्त्री और बच्चों की, तो कभी धन की। मैं तो साधु व्यक्ति हूँ इस तरह से तो मैं इच्छाओं का दास बन जाऊंगा।

यह विचार आते ही साधु ने खजूर खाने का विचार त्याग दिया। उस समय उसके पास से एक गरीब व्यक्ति गुजर रहा था। साधु ने बुलाया और सारे खजूर उसे दे दिए। इस तरह उसने स्वयं को इच्छाओं का दास बनने से बचा लिया।

सीख

यदि हम अपनी हर इच्छाओं के आगे हार जाएंगे, तो सदा के लिए अपनी इच्छाओं के दास बन जाएंगे। मन चंचल होता है उसमें रह–रहकर इच्छाऐं उत्पन्न होती रहती हैं, जो उचित भी हो सकती हैं और अनुचित भी। ऐसे में इच्छाओं पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। सोच–विचार कर इच्छाओं के आंकलन के उपरांत ही उनकी पूर्ति के लिए कदम बढ़ाना चाहिए। तभी जीवन में सफलता प्राप्त होगी। हमें इच्छाओं का दास नहीं बनाना है, अपितु इच्छाओं को अपना दास बनाना है।

सौ ऊँट

शिवा सागर
वरिष्ठ प्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा
धर्मपत्नी श्री सी. आर. सागर
उप प्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

राजस्थान के एक गाँव में रहने वाला एक व्यक्ति हमेशा किसी ना किसी समस्या से परेशान रहता था और इस कारण अपने जीवन से बहुत दुःखी था।

एक दिन उसे कहीं से जानकारी प्राप्त हुई कि एक गाँव में एक बाबा पधारे हैं। उसने तय किया कि वह बाबा से मिलेगा और अपने जीवन की समस्याओं के समाधान का उपाय पूछेगा।

शाम को वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ बाबा रूके हुए थे। कुछ समय प्रतीक्षा करने के उपरांत उसे बाबा से मिलने का अवसर प्राप्त हो गया। वह उन्हें प्रणाम कर बोला, ''बाबा मैं अपने जीवन में एक के बाद एक आ रही समस्याओं से बहुत परेशान हूँ। एक से छुटकारा मिलता नहीं कि दूसरी सामने खड़ी हो जाती है। घर की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या और न जाने कितनी ही समस्याएं हैं। ऐसा लगता है कि मेरा पूरा जीवन समस्याओं से घिरा हुआ हैं। कृपा करके कुछ ऐसा उपाय बतायें कि मेरे जीवन की सारी समस्याएं खत्म हो जाएं और मैं शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन जी सकूं''।

उसकी पूरी बात सुनने के बाद बाबा मुस्कुराये और बोले,''बेटा! मैं तुम्हारी समस्या समझ गया हूँ। उन्हें हल करने के उपाय मैं तुम्हें कल बताऊंगा। इस बीच तुम मेरा एक छोटा सा काम कर दो।''

व्यक्ति तैयार हो गया।

बाबा बोले,''बेटा, मेरे काफिले में 100 ऊँट हैं। मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम उनकी रखवाली करो। जब सभी 100 ऊँट बैठ जाएं, तब तुम सो जाना,''

यह कहकर बाबा अपने तंबू में सोने चले गए। व्यक्ति ऊँटों की देखभाल करने चला गया। अगली सुबह बाबा ने उसे बुलाकर पूछा,''बेटा! तुम्हें रात को नींद तो अच्छी आई ना?''

''कहाँ बाबा ? पूरी रात मैं एक पल के लिए भी सो न सका। मैंने बहुत प्रयास किया कि सभी ऊँट एक साथ बैठ जायें, ताकि मैं चैन से सो सकूं किन्तु मेरा प्रयास सफल न हो सका। कुछ ऊँट तो स्वतः बैठ गए। कुछ मेरे बहुत प्रयास करने पर भी नहीं बैठे। कुछ बैठ भी गए, तो दूसरे उठ खड़े हुए। इस तरह पूरी रात बीत गई,''व्यक्ति ने उत्तर दिया

बाबा मुस्कुराये और बोले, ''यदि मैं गलत नहीं हूँ, तो तुम्हारे साथ कल रात यह हुआः–

1. कई ऊँट खुद–ब–खुद बैठ गए।
2. कईयों को तुमने अपने प्रयासों से बैठाया।
3. कई तुम्हारे बहुत प्रयासों के बाद भी नहीं बैठे बाद में तुमने देखा कि उनमें से कुछ अपने आप ही बैठ गए।''

''बिल्कुल ऐसा ही हुआ बाबा'' व्यक्ति तत्परता से बोला।

तब बाबा ने उसे समझाते हुए कहा, ''क्या तुम समझ पाए कि जीवन की समस्यायें इसी तरह हैंः

1. कुछ समस्याएं अपने आप ही हल हो जाती हैं।
2. कुछ प्रयास करने के बाद हल होती हैं।
3. कुछ प्रयास करने के बाद भी हल नहीं होती। उन समस्याओं को समय पर छोड़ दो। सही समय आने पर वे अपने आप ही हल हो जाएंगी।

कल रात तुमने अनुभव किया होगा कि चाहे तुम कितना भी प्रयास क्यों न कर लो? तुम एक साथ सारे ऊँटों को नहीं बैठा सकते। तुम एक को बैठाते हो, तो दूसरा खड़ा हो जाता है। दूसरे को बैठाते हो तो तीसरा खड़ा हो जाता है। जीवन की समस्याऐं इन ऊँटों की तरह ही हैं। एक समस्या हल होती नहीं कि दूसरी खड़ी हो जाती है। समस्याएं जीवन का हिस्सा है और हमेशा रहेंगी कभी ये कम हैं, तो कभी ज्यादा। बदलाव तुम्हें स्वयं में लाना है और हर समय इनमें उलझे रहने के स्थान पर इन्हें एक तरफ रखकर जीवन में आगे बढ़ना है।''

व्यक्ति को बाबा की बात समझ में आ गई और उसने निश्चय किया कि आगे से वह कभी अपनी समस्याओं को खुद पर हावी होने नहीं देगा चाहे सुख हो या दुःख जीवन में आगे बढ़ता चला जाएगा।

जीवन दर्शन

मैयूर खैराना
कनिष्ठ सहायक (मा.सं.एवं प्र.), रसायनी यूनिट

जीवन दर्शन लेना है तो, आनंद के लिए संगीत, खाने के लिए गम, पीने के लिए क्रोध, निगलने के लिए अपमान, व्यवहार के लिए नीति, लेने के लिए ज्ञान, देने के लिए दान, जीतने के लिए प्रेम, धारण के लिए धैर्य, तृप्ति के लिए संतोष, त्यागने के लिए लोभ, करने के लिए सेवा, प्राप्त करने के लिए यश, फेंकने के लिए ईर्ष्या, छोड़ने के लिए मोह, रखने के लिए इज्जत, करने के लिए सत्य, इन तत्व का आधार लेना होगा।

जीवन दर्शन जिन्होंने लिया है वे कहा करते हैं, ठोकरे खाकर भी ना संभले तो मुसाफिर का नसीब, वरना पत्थरों ने तो अपना फर्ज निभा दिया था। जीवन उसी का सुधरेगा जो आँख बंद होने से पहले आँख खोलेगा।

जीवन दर्शन शब्द सुनकर लोगों को एक नज़र में लगता है कि बड़ा भारी शब्द है, आजकल की चकाचौंध भागदौड़, वक्त की कमी, कामकाज का तनाव, परिवार की जिम्मेदारियां, बच्चों के भविष्य की चिंता, साजिश, राजनीति, झूठ फरेब से ही नहीं उबर पा रहे हैं, जीवन के दर्शन में कौन झांके। तो दोस्तों हम आपको बता दें कि हम कोई गहरे पानी की बात नहीं कर रहे, हम इन्हीं सब विषयों की चर्चा कर रहे हैं, जो हम रोज देखते हैं, करते हैं और सुनते हैं, भोगते हैं, महसूस करते हैं। आसपास जो भी घटित हो रहा है, जो हम सोच रहे हैं, जिनसे रू–ब–रू हो रहे हैं, जिनसे हमारा और हमारे परिवार, समाज का और देश का लेना–देना है, जिसमें हमारी सीधी भागीदारी है। दरअसल हम जो करते हैं, उसमें सोचने का वक्त कम है, जो तात्कालिक रूप से मन में आया दिल ने चाहा कर दिया, उसके नतीजे के बारे में सोचते ही नहीं, लेकिन जब कोई घटना हो जाती है, कोई फैसला हम लेते हैं तो अच्छा या बुरा होता है, यदि थोड़ा सा सोच लें, थोड़ा अपने मन में झाक लें, थोड़ा करने के लिए उसके नतीजे तक पहुंच जाएं तो हमारा जीवन बेहतर हो सकता है, हम कितने बड़े आदमी हैं, हम कितने उम्रदराज हैं, हम अगर किसी को मानेंगे तो हम छोटे हो जाएंगे, कभी–कभी आपके बच्चे की सलाह, आपके फैंसले से बेहतर हो सकती है, आपके माता–पिता, पति–पत्नी, बच्चे, दोस्त, दफ्तर के साथी कोई भी आपके चुनाव को और बेहतर कर सकता है, आपको सही रास्ते पर ले जा सकता है, ये आपको तय करना है कि कब कौन सी बात को केवल सुनकर छोड़ देना है, कब उसे ग्रहण कर लेना है और कब उसकी बात को मान लेना है। करना हमेशा अपने ही दिमाग से है, भावुकता में नहीं बहना है, उत्तेजित नहीं होना है, घमंड नहीं करना है, वर्तमान पर रहना है और ऐसा करके हम न केवल अपने जीवन को नई ऊंचाईयों पर ले जा सकते हैं बल्कि सुख शांति का अनुभव कर सकते हैं।

एक बात हमेशा मन में ठान लें कि केवल पैसा समृद्धि का आधार नहीं, सबसे पहले सेहत और शांति आपके जीवन के पहले मापदंड होने चाहिएं। यदि आप दाल–रोटी खा रहे हैं तो उसे खाते वक्त मन में सुकून होना आवश्यक है न कि फाइव स्टार होटल में तनाव लेकर भोजन करना। बड़े बंगले में जो सुकून नहीं वो एक कमरे में भी हो सकता है जबकि माहौल खुशनुमा हो, सदभाव का हो, शांति का हो, गलत तरीके से आप कहीं से कहीं पहुंच सकते हैं, लेकिन और भय के साथ उससे न तो आप अपने को सुकून दे पाएंगे न ही अपने परिवार को और जब आप धड़ाम से गिरेंगे तो आपके पास की चांडाल चौकड़ी ऐसे गायब होगी कि पता ही नहीं चलेगा और आप अकेले अंधेरे में खो जाएंगे। जो हमारे साथ रोज घटित होता है, जो हम दिन भर सोचते हैं, करते हैं, उसे बेहतर कैसे करेंगे, यह जीवन दर्शन है। पैसा ही जो हमारे आसपास है जबकि जीवन दर्शन से कुछ ऐसा लगता है कि ये केवल उन लोगों के लिए है जो केवल चिंतन मनन करते हैं, अध्यात्म में रमते हैं, हर किसी का इससे क्या लेना–देना, इसलिए आज जीवन दर्शन को स्पष्ट करना जरूरी समझा, हमारे और आपके लिए ये अच्छी बात है।

हमेशा जीवन के सब को देखते रहना है। हमारे आसपास इतना सब कुछ घट रहा है, पर हम कोई सबक नहीं ले रहे हैं। पता है न? बुद्ध ने एक दिन एक अर्थी को देखा और बस, अपने जीवन को बदल लिया ऐसा कुछ होना चाहिए जीवन में संत कबीर दास जी ने कहा था कि गुरु बिन ज्ञान न होई साधु बाबा तब फिर ज्यादा सोचने–विचारने को आवश्यकता नहीं है बस गुरु के प्रति समर्पण कर दो। हमारे सुख–दुःख और हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य गुरु को हो साधने दो ज्यादा सोचोगे तो भटक जाओगे। अहंकार से किसी ने कुछ नहीं पाया सिर और चप्पलों को बाहर ही छोड़कर जरा अदब से गुरु के द्वार खड़े हो जाओ बस गुरु को ही करने दो हमारी चिंता हम क्यों करें?

जीवन दर्शन होंगे जब आप चलते रहोगे रुक गए तो मानो ज़िंदगी रुक गई। जीवन दर्शन एक ज़िंदगी जीने का तरीका है। आप किसी भी संप्रदाय को मानते हो परन्तु दुनिया में मानव धर्म सर्वोपरि है। मानव अद्भुत प्राणी है, जब से पैदा हुआ तब से मन में स्वयं को जानने की जिज्ञासा हुई कि मैं कौन हूँ ये प्रकृति क्या है? ये किसने उत्पन्न की ? प्रकृति के नियम क्या हैं? क्या कोई शक्ति है जो इस सृष्टि का संचालन

करती है ?

इन प्रश्नों का उत्तर पाने का मानव ने प्रयत्न किया तथा सृष्टि के रहस्यों को समझा जाना– मृत्यु क्या है? क्या इस लोक से परे कोई और लोक है ? इस संसार को चलाने वाली शक्ति क्या है? कैसे इस शक्ति को प्राप्त करके मानव अपने जीवन को आनंदपूर्ण बना सकता है? इन प्रश्नों का उत्तर मानव ने प्राप्त किया तो उसने सोचा की अन्य लोगों को भी इस आनंद के रहस्य को बताया जाए ताकि सभी मानव का जीवन सुखी बन सके।

हमारी विचारधारा से मेल नहीं खाने वाले व्यक्ति को भी इस दुनिया में रहने का पूरा अधिकार है, क्योंकि वह भी मानव है तथा उसे भी उसी शक्ति ने पैदा किया है जिसने तुमको पैदा किया है। सभी से प्रेम करो, किसी से भी घृणा न करो, किसी के प्रति मन में द्वेष न रखो अन्यथा तुम्हारे स्वयं की हानि होगी।

खगोलजीव विज्ञान

अलंकृता वर्मा
सुपुत्री श्री अजीत वर्मा
प्रबन्धक (बीज उत्पादन),
क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय–हैदराबाद

हमारे ब्रह्मांड में अरबों तारे हैं। कुछ बृहस्पति से छोटे हैं जबकि कुछ इतने विशाल हैं कि उनमें से एक में 5 अरब सूर्य समा सकते हैं। हमारा सूर्य एक मध्यम आकार का सफेद तारा है जो आकाशगंगा–एक विशिष्ट वर्जित चक्राकार आकाशगंगा की बाहरी भुजा में स्थित है। अधिकांश तारों के समान ही सूर्य की परिक्रमा ग्रह करते हैं। पहली नज़र में, हमारे सौर मंडल के बारे में कुछ विशेष दिखाई नहीं पड़ेगा। परन्तु जैसे ही आप एक बेहतर दृष्टि डालते हैं, आपको कुछ असाधारण मिलेगा। अन्य सभी ग्रहों की तुलना में काफी अलग दिखने वाले तीसरे ग्रह पर आप अधिकांश ग्रहों की तुलना में अधिक घना वातावरण पाएंगे और जैसे–जैसे आप और गहराई में जाएंगे, आप शानदार सफेद बादलों से भरे एक सुंदर नीले आकाश में अजीब चीजें उड़ते हुए देखेंगे। सूरज की सुनहरी किरणों द्वारा उल्लिखित बादल; विशाल गहरे नीले महासागर; हरे–भरे वृक्षों से भरे जंगल और विशाल भवनों से भरे नगर और नगरों में वाहन चारों दिशाओं में घूमते रहते हैं। यह ग्रह एक ब्रह्मांड में जीवन से इतना भरा है जहां सब कुछ इतना स्थिर लगता है। इस जगह के बारे में ऐसा क्या है कि यह अन्य सभी से अलग है? यह इतना खास क्यों है? क्या ऐसी कोई और जगह है?

इन सभी सवालों का जवाब खगोलजीव विज्ञान है– ब्रह्मांड में जीवन का अध्ययन। यह बहु–विषयक क्षेत्र सदियों पुराने प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि क्या हम ब्रह्मांड में अकेले हैं?

पृथ्वी से परे जीवन की खोज के लिए जीवन की समझ और इसका समर्थन करने वाले वातावरण की प्रकृति के साथ–साथ ग्रह, ग्रह प्रणाली और तारकीय बातचीत और प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। इस समझ को प्रदान करने के लिए, खगोलजीव विज्ञान कई क्षेत्रों से ज्ञान और तकनीकों को जोड़ती है, जिसमें खगोल विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूविज्ञान, वायुमंडलीय विज्ञान, समुद्र विज्ञान और वैमानिकी इंजीनियरिंग सम्मिलित हैं। यह अध्ययन का एक अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है, लेकिन इसका उज्ज्वल और आशाजनक भविष्य है क्योंकि हम अन्य ग्रहों को उपनिवेश बनाने की दिशा में अग्रसर हैं। जब से वैज्ञानिकों को मंगल ग्रह पर जीवन के प्रमाण मिले हैं, विभिन्न अंतरिक्ष मिशन जैसे दृढ़ता, मंगल विज्ञान प्रयोगशाला, आदि लॉन्च किए गए हैं और कई प्रक्रिया में हैं। 9 दिसंबर 2013 को, नासा ने बताया कि क्यूरियोसिटी के एओलिस प्लस का अध्ययन करने वाले साक्ष्य के आधार पर गेल क्रेटर में एक प्राचीन मीठे पानी की झील थी, जो माइक्रोबियल जीवन के लिए एक आदर्श वातावरण हो सकती थी। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी वर्तमान में रूसी संघीय अंतरिक्ष एजेंसी (रोस्कोस्मोस) के साथ सहयोग कर रही है और एक्सोमार्स एस्ट्रोबायोलॉजी रोवर विकसित कर रही है, जिसे 2022 में लॉन्च किया जाना है। नासा ने बाद में पृथ्वी पर लौटने के लिए मार्स 2020 एस्ट्रोबायोलॉजी रोवर और नमूना प्राप्त करने वाला भी लॉन्च किया।

जीवन की खोज करते समय, खगोलजीव वैज्ञानी इस कार्य को आसान बनाने के लिए कुछ धारणाएँ बनाते हैं। इसमें सम्मिलित हैं:–

1. यह मानते हुए कि अधिकांश बाह्य–स्थलीय जीवन कार्बन आधारित है। चूंकि कार्बन ब्रह्मांड में चौथा सबसे प्रचुर तत्व है और इसमें अत्यंत बड़े और जटिल अणु बनाने की क्षमता है, इसलिए इसे हमारी आकाशगंगा में जीवन का आधार बनाने के लिए सबसे उपयुक्त तत्व माना जाता है।
2. तरल पानी की उपस्थिति क्योंकि यह एक सामान्य अणु है और जटिल कार्बन–आधारित अणुओं के निर्माण के लिए एक उत्कृष्ट वातावरण प्रदान करता है जो अंततः जीवन के उद्भव का कारण बन सकता है।
3. सूर्य जैसे तारों की खोज करना क्योंकि वे ग्रहों के रहने की संभावना में वृद्धि करते हैं। बहुत बड़े सितारों का

जीवनकाल छोटा होता है, जिसका अर्थ यह हो सकता है कि जीवन को कभी उभरने का समय ही न मिला हो। बहुत छोटे तारे इतनी कम गर्मी और ऊर्जा प्रदान करते हैं कि उनके आस–पास की कक्षाओं में स्थित ग्रह ही ठोस रूप से जमे हुए नहीं होंगे। तो, हमारे सूर्य जैसे मध्यम आकार के तारे सबसे उपयुक्त विकल्प हैं।

4. अन्य सितारों के आसपास रहने योग्य क्षेत्रों को कभी–कभी 'गोल्डीलॉक्स ज़ोन' कहा जाता है। इन क्षेत्रों के ग्रहों में जीवन के लिए आवश्यक तरल पानी की उपस्थिति की अधिक संभावना है।

ग्रहों के लिए जटिल कार्बन–आधारित जीवन के लिए इन स्थितियों को आवश्यक माना जाता है।

कई वैज्ञानिक मानते हैं कि हमारे ब्रह्मांड में जीवन काफी सामान्य है। यह सिर्फ इतना है कि आकाशगंगाओं और सितारों की संख्या और उनके बीच की दूरियां इतनी बड़ी हैं कि पृथ्वी या उसके वायुमंडल से बाहर जीवन का पता लगाना अत्यधिक कठिन है। यह भी आवश्यक नहीं है कि सभी जीवन कार्बन आधारित हों। यह अन्य तत्वों पर भी आधारित हो सकता है। एक्सट्रीमोफाइल्स (बर्फ, उबलते पानी, एसिड, क्षार, परमाणु रिएक्टरों के जल कोर, नमक क्रिस्टल, जहरीले अपशिष्ट जैसे अन्य चरम आवासों में जीवित रहने में सक्षम जीव) और सौर मंडल से बाहर हजारों ग्रहों की खोज के बाद से, संभावित रूप से पृथ्वी या उसके वायुमंडल से बाहर प्राकृतिक आवासों में बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है।

बृहस्पति के चंद्रमा यूरोपा और शनि के चंद्रमा एन्सेलेडस, को अब उनके उपसतह जल महासागरों के कारण सौर मंडल में उपस्थित वायुमंडल से बाहर जीवन के लिए सबसे संभावित स्थान माना जाता है। क्यूरियोसिटी और पर्सिवरेंस रोवर्स द्वारा मंगल ग्रह पर वर्तमान अध्ययन प्राचीन जीवन के साक्ष्य के साथ–साथ प्राचीन नदियों या झीलों से संबंधित मैदानों की भी खोज कर रहे हैं जो रहने योग्य हो सकते हैं।

खगोलजीव विज्ञान का अध्ययन न केवल वायुमंडल से बाहर जीवन की खोज में आवश्यक है, बल्कि एक बहुग्रहीय प्रजाति बनने के मानवता के सपने को साकार करने के लिए भी आवश्यक है। पृथ्वी ही एक ऐसी ज्ञात जगह है जहाँ अभी मनुष्य आराम से रह सकता है। लेकिन बढ़ते प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के साथ, पृथ्वी धीरे–धीरे लेकिन निश्चित रूप से निर्जन होती जा रही है। भले ही हम ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए सभी उपाय और सावधानी बरतें, फिर भी हम इसे रोक नहीं सकते क्योंकि यह एक प्राकृतिक घटना है और इंसानों ने अपनी गतिविधियों से इसकी गति को तीव्र कर दिया है। इसलिए, भले ही हम अपने ग्रह को नुकसान पहुंचाना बंद कर दें (जो लगभग असंभव है), अंततः एक दिन आएगा जब पृथ्वी पर जीवन और नहीं पनप पाएगा। ऐसी विकट स्थिति में हमारे पास केवल दो विकल्प हैं। पृथ्वी पर जीवन का अंत या किसी अन्य ग्रह पर जाने और एक नई सभ्यता आरंभ करने का मौका हो सकता है। हम कौन सा विकल्प चुनेंगे, हम सभी यह जानते हैं। मंगल ग्रह का उपनिवेश बनाना उस दिशा में पहला कदम है और एक बार जब हम इसे पूरा कर लेते हैं, तो वास्तव में मानवता के विकास की कोई सीमा नहीं रह जाएगी।

खगोलजीव विज्ञान वास्तव में विशाल अनुप्रयोगों के साथ एक आकर्षक और महत्वपूर्ण विषय है। यह शायद पृथ्वी पर और उससे आगे मानवता का भविष्य क्या है? का जवाब है। कार्ल सगन के शब्दों के साथ विराम देते हुएः

'कहीं न कहीं, कुछ अतुलनीय पहचाने जाने का इंतज़ार कर रहा है।'

जीवन क्या है?

अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

मनुष्य का जीवन एक प्रकार का खेल है और मनुष्य इस खेल का मुख्य खिलाड़ी। यह खेल मनुष्य को हर पल खेलना पड़ता है। इस खेल का नाम है "विचारों का खेल"।

इस खेल में मनुष्य को दुश्मनों से बचकर रहना पड़ता है। मनुष्य अपने दुश्मनों से तब तक नहीं बच सकता जब तक मनुष्य के मित्र उसके साथ नहीं है। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र "विचार" है और उसका सबसे बड़ा दुश्मन भी विचार ही हैं। मनुष्य के मित्रों को सकारात्मक विचार कहते है और मनुष्य के दुश्मनों को नकारात्मक विचार कहा जाता है।

मनुष्य दिन में 60,000 से 90,000 विचारों के साथ रहता है यानि हर पल मनुष्य एक नए दोस्त या दुश्मन का सामना करता है।

मनुष्य का जीवन विचारों के चयन का एक खेल है। इस खेल में मनुष्य को यह पहचानना होता है कि कौन सा विचार उसका दुश्मन है और कौन सा उसका दोस्त, और फिर मनुष्य को अपने दोस्त को चुनना होता है। हर एक दोस्त (एक सकारात्मक विचार) अपने साथ कई अन्य दोस्तों (सकारात्मक विचार) को लाता है और हर एक दुश्मन (एक नकारात्मक विचार) अपने साथ अनेक दुश्मनों (नकारात्मक विचार) को लाता है।

इस खेल का मूलमंत्र यही है कि मनुष्य जब निरंतर दुश्मनों (नकारात्मक विचार) को चुनता है तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है और अगर वह निरंतर दोस्तों (सकारात्मक विचार) को चुनता है, तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है। जब भी मनुष्य कोई गलती करता है और कुछ दुश्मनों को चुन लेता है तो वह दुश्मन, मनुष्य को भ्रमित कर देते हैं और फिर मनुष्य का स्वंय पर काबू नहीं रहता और फिर मनुष्य निरंतर अपने दुश्मनों को चुनता रहता है।

मनुष्य के पास जब ज्यादा मित्र रहते हैं और उसके दुश्मनों की संख्या कम रहती है तो मनुष्य निरंतर, इस खेल को जीतता जाता है। मनुष्य जब जीतता है तो वह अच्छे कार्य करने लगता है और सफलता उसके कदम चूमती है, सभी उसकी तारीफ करते हैं और वह खुश रहता है। लेकिन जब मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य के मित्रों से मजबूत हो जाते हैं, तो मनुष्य हर पल इस खेल को हारता जाता है और निराश एवं क्रोधित रहने लगता है। मनुष्य को विचारों के चयन में बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य को ललचाते हैं और मनुष्य को लगता है कि वही उसके दोस्त हैं।

जो लोग इस खेल को खेलना सीख जाते हैं वे सफल हो जाते हैं और जो लोग इस खेल को समझ नहीं पाते वे बर्बाद हो जाते हैं। इस खेल में ज्यादातर लोगों कि समस्या यह नहीं है कि वे अपने दोंस्तों और दुश्मनों को पहचानते नहीं बल्कि समस्या यह है कि वे दुश्मनों को पहचानते हुए भी उन्हें चुन लेते हैं।

ईश्वर (या सकारात्मक शक्तियाँ), मनुष्य को समय–समय पर कई तरीकों से यह समझाते रहते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है लेकिन यह खेल मनुष्य को ही खेलना पड़ता है। जब मनुष्य इसमें हारता रहता है और यह भूल जाता है कि इस खेल को कैसे खेलना है तो शांत सकारात्मक विचार उसे बताते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है।

निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2021 के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार निबंध

सतर्क भारत समृद्ध भारत

अजीत कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय

भारत एक विशाल देश है। यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की सभ्यता–संस्कृति, धर्म, समुदाय के लोग रहते हैं। इसलिए भारत को विविधताओं में एकता वाला देश कहा जाता है। यह विविधता ही भारत की एक अलग पहचान बनाती है साथ ही साथ अन्य देशों से अलग करती है। भारत एक सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ हरेक व्यक्ति को सरकार बनाने, अपने विचार रखने, अपने धर्म का पालन करने और सरकार की नीतियों के खिलाफ बोलने का अधिकार है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस स्वतंत्र भारत में सभी प्रकार की आजादी होने के बाद क्या हम सभी लोग सतर्क हैं?

अब प्रश्न यह उठता कि सबसे पहले सतर्कता किससे चाहिए? सबसे पहले सतर्कता आदमी को अपनी गलत मानसिकता एवं विचारों से चाहिए। जब व्यक्ति अपने विचारों के प्रति सतर्क रहेगा तो एक अच्छे व्यक्ति का निर्माण होगा। जिसके कारण परिवार में सतर्कता अधिक से अधिक होगी। परिवार में जितनी सतर्कता होगी उतनी ही परिवार में समृद्धि होगी।

सतर्कता का सीधा संबंध समृद्धि से है। समाज में लोग जितना सतर्क रहेंगे उतना ही समाज में कुप्रथा का अभाव होगा और समाज का विकास होगा। यही बात हमारे देश में भी लागू होती है। जब देश के लोग सतर्क रहेंगे तो हमारा देश उतना ही सजग रहेगा और भारत के खिलाफ साजिशों को भी निपटा सकेंगे। जैसे–आतंकवाद, आतंकवाद की गतिविधियों को भी सतर्कता के द्वारा समाप्त किया जाता है।

जब व्यक्ति के व्यक्ति, समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और राष्ट्र के स्तर पर सतर्कता का समावेश होगा तभी व्यक्ति के जीवन में और राष्ट्र में समृद्धि आएगी।

जीवन के हरेक आयाम में सतर्कता जरूरी है। तभी जीवन में समृद्धि आएगी।

आज देश को आजाद हुए 75 वर्ष हो गए है। लेकिन देश का जितना विकास होना चाहिए, उतना नहीं हो सका। इसका मूल कारण देश के नीति–नियमों के कार्यान्वयन में सतर्कता का अभाव है। देश के विभिन्न कार्यालयों में जब सतर्कता के अभाव के कारण नीति–नियमों की अवमानना होने लगती है। तो भ्रष्टाचार का उदय होता है, जिससे कार्यालय में विभिन्न प्रकार के घोटाले, भ्रष्टाचार गतिविधियों का मामला उजागर होने लगता है और इसका नकारात्मक प्रभाव हमारे देश पर पड़ता हैं। जिससे हमारे देश की प्रगति धीमी हो जाती है।

आज अगर भारत के 130 करोड़ देशवासी अपने विचारों, कर्तव्यों और नीति–नियमों के कार्यान्वयन के प्रति जितना सतर्क रहेगा उतना ही देश का चहुँमुखी विकास होगा।

आज लोगों के जीवन में सतर्कता अधिक से अधिक होने के लिए भारत सरकार के द्वारा बहुत से कदम उठाए जा रहे हैं। भारत सरकार के जितने भी कार्यालय, विभाग और मंत्रालयों में सतर्कता सप्ताह मनाया जाता है। इस सतर्कता सप्ताह मनाने के पीछे यही मंशा है कि लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए तथा लोग अपने कार्यों और जिम्मेदारियों के प्रति अधिक से अधिक सतर्क हो सकें, जिससे देश की चहुँमुखी विकास हो सकें।

अतः हम सभी लोगों को यह समझना चाहिए कि सतर्कता का महत्व सिर्फ सतर्कता सप्ताह तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। बल्कि जीवन के प्रतिदिन की क्रिया–कलापों में सतर्कता को अपनाना होगा। तभी देश का विकास होगा।

जय हिंद–जय भारत–जय सतर्कता

निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2021 के दौरान आयोजित कविता एवं नारा प्रतियोगिता में पुरस्कृत

प्रथम पुरस्कार कविता

प्रिया मलिक
बाह्य साधन : वरिष्ठ सहायक (बोर्ड सचिवालय),
निगमित कार्यालय

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता मैं कैसे हासिल करुं,
जब–जब मन में यह सवाल उठा।
सत्यनिष्ठा की राह पर मेरा और एक कदम बढ़ा।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर फिर मैं बन जाऊं।
जागरूक और सतर्क होकर फिर समाज में कुछ कर दिखाऊं।

जहाँ सत्यनिष्ठा आज के समय में केवल शब्द बना मिला।
वहाँ हर जन के मन में यह सवाल उठा।

क्यूँ करूँ में अकेला कार्य, सत्यनिष्ठा की मुश्किल
राह पर चलकर जब सबने है आसान रास्ता चुना।

वहाँ झूठी निर्भरता भी उनको अच्छी लगती है
क्यूंकि वह उनको एक आसान कामयाबी दिखती है।

फिर मैंने सोचा, क्यूँ मैं भी उन जैसा बन जाऊं।
हर गलत के साथ मैं भी गलत बन जाऊं।

मैंने जो सोचा, वही कदम उठाना है।
फिर से समाज का सत्यनिष्ठा से
आत्मनिर्भरता का परिचय करवाना है।

प्रथम पुरस्कार नारे

योगेश कुमार
बाह्य साधन : सहायक (प्रशासन)
निगमित कार्यालय

नारा

स्वतंत्र भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर होकर नया भारत बनाना है।

कार्मिकों के बच्चों के लिए 5–8 वर्ष और 9–15 वर्ष के आयु वर्ग में आयोजित ''कविता पाठ प्रतियोगिता'' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त

5–8 वर्ष

लास्या लाजुली
सुपुत्री श्रीमती मधुस्मिता सासमल,
सहायक प्रबन्धक (विपणन)

9–15 वर्ष

प्रियांशी सिंह
सुपुत्री श्री प्रकाश सिंह सौन,
प्रचालक ग्रेड II

हिल उत्पाद की कहानी मेरी जुबानी

मधुस्मिता सासमल
सहायक प्रबन्धक
(विपणन),
निगमित कार्यालय

हमारे नाम में भारत जुड़ा है
हमारे कण–कण में देश प्रेम भरा है
किसान उगाते हैं भारत के लिए
हम काम करते हैं
भारत के किसान के लिए

जो एक बार करे इस्तेमाल इनका
वो सदा करे गुणगान इनका

हमारे उत्पादों में जितना दम है,
उनका मूल्य उतना कम है
विश्वास रखकर हम पर
इन उत्पादों का प्रयोग करें

दोस्तों को समर्पित

मनोहर लाल
वरिष्ठ सहायक (वित्त),
निगमित कार्यालय

जब शनै–शनै उम्र बढ़ जाएगी,
ईत्र की जगह आयोडेक्स
की खुशबू आएगी।
कहता हूं अब भी मिल लिया करो,
ये घड़ियां पलटकर नहीं आएंगी।
अभी तो आंखों में नूर है बाकी,
फिर खूबसूरती नजर नहीं आएगी।
अभी तो यार हैं चलते अपने साथ,
फिर केवल छड़ी ही नजर आएगी।
सुन लो आवाज दोस्तों की
फिर कानों में मशीन नजर आएगी।
हंस लो खिलखिला कर आज
फिर नकली बत्तीसी ही
झलक दिखाएगी।
जब दोस्त बुलाएं, चले जाओ,
फिर डॉक्टरों से फुर्सत न मिल पाएगी।
समझ जाओ यारों, समझ जाओ,
ये मस्त उम्र फिर नहीं आएगी।

वह क्या है ?

निलेश जराड
जूनियर सहायक (मा.सं.एवं प्रशा.),
रसायनी यूनिट

वह क्या है ?
जो मन को मेरे खाए जा रहा है
भीतर–ही–भीतर हलचल सी मचाए जा रहा है
हसीन यादों को मेरी तोड़–मरोड़ रहा है।

मानों,
शीशे की तरह कुछ टूट रहा है
मुझसे मेरा कोई रूठ रहा है
मुझको मुझ ही से कोई लूट रहा है।

वरना,
जिंदगी में क्या नहीं है
पद है, पैसा है, प्रतिष्ठा है
प्रेम है, स्नेह है, घनिष्ठता है।

फिर भी,
कुछ खालीपन, घोर अकेलापन, अजीब–सी उलझन है
आँखों में नमी, होंठों पर मुस्कान की कमी,
दिल में बेचैनी–सी है।

क्या कहूँ इसे ? क्या नाम दूँ ?
तकदीर की तकरीरें
किस्मत की लकीरें...
या फिर
ज़िंदगी की सच्ची तस्वीरें...।।

रिश्ते

रमा जोशी
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

अब रिश्ते भी नौकरी की तरह हो गये हैं।
बेहतर ऑफर मिलते ही बदल जाते हैं।।

जिन्हें निभाना होता है। वो आखिरी सांस तक निभाते हैं।
वक्त बुरा हो तो मेहनत करना और वक्त अच्छा हो तो किसी
की मदद करना ।।

रिश्ते में जब झूठ बोलने की शुरूआत हो
तब समझ लो की रिश्ते का अंत नजदीक है।

जिनमें अकेले चलने का हौंसला होता है,
उन के पीछे एक दिन काफिला होता है।।

जीवन का सब से कठिन कार्य है,
इंसान को पहचानना।

जब कुछ समझ न आये तब शांत बैठ कर,
खुद को समझ लेना चाहिए ।।

जो मिल रहा है तुम्हें तुम्हारे लिए बेहतर है।
ये तुम नहीं जानते पर देने वाला बखूबी जानता है।।

हर हाल में दिमाग को शांत रखना सीख लीजिए,
आधी समस्याएं यूं ही खत्म हो जायेंगी।
हजार उलझनों के बीच चलते रहना ही जिंदगी है।।

वहाँ पर अपना न होना ही बेहतर है,
जहाँ पर अपनी कद्र नहीं होती।।

जरूरत से ज़्यादा अच्छा होना भी
जरूरत से ज़्यादा जलील करवा देता है।।

आज कल के रिश्ते सूरज मुखी के फूल जैसे होते हैं
जिधर ज्यादा फायदा मिले उधर घुम जाते हैं।।

किस मिट्टी के बने थे वो लोग जो
अपनों की चिट्ठियों का महीनों इन्तजार किया करते थे
आज कल तो कुछ दिन बात न करो तो
लोग रिश्ते ही बदल लेते है।

उस इंसान को कभी भी झूठ मत बोलना
जिनको आपके झूठ पर भी विश्वास हो।।

रिश्ते की फिक्र करना छोड़ दो
जिसे जितना साथ देना है
वो उतना ही निभाएगा।।

जीवन में इतना तो सबक मिल ही गया है
कि फिक्र में रहेंगे तो खुद जलेंगे
बेफिक्र रहेंगे तो दुनिया जलेगी।।

खुद को यूं खोकर ज़िंदगी को मायूस न कर
मंजिल चारों तरफ है रास्ते की तलाश कर।।

जिंदगी में कुछ ऐसे दर्द हैं
जो जीने नहीं देते और
कुछ ऐसे कर्ज है, जो मरने नहीं देते।।

प्रेम बचपन में मुफ्त में मिलता है
जवानी में कमाना पड़ता है
और बुढ़ापे में भोगना पड़ता है।।

रिश्ते और नाते मतलब की पटरी पर
चलने वाली वो रेल गाड़ी है
जिस–जिस का स्टेशन आता है
वो उतरता जाता है।।

याद रखना गैरों को अपना बनाते–बनाते
एक दिन कहीं तुम अपनों को ही न खो दो।।

जो भी आता है एक नयी चोट देकर चला जाता हैं
माना मजबूर हूँ मैं लेकिन पत्थर तो नहीं।।

जब जरूरत बदलती है तो
लोगों का बात करने का तरीका बदल जाता है।।

रिश्ता होने से रिश्ता नहीं बनता
रिश्ता निभाने से रिश्ता बनता है।।

आंसू भी आते हैं दर्द छुपाना भी पड़ता है
ये जिन्दगी है साहब यहाँ जबरदस्ती मुस्कुराना भी पड़ता है।
जिन्दगी बदलने के लिए लड़ना पड़ता है। ।

और आसान करने के लिए समझना है
भूलने वाली सारी बाते याद है।
इस लिए जिन्दगी के रिश्ते में विवाद है।

*आशा करती हूँ की इन्सान की जिन्दगी में कुछ पल सटीक हुए होंगे
मेरी कविता पढ़ने के लिए आप सभी ने अपने जीवन के कुछ पल निकालें।
आप सभी लोगो को बहुत –बहुत धन्यवाद।।*

पवन कुमार
प्रचालक, बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड -समृद्धि हेतु सुरक्षा

सन 1954 में दिल्ली में थी जन्मी
डी.डी.टी मेरी पहचान बनी

रसायनी, उद्योगमंडल में साजो –श्रृंगार हुआ
नवरत्नों में खेली थी मैं

तीनों यूनिट के बल से देश–विदेश में था अपना परचम लहराया
डी.डी.टी. के छिड़काव से मलेरिया पर था काबू पाया
कीटनाशक बनाकर खेती में हरित क्रांति थी जगाई
फसलों में पैदावार बढ़ी देश में थी खुशहाली आई

हिलडान, हिलबान हैं मेरे प्रमुख गहने
इन के उपयोग से किसानों ने खुशियों के ताज थे पहने

हिलगोल्ड यूरिया ने अपना खुब रंग जमाया
धरती माँ को नई ऊर्जा देकर खाद्यानों का अम्बार लगाया

उच्च कोटि के बीजों को मुहैया करवाना
कृषि क्षेत्र में आए प्रगति यही संकल्प अपनाया

समय के उतार–चढ़ाव से आहत हुई हूं मैं
थोड़ी सी धीमी हुई हूं परन्तु उड़ना भूली नहीं हूं मैं
फिर से पंख फैलाऊँगी बुलंदियों को छू जाऊंगी

ब्रह्मपाल सिंह
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

देखा है

मैने हर रोज़ जमाने को बदलते देखा है।
उम्र के साथ जिंदगी को ढंग बदलते देखा है।।

वो जो चलते थे तो शेर को चलने का होता था गुमान।
उनको भी पांव उठाने के लिए सहारे को तरस्ते देखा है।।

जिनकी नज़रो की चमक देख सहम जाते थे लोग।
उन्ही नज़रों को बरसात की तरह रोते देखा है।।

जिनके हाथों के जरा से इशारे से टूट जाते थे पत्थर ।
उन्ही हाथों को पत्तों की तरह थर–थर काँपते देखा है।।

जिनकी आवाज से कभी बिजली के कड़कने का होता था भरम।
उनके होठों पर जबरन चुप्पी का ताला लगा देखा है।

ये जवानी ये ताकत ये दौलत सब कुदरत की इनायत है।
इनके रहते हुए भी इन्सान को बेजान हुआ देखा है।

अपने आज पर इतना ना इतराना मेरे यारों।
वक्त की धारा में अच्छे अच्छों को मजबूर हुआ देखा है।

कर सको तो किसी को खुश करो दुख देते हजारो को देखा है
क्योंकि इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जाएगा।

नारी शक्ति

कान्ता
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

तूने क्यूँ अपनी कीमत ना पहचानी ?
तू ही जगत जननी दुर्गा भवानी,
तेरे आँसुओं की वो अविरल धरा
क्या कोई उनका मोल है चुका पाया ?

बुंदेले हरबोलो के मुँह हमने,
तेरी सुनी कहानी
क्या खूब लड़ी नारी,
जिसने अपनी शक्ति पहचानी।

बड़े–बड़ो को धुल चटाई,
वीरांगना स्वतंत्रता सेनानी
सीखा गई वो सीख,
जो हमें थी सीखानी।

फिर भी नारी,
कैसे तूने अपनी शक्ति ना पहचानी
कित्तुर रानी चेनम्मा हो,
या झाँसी की झलकारी बाई।

घोर जंगल में गरजते बाघ को,
निडरता से मार गिराई
इनकी तलवारों के आगे,
कोई भी सेना टीक ना पायी।
लहू बहा कर भी,
आजादी की दहाड़ सुनाई
फिर भी नारी,
कैसे तूने अपनी शक्ति ना पहचानी ?

भारत की बुलबुल,
सरोजनी नायडू,
पहली नारी राज्य गवर्नर का पद पायी
उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज़।

इन्होंने भी उठायी,
भाषण में साहस व
कार्यवाही में ईमानदारी,
इन्होंने ही बताई फिर भी नारी।

कैसे तूने अपनी शक्ति न पहचानी,
तूने अनेकों महिषासुर का किया संहार
तूने हर जीवन में किया,
जीवन का संचार।

तूने हर स्पंदन को,
अपनी छाती से है सींचा
फिर इन लक्ष्मण रेखाओं,
को किसने खींचा ?

कैसे सबने मिल के,
तेरे करूणमयी शीश
को शर्म से है झुकाया,
तेरे आँसुओं की वो अविरल धारा।

क्या कोई उनका मोल है चुका पाया ?
दहेज के लिए जलाए जाना,
कोख बेटी की निर्मम हत्याएँ,
तूने कैसे जीना सीखा ?

तू क्या भूल गई,
तू ही दुर्गा तू ही भवानी,
फिर कैसे जिंदा है ये दुराचारी ?

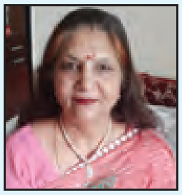

नारी का भाग्य

नीलम जैन
कवयित्री एवं शिक्षाविद्

नारी तेरे भाग्य की कैसी विडम्बना है।
हर युग में सताई तू फिर भी मणिकर्णिका है।

सीता जी को सतयुग में रावन ने सताया था,
अग्नि–परीक्षा देने को चरित्र का, बलि का बकरा बनाया था,
शबरी जैसी नारी को, जाति के बेरों ने चिढ़ाया था,
उर्मिला को तो लक्ष्मण ने ही महलों की वनवासी बनाया था।

सोया छोड़ यशोधरा को, बुद्ध चुपचाप चले गए थे,
बेचारी द्रोपदी को पाँचों पतियों ने दांव पर लगाया था,
देवकी की ममता का, कंस ने मजाक उड़ाया था,
क्या भूल गए मीरा को, राणा ने ज़हर पिलाया था,
मुगलों ने ही तो पदमावती को जौहर–व्रत सिखलाया था।

कर्तव्य की भावना ने पन्ना धाय से अपने पुत्र को मरवाया था,
ऋषि पत्नी अहिल्या को, इंद्र ने हवस का शिकार बनाया था,
बेकसूर पत्नी को गौतम ऋषि ने शापित पत्थर बनाया था।
रानी लक्ष्मी बाई को समाज की कुप्रथा ने दत्तक माँ बनाया था,
कलियुग की नारी, दहेज की मारी को, पति ने जिंदा जलाया है
अपनी ही सुंदरता ने नारी को, तेजाब का शिकार बनाया है।

युग–युग की सताई नारी की महिमा को कौन जान पाया है।
नारी ने रोशन कर घर को, अंधेरे को दूर भगाया है।

सुमित कुमार
बाह्य साधन : संपर्क अधिकारी,
निगमित कार्यालय

रूठो बेशक अपनों से
लेकिन मनाने पर मान जाओ
अपने तो आखिर अपने है
ये बात तुम जान जाओ।।

होती है गलती गलती से
गलती न की हो जिसने कभी
सामने वो इंसान लाओ।।

अकसर टूटने पर पता चलती है
अहमियत अनमोल दिल के रिश्ते की
ये तुम पहचान जाओ।।

जिनके पास अपने हैं
वो अपनों से झगड़ते हैं
जिका कोई नहीं अपना
वो अपनों को तरसते हैं।।

कल न हम होंगे न गिला होगा
सिर्फ सिमटी हुई यादों का सिलसिला होगा
जो लम्हें हैं चलो हंसकर बिता लें
यारों जाने कल ज़िंदगी का क्या फैसला होगा।।

पहला कदम बढ़ाऐं

भानु प्रकाश
प्रचालक ग्रेड II, बठिंडा यूनिट

लक्ष्य कोई नहीं है दुष्कर, अड़चन से न घबराऐं।
स्वागत करने धैर्य खड़ा है, बस पहला कदम बढ़ाऐं।।

हिम्मत की लौ मत बुझने देना, चाहे उखड़ें तेज हवाऐं।
स्वागत करने धैर्य खड़ा है, बस पहला कदम बढ़ाऐं।।

किन्तु–परन्तु अर्थहीन है, निश्चय को शस्त्र बनाऐं।
स्वागत करने धैर्य खड़ा है, बस पहला कदम बढ़ाऐं।।

ख़्वाब हकीकत बन सकतें हैं, कुछ जज्बा तो दिखलाऐं।
स्वागत करने धैर्य खड़ा है, बस पहला कदम बढ़ाऐं।।

कहने वाले थकेंगे एक दिन, मत रूकना कुटिल सवालों से।
किस्मत मिलने खुद ही आती, मेहनत पर डटने वालों से।।

मस्त हवाओं की भाषा भी, गति का इशारा करती है।
कंटक पथ पर चलने वालों से, दुविधा भी किनारा करती है।।

आकाश निमन्त्रण देगा तुमकों, सपनों के पंख लगाओ।
बाहुपाश में भर लेगा तुमको, नजदीक तो उसके जाओ।।

हिल (इंडिया) लिमिटेड सतर्कता जागरूकता सप्ताह

हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा ''स्वतंत्र भारत@75 –सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता'' विषय पर 26 अक्टूबर, 2021 से 01 नवंबर, 2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 का आयोजन किया गया। कंपनी के निगमित कार्यालय सहित सभी यूनिटों और क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों के सभी कर्मचारियों को सत्यानिष्ठा प्रतिज्ञा दिलाई गई ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2021 के दौरान प्रधान कार्यालय, क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों और यूनिटों के कर्मचारियों को जागरूक करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों जैसे निबंध लेखन, कविता लेखन, नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिल कार्मिकों के 5 से 8 तथा 9 से 15 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्तायह – 2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

निगमित कार्यालय

उद्योगमंडल यूनिट

रसयानी यूनिट

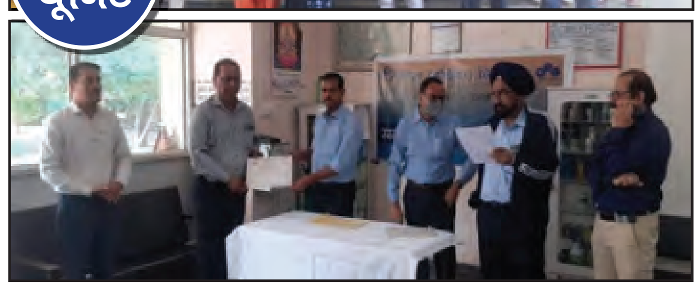

बठिंडा यूनिट

रक्तदान शिविर

हिल (इंडिया) लिमिटेड, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 01.10.2021 को आयोजित रक्तदान शिविर में श्री शशांक चतुर्वेदी – मुख्य महाप्रबन्धक (विपणन), श्री महेन्द्र सिंह – महाप्रबन्धक (तकनीकी) एवं अन्य कर्मचारियों ने रक्तदान किया।

नेत्र जांच शिविर

हिल (इंडिया) लिमिटेड ने निगमित कार्यालय, नई दिल्ली में नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया, जिसमें सभी अधिकारियों सहित सभी कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

हिल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

हिल (इंडिया) लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित निगमित कार्यालय में लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य पर महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.) की अध्यक्षता में ''महिला दिवस की महत्वता'' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय की सभी महिला कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस संगोष्ठी में महिला कार्मिकों की कर्तव्य निष्ठा और उनकी भूमिका को प्रोत्साहित किया गया। कंपनी ने प्रत्येक महिला कर्मचारी को संगठन में उनके योगदान तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इस आयोजन की स्मृति हेतु एक मोमेंटो भी किया। प्रबन्धन की ओर से सभी महिला कार्मिकों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में हिल–विप्स (सार्वजनिक क्षेत्र में महिला) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया।

अमृतशक्ति विद्यार्थिनी सदन, उद्योगमंडल में महिला दिवस 2022 को विप्स सदस्यों का संदर्शन

यूनिट प्रमुख से वरिष्ठ सदस्य श्रीमती अजिता कुमारी एम एस, वित्त विभाग को मेमेन्टो

यूनिट प्रमुख से वरिष्ठ सदस्य श्रीमती वी. एम. शशिकला, एच आर विभाग को मेमेन्टो

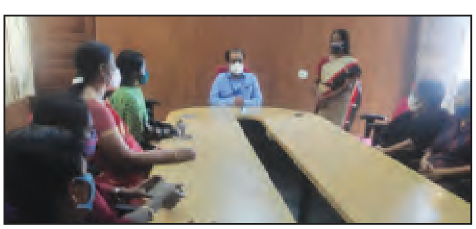

महिला दिवस 2022 को भाषण देते हुए श्रीमती ए. के. जयदेवी, वित्त विभाग

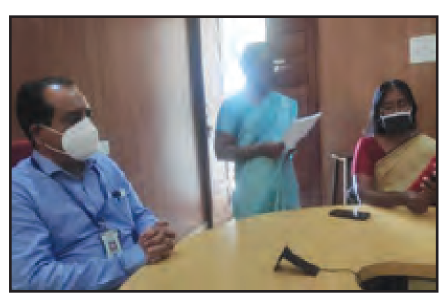

संयंत्र नियंत्रण हेतु हिल की बठिंडा यूनिट का दौरा

माननीय राज्य मंत्री, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार श्री भगवंत खुबा जी ने संयंत्र नियंत्रण हेतु हिल की बठिंडा यूनिट का दौरा किया। कंपनी के मुख्य महाप्रबन्धक (विपणन) प्रभारी ने बठिंडा यूनिट में माननीय राज्य मंत्री महोदय का स्वागत किया। इस निरीक्षण दौरे के दौरान माननीय राज्य मंत्री महोदय द्वारा बठिंडा संयंत्र परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

निरीक्षण

वृक्षारोपण

हिल में गणतंत्र दिवस समारोह

अनुसंधान एवं विकास केन्द्र

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में गणतंत्र दिवस, 2022 के अवसर पर सलाहकार (वित्त) श्री अंजन बनर्जी ने द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2022 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री बिजय कुमार महाराणा द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2022 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री डी.डी. सोनवानी द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में गणतंत्र दिवस, 2022 के अवसर पर यूनिट प्रमुख श्री प्रमोद डी. संकपाल द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण किया गया।

हिल में राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर शपथ

निगमित कार्यालय

हिल (इंडिया) लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित निगमित कार्यालय में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य पर उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में शपथ ली।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की बठिंडा यूनिट में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य पर सभी कर्मचारियों ने शपथ ली।

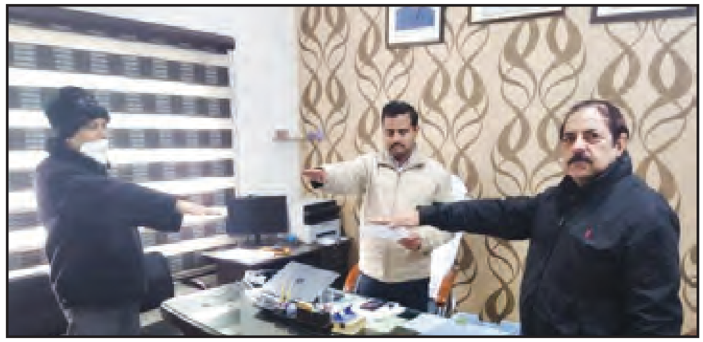

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की रसायनी यूनिट में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य पर सभी कर्मचारियों ने शपथ ली।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की उद्योगमंडल यूनिट में राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य पर सभी कर्मचारियों ने शपथ ली।

संविधान दिवस का आयोजन

संविधान दिवस के अवसर पर श्री एस. पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक और अन्य उच्च अधिकारियों ने हिल (इंडिया) लिमिटेड के कर्मचारियों के साथ निगमित कार्यालय, नई दिल्ली में संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

निगमित कार्यालय

हिल ने प्रोफेसर (डॉ) एस. पी. चौहान, सह–संस्थापक और व्यवहार प्रशिक्षण विशेषज्ञ (एफसीटीडी) द्वारा 'व्यक्तिगत और व्यावसायिक संकट पश्चात् लचीलेपन के लिए क्षमता निर्माण' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में सभी वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की रसायनी यूनिट, महाराष्ट्र में यौन उत्पीड़न अधिनियम पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के द्वारा वाराणसी में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया, मुख्य अतिथि के रूप में श्री अमित शाह, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार और विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश उपस्थित थे। हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय की ओर से मुख्य महाप्रबंधक (विपणन)–प्रभारी, श्री शशांक चतुर्वेदी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्री अजीत कुमार एवं सहायक प्रबंधक (विपणन) श्री आशीष श्रीवास्तव ने भाग लिए।

हिल में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

निगमित कार्यालय में राजभाषा संगोष्ठी

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय में दिनांक 10.12.2021 को हिंदी कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विशेष अतिथि–सह–वक्ता के रूप में मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के संकाय अध्यक्ष (मानविकी) एवं प्रोफेसर (हिंदी) डॉ० विनय कुमार को आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य महाप्रबंधक (विपणन) महोदय, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्र.) एवं सलाहकार (वित्त) महोदय के साथ अन्य अधिकारियों ने भी भाग लिया।

हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय में दिनांक 15.03.2022 को हिंदी कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय के अनुसंधान अधिकारी श्री संतोष कुमार गुप्ता को विशेष अतिथि–सह–वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य महाप्रबंधक (विपणन), महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्र.) एवं महाप्रबंधक (तकनीकी) महोदय के साथ अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

रसायनी यूनिट में हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठी

हिल (इंडिया) लिमिटेड के रसायनी यूनिट में दिनांक 27.12.2021 को हिंदी कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजित किया गया। जिसमें विशेष अतिथि सह वक्ता के रूप में गुरु घासी दास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के अतिथि अध्यापक डॉ० स्वर्ण लता सिन्हा एवं अरुण पाण्डेय को आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी में यूनिट प्रमुख, प्रबंधक (वित्त) महोदय के साथ अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

बठिंडा यूनिट का राजभाषा निरीक्षण

बठिंडा यूनिट का निरीक्षण के उपरांत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कंप्यूटर पर यूनिकोड द्वारा हिंदी टंकण का तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया। इसके पश्चात् यूनिट प्रमुख के समक्ष विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष के साथ राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन पर चर्चा की गई।

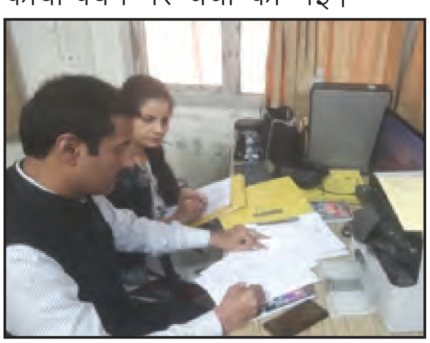

हार्दिक बधाई

दत्तोपांत तेंगडी राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड, कोचीन से उत्तम सेवाकार्य के आधार पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ विजयलक्ष्मी एस, उप प्रबंधक (राजभाषा), उद्योगमंडल यूनिट 16.09.2021 को प्रभारी क्षेत्रीय निदेशक श्री सोजन जोसफ ने पुरस्कार प्रदान किया।

निगमित कार्यालय में कार्यरत सहायक प्रबन्धक (विपणन) श्रीमती मधुस्मिता सासमल की पुत्री सुश्री लास्या लजुली ने प्रूडेंस स्कूल, नई दिल्ली द्वारा उनकी 5 शाखाओं में पढ़ने वाले बच्चों के लिए आयोजित ''राष्ट्रीय प्रतीकों पर कहानी वाचन प्रतियोगिता'' तथा ''नृत्य प्रतियोगिता'' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किए।

PRUDENCE SCHOOL

CERTIFICATE OF ACHIEVEMENT

This award is proudly presented to Laasya Lazuli

of Grade 1 of Pioneers House

for securing Outstanding position

in Dance Competition

Session 2021-22

G.S. Matharoo

www.prudenceschools.com

PRUDENCE SCHOOL

CERTIFICATE OF ACHIEVEMENT

This award is proudly presented to Laasya Lazuli

of Grade 1 of Pioneers House

for securing Outstanding position

in Story Telling Competition

Session 2021-22

G.S. Matharoo

www.prudenceschools.com

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

(दिनांक अक्टूबर, 2021 से मार्च, 2022 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त/त्याग पत्र अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	राजेश कुमार एस. चौबे (त्याग पत्र)	महाप्रबन्धक (वित्त)	निगमित कार्यालय
2.	पी. कुण्डू (त्याग पत्र)	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय/ उप महाप्रबन्धक (विपणन) – प्रभारी	निगमित कार्यालय
3.	राज नारायण चंद्र (त्याग पत्र)	वित्त प्रबन्धक	निगमित कार्यालय
4.	अनंतानंद यादव (त्याग पत्र)	उप प्रबन्धक (वाणिज्य)	निगमित कार्यालय
5.	अभिषेक नारायण अग्रवाल (त्याग पत्र)	उप वित्त प्रबन्धक	निगमित कार्यालय
6.	सुनील सिंह राणा (त्याग पत्र)	सहायक विपणन प्रबन्धक	निगमित कार्यालय
7.	प्रियंका गांधी (त्याग पत्र)	सहायक प्रबन्धक (वित्त)	निगमित कार्यालय
8.	योगेश आनंद	अधिकारी (लेखा)	निगमित कार्यालय
9.	अमित सिंह बिष्ट (त्याग पत्र)	अधिकारी (वाणिज्य)	निगमित कार्यालय
10.	अमित गोयल (त्याग पत्र)	विधि अधिकारी	निगमित कार्यालय
11.	आत्माराम अंबो म्हस्कर	प्रचालक	रसायनी यूनिट
12.	ज्ञानेश्वर ढोंडू बडे	प्रचालक श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
13.	विनोद शंकर हनुमंते	प्रचालक श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
14.	उलाहास बालकृष्ण जुंजाराव	इलेक्ट्रिशियन श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
15.	मोहम्मद नसरूल्ला कुरैशी	प्रबन्धक	रसायनी यूनिट
16.	भास्कर सोमाजी जम्भुलकर	उप प्रबन्धक	रसायनी यूनिट
17.	किशोर नामदेव पाटिल	प्रचालक श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
18.	राजेंद्र अनंत अंबावने	सहायक अधिकारी (वित्त)	रसायनी यूनिट
19.	प्रगति प्रभाकर सखारे	प्रचालक	रसायनी यूनिट
20.	अशोक कुमार राव	उप प्रबन्धक	रसायनी यूनिट
21.	सविता चमराज राव	अधिकारी	रसायनी यूनिट
22.	सुप्रिया सुनील टिकेकर	लैब सहायक (वि. श्रेणी)	रसायनी यूनिट
23.	अरविंद कुमार गुप्ता	मुख्य चिकित्सा अधिकारी	रसायनी यूनिट
24.	भालचंद्र नारायण वरसोलकर	सहायक अधिकारी	रसायनी यूनिट

25.	पंढरीनाथ जनार्दन नायको	प्रचालक श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
26.	मोहन बाबूमराव भगत	प्रचालक श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
27.	किशोर पांडुरंग निवेटकर	प्रचालक श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
28.	आनंद विट्ठल जोशी	स्टोर अधिकारी	रसायनी यूनिट
29.	ब्लसन्ट पोल	फिटर	उद्योगमंडल यूनिट
30.	कुमारी आन्टणी	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	उद्योगमंडल यूनिट
31.	राघवन एन	लीड्समैन ऑपरेटर	उद्योगमंडल यूनिट
32.	सुधांशु रंजन	अभियांत्रिक (मेकेनिकल)	बठिंडा यूनिट
33.	कमाल कान्त	ऑपरेटर ग्रेड–आई (विशेष)	बठिंडा यूनिट
34.	छोटे लाल	सहायक प्रबन्धक (उत्पादन)	बठिंडा यूनिट
35.	अशीष कुमार श्रीवास्तव (त्याग पत्र)	सहायक विपणन प्रबन्धक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (उत्तर)

हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिको का स्वागत है।

क्र.सं.	**नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)**	**पदनाम**	**तैनाती स्थान**
1.	अमित गोयल	विधि अधिकारी	निगमित कार्यालय
2.	शेफाली खन्ना	विधि अधिकारी	निगमित कार्यालय
3.	अंकुर आनंद	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
4.	दीपक मिश्रा	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (अहमदाबाद)
5.	निखिल कुमार सिंह	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय (पूर्व)
6.	पिंटू कुमार मंडल	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय ब्रिक्री कार्यालय (पूर्व)

श्रद्धांजलि

नाम	**पदनाम**
गजेंद्र सिंह नेगी	फिटर ग्रेड – I, बठिंडा यूनिट
के निधन पर समस्त हिल परिवार भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।	

हि इ लि

समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में मैसर्ज हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
आई.एस.ओ. 9001:2008 कंपनी एवं स्टार एक्सपोर्ट हाउस

HIL

PROTECT TO PROSPER

कृषि रसायन श्रेणी

कीटनाशकों

- हिलक्रॉन 36 एस एल (मोनोक्रोटोफॉस)
- हिलमाला 50 ई सी (मैलाथियॉन)
- हिलबान 20 ई सी (क्लोरपाइरिफॉस)
- हिलसाइप्रिन 25 ई सी (साइपरमैथ्रिन)
- हिलफेट 75 एस पी (एसिफेट)
- हिलस्टार 25 डब्ल्यू जी (थियामेथोक्सेम 25% डब्ल्यू जी)
- हिलफॉस प्लस (प्रोफेनो + साइपर)
- हिलब्लेज 25% एस सी (बूप्रोफेज़िन 25% एस सी)
- हिलजेंट (फिप्रोनिल जी आर)
- हिलमिडा 17.8 एस एल (इमिडाक्लोप्रिड)
- हिलाम्बदा 2.5 ई सी (लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)
- हिलसाइप्रिन 10 ई सी (साइपरमैथ्रिन)
- हिलप्रिड 20 एस पी (एसीटेमिप्रिड)
- हिलहन्टर (क्लोपाइरिफॉस 50% + साइपरमेथ्रिन 5% ई सी)
- हिलफॉस 50 ई सी (प्रोफेनोफॉस)
- हिलकार्टेप 4 जी (कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड)
- हिलाम्बदा 5 ई सी (लाम्बदा साइहैलोथ्रिन)

खरपतवारनाशी

- हिलप्रेटी 50 ई सी (प्रेटिलाक्लोर)
- त्रिनाशी 40 एस एल (ग्लाईफोसेट)
- हिलपेंडी 30 ई सी (पेंडीमेथलीन)
- हिलटाक्लोर (बुटाक्लोर 50 ई सी)

फफूंदनाशी

- हिलसल्फ 80 डब्ल्यू डी जी (सल्फर 80% डब्ल्यूजी डी जी)
- हिलब्लास्ट 75 डब्ल्यू पी (ट्राइसाईक्लोज़ोल)
- हिलथेन एम 45 (मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी)
- हिलकॉपर 50 डब्ल्यू पी (कॉपर ऑक्सीक्लोराइड)
- हिलनेट 75 डब्ल्यू पी (थाइफिनेट मिथाइल)
- हिलजिम 50 डब्ल्यू पी (कार्बनडेजिम)
- हिलजोल पॉवर 5% डब्ल्यू पी (हैक्साकोनाजोल 5% एस सी)
- हिलमिल (मैंकोजेब 63% + मेटालेक्सिल 8%)
- हिलपंच (मैंकोजेब 63% + कार्बनडेजिम 12%)

जन स्वास्थ्य श्रेणी

- डी.डी.टी.
- मैलाथियॉन तकनीकी
- मैलाथियॉन डब्ल्यू पी
- एल.एल.आई.एन.– लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशकयुक्त मच्छरदानी

बीज श्रेणी

- धान
- गेहूँ
- चना, मसूर
- मूंग
- उड़द
- अरहर
- सोयाबीन
- सरसों
- मूंगफली
- हाब्रिड मक्का
- चारा फसलें– जई, बरसीम

उर्वरक श्रेणी

- यूरिया
- एस.एस.पी.
- डी.ए.पी.
- एम.ओ.पी.
- पानी में घुलनशील उर्वरक– हिलगोल्ड
- (19:19:19)
- (13:0:45)
- कैल्शियम नाइट्रेट
- बेंटोनाइट सल्फर

टेक्निकल्स :

मोनोक्रोटोफॉस, मैलाथियॉन, एसिफेट, मैंकोजेब, इमिडाक्लोप्रिड, बुप्रोफेज़िन, क्लोरपाइरिफॉस, पेंडीमेथलीन, ग्लाईफोसेट

कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

हिल (इंडिया) लिमिटेड

स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर-6, द्वितीय तल, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाष : 011-24361019, 24362100, वेबसाइट:www.hil.gov.in

समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

- सरकार के जन-स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।
- पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।
- कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।
- कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- कार्मिकों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

स्कोप काम्पलैक्स, कोर-6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

दूरभाष: 24362100, 24361107, फैक्स: 24362116

ई-मेल: headoffice@hil.gov.in वेबसाइट: www.hil.gov.in

ADWIT INDIA PRIVATE LIMITED